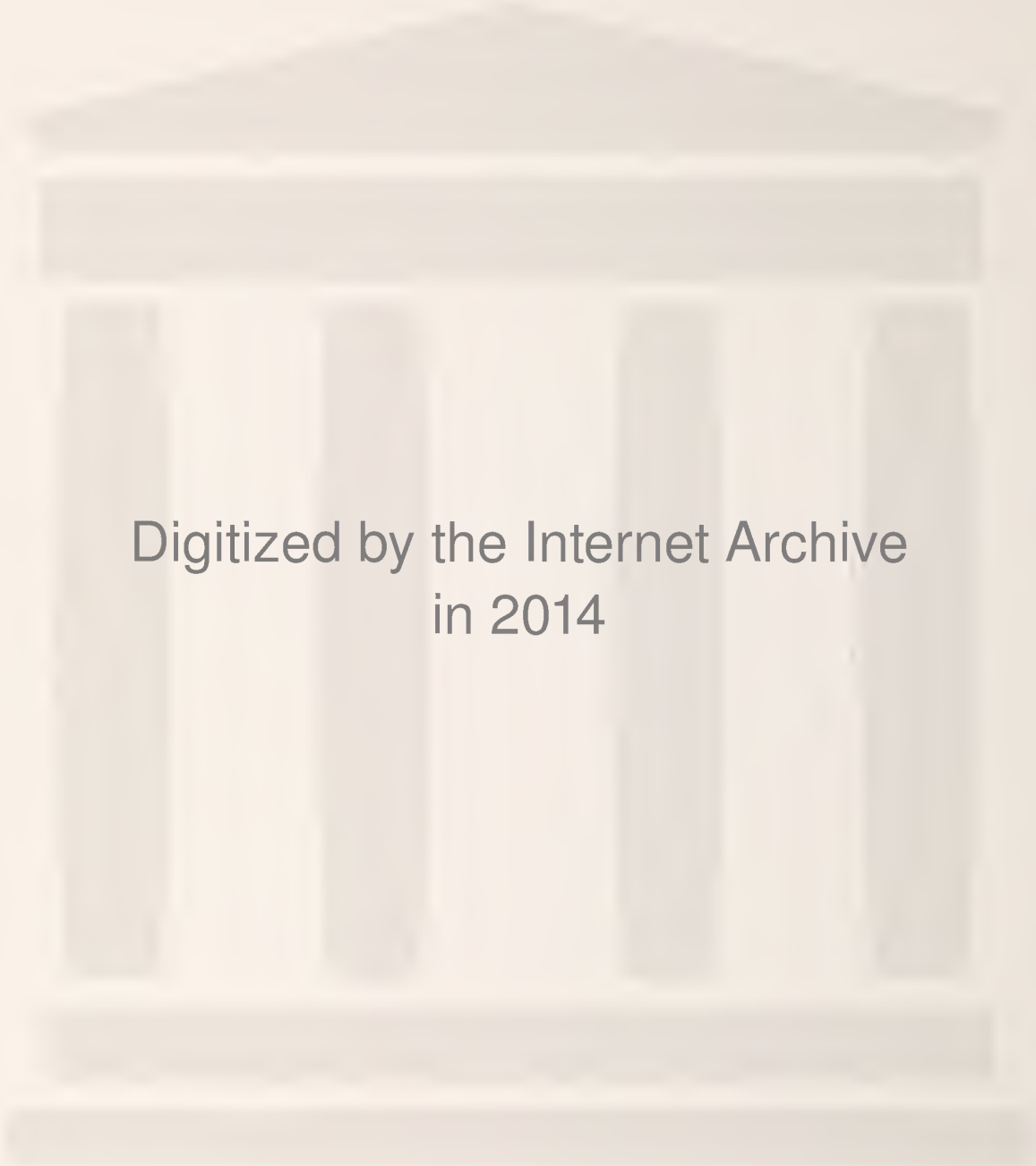


1-10-10

12

1-10-10

1-10-10



Digitized by the Internet Archive
in 2014

https://archive.org/details/ottoschneid42_12_17

Mai

April 7, 1962

Lieber Leo, Liebe Gerda,

Zwar habt Ihr einen Brief von mir nicht beantwortet, aber ich kann Euch noch eine chance geben, und gute Nachrichten von mir sind Euch doch wahr/~~s~~-scheinlich willkommen.

Ich reise nämlich demnächst durch Cleveland, auf dem Wege nach California. Wenn ich von Euch eine sehr rasche und sehr herzliche Einladung bekäme, könnte ich für 1-2 Tage in Eurer Stadt bleiben, um Euch und ein paar Museen zu sehen.

Ein echter Freund meiner Kunst, Prince de Sora, hat in Hollywood eine Galerie gegründet, sein schon fertiges Programm geändert und eröffnet mit einer Ausstellung meiner Arbeiten, um diese dann in andere Städte des Westens zu bringen. Er ist aber vor allem für mein Monument der Sechs Millionen wahrhaft rastlos tätig.

In der letzten Zeit habe ich durch Portraits und einen Verkauf zwar hübsch verdient, aber auch sehr grosse Ausgaben gehabt. Daher wäre es mir besonders erwünscht, wenn Ihr dort ein Opfer hättet oder fündet, das sich porträtieren lassen wollte. Mein Honorar-Minimum war bisher hier \$ 800, aber ich liesse gern mit mir reden. Ich brauche für ein lebensgrosses Bildnis in Halbfigurformat etwa 8 Stunden, die in 2-3 Sitzungen aufgeteilt werden können.

Ich hoffe immer, dass Ihr gesund und nicht etwa unschuldig seid.

Ich fahre Ende Mai.

Mit herzlichen Grüssen, auch von Miriam,

Euer

Otto

[Faint, illegible handwriting on aged paper]

د. ۶۶۱۱۱۱ - ۱۱۱۱۱۱

ה'תרצ"ו / ו' תמוז
בית המדרש הגדול

אני נאמן, כי יגיע היקר, שיהיה לי זמן קצתו של השבוע.
אני, אהבתי, ואלו הם המילים המעטות באותו זמן, ואלו
היו המילים, ואלו הם המילים המעטות באותו זמן, ואלו

הנה נראה שיש להוסיף
הנה נראה שיש להוסיף

ימים אלה
 חברים רבים
 חברים רבים
 חברים רבים

[illegible]

[Handwritten notes in Hebrew script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

(Faint handwritten notes at the bottom of the page)

Scranton, Pa. USA, 26.8.1962

אברהם
היינץ
היינץ

היינץ

אברהם היינץ, ימינו האחרון, כפי שאתה יודע, באתה חתן קטן
אלה שאתה שואל איך זה? על גורמנו הישעיים מוסר את גורמנו האחרונים.
בין איננו וכל מה נשאר זהו הוא חתן שנתנו. אברהם היינץ.
אלה חתנים יחידים שנתנו את גורמנו האחרונים. כלומר, באתה חתן קטן
בין, לא אתה חתן אברהם היינץ.
אברהם היינץ, אתה חתן אברהם היינץ. ואתה חתן אברהם היינץ.
באתה חתן אברהם היינץ, באתה חתן אברהם היינץ.

באתה חתן אברהם היינץ:

באתה חתן אברהם היינץ, או אברהם היינץ.

חתן 24, רחוב-החל, חתן

באתה חתן 2 - USA

Dr. Otto Schneid, 931 Clay Ave., Scranton, Pa., USA

931 Clay Ave., Scranton, Pa.

Scranton, Pa., USA

8

את חתן אברהם היינץ, חתן אברהם היינץ.
אברהם היינץ, חתן אברהם היינץ.

באתה חתן אברהם היינץ.

באתה חתן אברהם היינץ.

23 18 16 14 12 10 8 6 4 2

3 11 12

2. 12/12, 12/12, 12/12

ה'תש"ח
ה'תש"ח

10. jul 30, 1912: 240000 v. 100000 af

[illegible]

3.11.11, K 210 - 2

מקור: "מקור" - מקור המידע

1870-1871. 1872-1873. 1874-1875. 1876-1877. 1878-1879. 1880-1881. 1882-1883. 1884-1885. 1886-1887. 1888-1889. 1890-1891. 1892-1893. 1894-1895. 1896-1897. 1898-1899. 1900-1901. 1902-1903. 1904-1905. 1906-1907. 1908-1909. 1910-1911. 1912-1913. 1914-1915. 1916-1917. 1918-1919. 1920-1921. 1922-1923. 1924-1925. 1926-1927. 1928-1929. 1930-1931. 1932-1933. 1934-1935. 1936-1937. 1938-1939. 1940-1941. 1942-1943. 1944-1945. 1946-1947. 1948-1949. 1950-1951. 1952-1953. 1954-1955. 1956-1957. 1958-1959. 1960-1961. 1962-1963. 1964-1965. 1966-1967. 1968-1969. 1970-1971. 1972-1973. 1974-1975. 1976-1977. 1978-1979. 1980-1981. 1982-1983. 1984-1985. 1986-1987. 1988-1989. 1990-1991. 1992-1993. 1994-1995. 1996-1997. 1998-1999. 2000-2001. 2002-2003. 2004-2005. 2006-2007. 2008-2009. 2010-2011. 2012-2013. 2014-2015. 2016-2017. 2018-2019. 2020-2021. 2022-2023. 2024-2025. 2026-2027. 2028-2029. 2030-2031. 2032-2033. 2034-2035. 2036-2037. 2038-2039. 2040-2041. 2042-2043. 2044-2045. 2046-2047. 2048-2049. 2050-2051. 2052-2053. 2054-2055. 2056-2057. 2058-2059. 2060-2061. 2062-2063. 2064-2065. 2066-2067. 2068-2069. 2070-2071. 2072-2073. 2074-2075. 2076-2077. 2078-2079. 2080-2081. 2082-2083. 2084-2085. 2086-2087. 2088-2089. 2090-2091. 2092-2093. 2094-2095. 2096-2097. 2098-2099. 2100-2101. 2102-2103. 2104-2105. 2106-2107. 2108-2109. 2110-2111. 2112-2113. 2114-2115. 2116-2117. 2118-2119. 2120-2121. 2122-2123. 2124-2125. 2126-2127. 2128-2129. 2130-2131. 2132-2133. 2134-2135. 2136-2137. 2138-2139. 2140-2141. 2142-2143. 2144-2145. 2146-2147. 2148-2149. 2150-2151. 2152-2153. 2154-2155. 2156-2157. 2158-2159. 2160-2161. 2162-2163. 2164-2165. 2166-2167. 2168-2169. 2170-2171. 2172-2173. 2174-2175. 2176-2177. 2178-2179. 2180-2181. 2182-2183. 2184-2185. 2186-2187. 2188-2189. 2190-2191. 2192-2193. 2194-2195. 2196-2197. 2198-2199. 2200-2201. 2202-2203. 2204-2205. 2206-2207. 2208-2209. 2210-2211. 2212-2213. 2214-2215. 2216-2217. 2218-2219. 2220-2221. 2222-2223. 2224-2225. 2226-2227. 2228-2229. 2230-2231. 2232-2233. 2234-2235. 2236-2237. 2238-2239. 2240-2241. 2242-2243. 2244-2245. 2246-2247. 2248-2249. 2250-2251. 2252-2253. 2254-2255. 2256-2257. 2258-2259. 2260-2261. 2262-2263. 2264-2265. 2266-2267. 2268-2269. 2270-2271. 2272-2273. 2274-2275. 2276-2277. 2278-2279. 2280-2281. 2282-2283. 2284-2285. 2286-2287. 2288-2289. 2290-2291. 2292-2293. 2294-2295. 2296-2297. 2298-2299. 2300-2301. 2302-2303. 2304-2305. 2306-2307. 2308-2309. 2310-2311. 2312-2313. 2314-2315. 2316-2317. 2318-2319. 2320-2321. 2322-2323. 2324-2325. 2326-2327. 2328-2329. 2330-2331. 2332-2333. 2334-2335. 2336-2337. 2338-2339. 2340-2341. 2342-2343. 2344-2345. 2346-2347. 2348-2349. 2350-2351. 2352-2353. 2354-2355. 2356-2357. 2358-2359. 2360-2361. 2362-2363. 2364-2365. 2366-2367. 2368-2369. 2370-2371. 2372-2373. 2374-2375. 2376-2377. 2378-2379. 2380-2381. 2382-2383. 2384-2385. 2386-2387. 2388-2389. 2390-2391. 2392-2393. 2394-2395. 2396-2397. 2398-2399. 2400-2401. 2402-2403. 2404-2405. 2406-2407. 2408-2409. 2410-2411. 2412-2413. 2414-2415. 2416-2417. 2418-2419. 2420-2421. 2422-2423. 2424-2425. 2426-2427. 2428-2429. 2430-2431. 2432-2433. 2434-2435. 2436-2437. 2438-2439. 2440-2441. 2442-2443. 2444-2445. 2446-2447. 2448-2449. 2450-2451. 2452-2453. 2454-2455. 2456-2457. 2458-2459. 2460-2461. 2462-2463. 2464-2465. 2466-2467. 2468-2469. 2470-2471. 2472-2473. 2474-2475. 2476-2477. 2478-2479. 2480-2481. 2482-2483. 2484-2485. 2486-2487. 2488-2489. 2490-2491. 2492-2493. 2494-2495. 2496-2497. 2498-2499. 2500-2501. 2502-2503. 2504-2505. 2506-2507. 2508-2509. 2510-2511. 2512-2513. 2514-2515. 2516-2517. 2518-2519. 2520-2521. 2522-2523. 2524-2525. 2526-2527. 2528-2529. 2530-2531. 2532-2533. 2534-2535. 2536-2537. 2538-2539. 2540-2541. 2542-2543. 2544-2545. 2546-2547. 2548-2549. 2550-2551. 2552-2553. 2554-2555. 2556-2557. 2558-2559. 2560-2561. 2562-2563. 2564-2565. 2566-2567. 2568-2569. 2570-2571. 2572-2573. 2574-2575. 2576-2577. 2578-2579. 2580-2581. 2582-2583. 2584-2585. 2586-2587. 2588-2589. 2590-2591. 2592-2593. 2594-2595. 2596-2597. 2598-2599. 2600-2601. 2602-2603. 2604-2605. 2606-2607. 2608-2609. 2610-2611. 2612-2613. 26

[illegible]

1000 lbs 2000 lbs 2000 lbs 2000 lbs 2000 lbs

... of high class ...

1870

[illegible]

$\therefore \text{C}^{\circ}\text{K}^{\circ} = 30^{\circ}\text{C}$

מחזורי אורח, 10/12/1971, מנהל אגף חינוך, משרד החינוך

27 312921 227 20722

34. 4.

1872
- 5

אשר יקראו נכדו

אשר יקראו נכדו אשר יקראו נכדו אשר יקראו נכדו
אשר יקראו נכדו אשר יקראו נכדו אשר יקראו נכדו
אשר יקראו נכדו אשר יקראו נכדו אשר יקראו נכדו
אשר יקראו נכדו אשר יקראו נכדו אשר יקראו נכדו
אשר יקראו נכדו אשר יקראו נכדו אשר יקראו נכדו

אשר יקראו נכדו

אשר יקראו נכדו

ל' אדר א'
ה'תקל"ח

ל' אדר א'
ה'תקל"ח
ל' אדר א'
ה'תקל"ח

ל' אדר א'

ל' אדר א' ה'תקל"ח
ל' אדר א' ה'תקל"ח
ל' אדר א' ה'תקל"ח

ל' אדר א' ה'תקל"ח
ל' אדר א' ה'תקל"ח
ל' אדר א' ה'תקל"ח

ל' אדר א' ה'תקל"ח

ל' אדר א' ה'תקל"ח
ל' אדר א' ה'תקל"ח
ל' אדר א' ה'תקל"ח

ל' אדר א' ה'תקל"ח
ל' אדר א' ה'תקל"ח
ל' אדר א' ה'תקל"ח

12

1

100 27

[Handwritten notes in Hebrew script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

האם יש לך מושג מהי חשיבות המסמך הזה? האם אתה יכול להסביר לי את זה?

$\rho^2 v k \left(\frac{1}{k} + \frac{1}{\eta} \right) = \text{viscosity}$

20 312 471 - 31 A3

7. 20

שבת, י"ז, ט"ו, תש"ז

26. VIII (2)

דבר יסודי לך

האדם הוא אלגוריתם של גורמים שונים וזוהי תכונתו היסודית.
הסדר אף כי לא ידוע בהחלטותיו. אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו,
כי כחלק מארגון השכל.

הוא האדם אלגוריתם של גורמים שונים. אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו,
הסדר אף כי לא ידוע בהחלטותיו. אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו,
כי כחלק מארגון השכל. (הדיון הוא) אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו,
הסדר אף כי לא ידוע בהחלטותיו. אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו,
כי כחלק מארגון השכל.

אין חוסר אף אחד מן המרכיבים. אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו,
הסדר אף כי לא ידוע בהחלטותיו. אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו,
כי כחלק מארגון השכל.

אנחנו מאמינים אדם שלם, שכלל, חכם, נאמן, נאמן, נאמן,
אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו. אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו,
כי כחלק מארגון השכל.

אין חוסר אף אחד מן המרכיבים. אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו,
הסדר אף כי לא ידוע בהחלטותיו. אולם הוא כחלק מכלל התנהגותו,
כי כחלק מארגון השכל.

$$\log C_1(x) = \log$$

11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845. 846. 847

681.

of the day, P.

1892

7-215

72 51 06

Scranton, Pa., 22 Mai 1962

Monsieur le Professeur

P. M. Bardi,

Sao Paulo

Cher Monsieur le Professeur,

Hier j'ai reçu votre si aimable réponse à ma lettre, et c'est hier que j'ai expédié à vous l'album d'Alinari, avec une brochure encore plus récente et la reproduction d'un modèle.

Veuillez recevoir, mon très honoré Professeur, mes salutations les plus sincères

Otto Schneid

5.15.62

Berkoley Express Co.

409 W. Broadway,

New York 12, N.Y.

Dear Sirs,

Thank you for your post-card dated 5/10/62.

Please deliver the sculpture to Certified Moving and Storage at
130 East 12th St.

I'm satisfied with your prices and would like to work with you
also in the future.

Here is already the first order. Would you, please pick up from
The House of The Hebrew University 11 East 69th St. my two pictures that
were exhibited there "Mount Zion" and "Prayer in moonlight" - and
would you please, deliver them to the same address (130 East 12)?

Thank you in advance.

Sincerely

Otto Schneid

Feb. 15, 1962

Intenational Art Galleries NYC

Dear Mrs Muriel,

I also wish it was only an oversight, but it was not.

I thank you very much for your patience and enclose
the maximum at my disposal now, twenty \$. But I am optimistic
enough to hope that in not too far a future I shall be able to
pay all my debts.

My wife and myself greet you very sincerely

Otto Schneid

International Art Galleries Inc.

55 WEST 56TH STREET • NEW YORK CITY • CIRCLE 6-9744

February 12, 1962

Dr. Otto Schneid,
931 Clay ave.,
Scranton,
Pa.

Dear Dr. Schneid:

It is only February, but we
already anticipate with great pleasure
your group showing with us this
Fall.

In reviewing our accounts, our
records indicate a balance due us
of 75⁰⁰/₁₀₀.

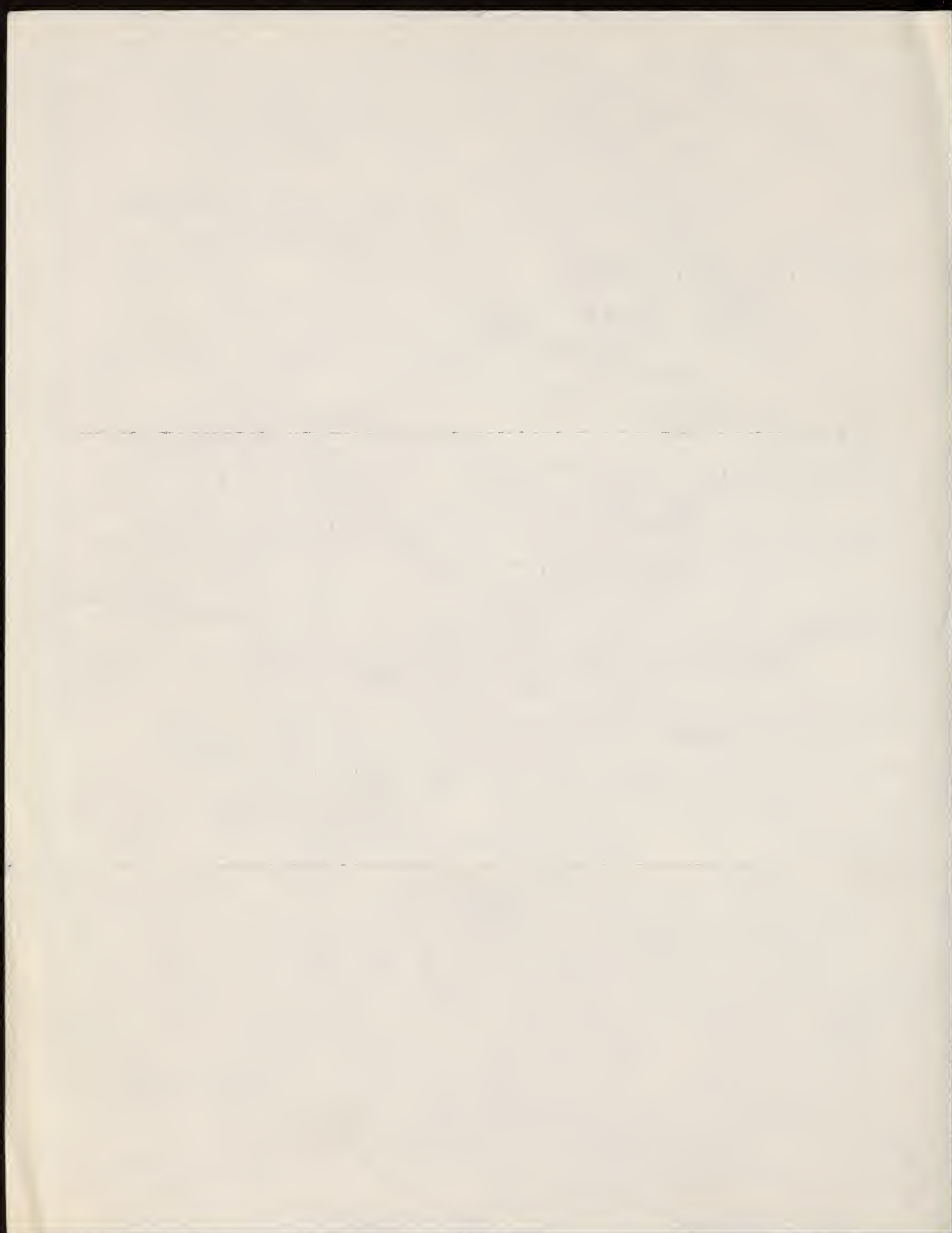
Would you please mail this
remittance to us. It is undoubtedly
an oversight on your part.

Please be assured of our very
best efforts on your behalf.

Very sincerely,

International Art Galleries
Inc.

Muriel Zapolon



326

Don't know

1962

13

Scranton, Pa., USA, Dec. 4, 1962

Lieber Herr Dr. Denes,

Ihr liebenswuerdiger Brief hat mich, obzwar von Haifa nach Haifa ~~geschrieben~~
geschrieben, hier erreicht. Im Sommer 1960 sind wir nach Italien gereist,
anlaesslich einer italienischen Ausstellung meiner Arbeiten, und nahmen
an, dass wir bald wieder zurueck in Israel sein wuerden. Im Zusammenhang mit
meinem Projekt eines Monuments der Hitler-Opfer sind wir aber nach
Amerika weitergereist, und im selben Zusammenhang bleiben wir voraussichtl
lich noch ein weiteres Jahr hier.

Seinerzeit hatten Sie noch nicht alle Ihre Sachen abgeholt, sondern ein
Packet noch bei uns gelassen. Vor unserer Abreise haette ich Ihnen gern auch
dieses uebergeben, Sie waren aber schon laengere Zeit nicht bei uns gewesen
und ich wusste Ihre Adresse nicht. Ich halte es im Entresol verwahrt, das
sich zwischen Vorzimmer und Badezimmer befindet. (Das ist ein fuer Kinder
unzugaeenglicher Ort.) Ich schreibe an unsere Nachbarn Kutin (in der Wohnung
unterhalb der unsern), dass sie Ihnen das Packet ausfolgen sollen. Da Sie,
wie ich aus Ihrem Brief mit Genugtuung schliesse, wieder geordnete Wohn-
verhaeltnisse haben, werden Sie es gewiss bald holen.

Meine Frau lehrt an einer hiesigen Schule Hebraeisch und Bibel,
die Kinder machen in ihrem Lernen gute Fortschritte, und ich arbeite intensiv
als Maler und Bildhauer und stelle relativ oft aus. Das Leben ist hier
anstrengender als in Israel, und ich verstehe jetzt, warum die aus Amerika
Zurueckkehrenden immer so muede ausgesehen hatten.

Ueber Ihr jetziges Leben und Ihre Arbeit wuesste ich gern mehr
als Sie mir in Ihrem kurzen Briefchen geschrieben haben. Vielleicht
finden Sie demnaechst Zeit fuer eine etwas ausfuehrlichere Schilderung?

Mit besten Gruessen und Wuenschen,
auch im Namen meiner Familie,

Ihr

ההצעה הזאת
מוגשת בצרוף 4 שרטוטים וחבנית. השרטוטים מראים: א. את מיקומו של גלעם
הגבורה בק"מ 1:200, את חבניתו באותו קה"מ

ההצעה הזאת
מוגשת בצרוף 4 שרטוטים וחבנית. השרטוטים מראים: א. את מיקומו של גלעם
הגבורה בק"מ 1:200, את חבניתו באותו קה"מ

ההצעה הזאת
מוגשת בצרוף 4 שרטוטים וחבנית. השרטוטים מראים: א. את מיקומו של גלעם
הגבורה בק"מ 1:200, את חבניתו באותו קה"מ

ההצעה הזאת
מוגשת בצרוף 4 שרטוטים וחבנית. השרטוטים מראים: א. את מיקומו של גלעם
הגבורה בק"מ 1:200, את חבניתו באותו קה"מ

Sept.1, 1962

Mr St. T. Bencetic,
t
Mansfield Sate College

Dear Mr. Bencetic :

Here is the material you wanted.

I can suggest to you for the exhibit a few bronze sculptures and 15 - 20 oil paintings; not more, because some of them are of relatively large sizes. I am not for including pastels, since oils and pastels require some separation, and I don't know wether the existing conditions would allow to concentrate p. and drawings apart from oils.

I shall think about the list that would be composed of works kept at present in NYC and those I have at home. Until when should I finish this list ?

I have a bold idea, but what do you think about it : I started something new. Its character is defined in a short text ty^pewritten and enclosed. Would you dare to make our exhibit the premiere of this new chapter ?

It would be nice if I should have an opportunity to welcome you in my home in Scranton. The student thanks to whom I have the pleasure of the contact with you suggested a lecture. (I don't remember his Polish name; his fine exterior reminds me the poet R.M.Rilke.) If you are interested and if my Hebrew-German*French accent would not be too strong a deterrent, I could speak about the art of today and my way in it. I confess that the fee attracts me now as well as the prospect of sales; the exhibit of Hollywood brought noteworthy sales, but terrible expenses and therefore a deficit.

The exhibition could be completed by displaying the album I would also mail to you. Its 12 plates could be shown on tables under glass or any other way protected.

Very sincerely

Oct. 18, 1962

Mr. Wakefield Murray,

Vice President,

Overly Manufacturing Co.,

Greensburg, Pa.

Dear Mr. Murray :

In his kind answer of Oct. 16 on my inquiry of Oct. 14 Mr. K. C. Griest suggested to me to submit to you new ideas in the field of artists' materials. I do it with full confidence; I feel that my ideas, not yet protected by a patent, will meet perfectly gentlemanlike handling. In case your Company would decide not to make use of it, I only ask you to consider it a secret. If your Company wants to manufacture anything based on it entirely or partly, you are supposed to do it after signing a contract with me. The conditions I want to propose, you will surely find reasonable.

You are probably not familiar with technical and financial problems of artistic painting. Thus, Mr. Murray, let me give you first of all a short introduction to this subject.

Almost all the oil painting of our time is done on canvas or cheaper substitutes, as cotton. This material has to meet certain requirements and to be specially fabricated. Before being used it has to get a ground coating. Belgium and Poland have the biggest export of artists' canvas, both prepared and unprepared.

The canvas has to be stretched on a stretching frame composed of 4 bars. Most of the European artists use stretching frames made by carpenters, resp. joiners, while American artists use in general factory products. These, however, are of astonishingly low quality. Every artist who wants to assure to his works endurance, has to correct the bars himself.

(P.T.O.)

Stretching has to be repeated from time to time, since every woven material goes slack and so the layers of color would crack. The bars have devices for additional stretching.

Because of all these difficulties, many artists prefer solid painting grounds. Wood, copper etc., however, have also disadvantages. In our century, anodized aluminum was used in Europe (e.g. the German "Eloxal"), but it didn't come into vogue and was never a big business. For it solved only one of the questions and was therefore not attractive enough to justify higher prices.

The stretching frame on which canvas or other woven material is fixed, is invisible from the front of the picture. It has to be put into a visible outer frame. In more than 99% wooden frames are used today. In this admirably developed country that has also a tremendous number of artists, art dealers, collectors, museums etc., no really practical devices for framing (for keeping the stretching frame within the outer frame) are available. I sought them in vain in artists' material shops, picture framing workshops, studios and hardware stores of NY, LA and other big and small cities. Thus this is also a small but permanent question. I solve it by doing it myself.

(It is also noteworthy that almost all the frames made today are technically wrong. The rabbet, the groove of the outer frame in which the ^{stretching} ~~outer~~ frame has to be embedded, is too shallow to allow firm keeping.)

The more the artist wants to lower the costs of the materials mentioned the more of his time he has to sacrifice.

Now I have to brief you about the costs. 28x36" is rather less than the average size of the pictures you see in exhibits. (Abstract painting enables everyone, also without talent and knowledge, to use big or even giant sizes.) A piece of most inexpensive canvas of the size mentioned costs\$1.50
Cheap bars 1.50
The cheapest outer frame, 2" wide 6

(Cont.)

Dec. 8, 1962

Mr. William H. Gordon,
Assistant Manger,
Alcoa,
Pittsburgh, Pa.

Dear Mr. Gordon :

I acknowledge with warmest thanks your kind letter of Nov. 30,
as well as the instructive booklet enclosed. I highly appreciate the
trouble you took to give me the information needed.

At this opportunity, allow me to inform you that, as an artist,
I have ideas for manufacturing very practical and needed things
in the field of artist's materials. Developping them could lead to
extraordinarily big business, both within America and by export.
If you are in principle interested, let me please know it. I should
not hesitate to to entrust to you still unpatented concepts.

Sincerely yours

Otto Schneid

Oct. 31, 1962

McDowell Manufacturing Co.,
Pittsburgh, Pa.

Dear Sirs :

Maybe my name as an artist is not quite unknown to you.

I would like to follow a kind advice of Mr. Murray of Overly, by
submitting to you new ideas in the field of artists' materials.

If you are interested, I would confidently send to you a description
of the devices suggested, with facts about the needs and the prospects
for marketing.

Would you consider my suggestions a secret in case you would not accept
them ? And would you sign a contract in order to use them entirely or partly ?

Very respectfully

Otto Schneid

P.S.

Who is the competent representative of your Company whom I should contact ?

REMOVED FROM ORIGINAL FILE

Prof. Dr. Otto Schneid

931 Clay Avenue, SCRANTON, PA.
Phone: DI 6-6340

McDowell Manufacturing Co.,
Pittsburgh, Pa.

Dear Sirs :

Maybe my name as an artist is not quite unknown to you.

I would like to follow a kind advice of Mr. Murray of Overly, by
submitting to you new ideas in the field of artists' materials.

If you are interested, I would confidently send to you a description
of the devices suggested, with facts about the needs and the prospects
for marketing.

Would you consider my suggestions a secret in case you would not accept
them ? And would you sign a contract in order to use them entirely or partly ?

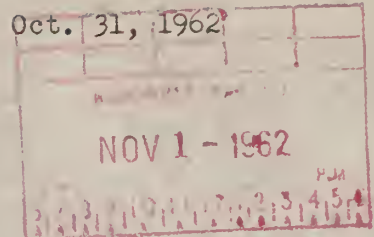
Very respectfully

Otto Schneid

Otto Schneid

P.S.

Who is the competent representative of your Company whom I should contact ?



*not interested
done B
11/2/62*

Oct. 4, 1962

Overly Mfg. Co.,
Greensburg, Pa.

Dear Sirs :

I should be much obliged to you for the following informations :

- a) Is the method of coloring, aluminium by anodizing, applicable to sheets only, or can sculptures cast in aluminium also be anodized ?
- b) Is anodizing designed for outdoor ? Would it be durable in a rough climate with big changes of heat and cold ?
- c) Is a golden-reddish tone available ? Could you send me samples ?
- d) Could you apply this method to a big figure whose maximum diameters would be 25 ft. and 10 ft. ?
- e) Do you cast yourself ? Could you cast human with highest precision a big figure as mentioned in aluminium ?
- f) In case you would cast for artistic purposes, could you give me an idea of the costs ? What could be, very roughly, the costs of casting in aluminium a figure as mentioned ? How much would cost aluminium casting of a human head in natural size ?
- g) Do you cast in bronze too ? Could you let me know your approximate prices for artistic work ?

With best thanks sincerely

Otto Schnell

BEFORE TYPING - REMOVE BEFORE TYPING - REMOVE BEFORE TYPING

Oct. 14, 1962

Mr. Kermit C. Griest,
Manufacturing Co.,
Greensburg, Pa.

Dear Sir :

I acknowledge gratefully your letter of Oct. 9 and the highly interesting brochures and thank you especially for the favor of forwarding my inquiry of Oct. 4 to Mr. Gordon of Pittsburgh.

Your kindness encourages me to submit to you another question : Would your company be interested to manufacture something new in the field of artists materials? As your catalogues show, you could do it without technical difficulties. You surely know that this category of demand is enormous in this country, besides the prospects of exporting an advantageous new article.

Before registering a patent I should confidently submit my idea to you or to another leading man of your Company, if you are interested.

I am myself a professional artist and came to this idea by my own needs and by the problems of artistic painting in general. For information about my artistic activities I enclose a brochure.

I am convinced that this new production could be developed into a very big business.

Sincerely yours

Otto Schneid

Oct. 12, 1962

Mr. Remitt C. Griest,
Overly Manufacturing Co.,
Greensburg, Pa.

Dear Mr. Griest :

I received your kind letter of Oct. 16 and thank you very much.
I shall write to Mr. Murray immediately.

Respectfully yours,

Otto Schneid

P.S.

I am still looking forward for news from Mr. Gordon.

Oct. 24, 1962

Prince Roman Count D. de Sora,
Hollywood

Dear Rommy :

On your long awaited letter, undated, mailed Oct. 3, I answered you on 4 pages, but instesd, I say it shorter :

The higher the illusion the deeper the disappointment. I am deeply disappointed.

There are things that can only be done with holy devotion, in the spirit you announced originally. I don't think that the Monument can be last in the queue of your issues.

Maybe you know something about my financial condition after the complete failure of our exhibition. But this is only a very small part of the difficulties and losses that my belief in your acting for the Monument brought to me.

If you are interested to read the detailed letter mentioned, you can have it. If not, let me only ask you in the spirit of truth, respect and friendship :

Do you want tu fulfil your declarations and promises sans reserve, or not ?

As always yours

Dec. 14, 1962

Prince Roman Count D. de Sora, Hollywood

Dear Rommy :

Thank you for your letter of Dec. 8. As said in the letter I wrote to Mr. Toporow on Dec. 4, I am strongly interested in getting back my belongings, including the manuscripts, the drawings, the Riza Abbassi miniature, the two photo albums, the Alinari albums, their prospects, and the Am. Art Directory. I should gratefully refund the costs of packing, insuring and mailing, or they could be collected.

As to the paintings, I am deeply sorry not to be able to share your surprising new optimism about exhibits and sales. Thus I know no reason why they should still longer be there. Unfortunately, however, I can't afford to pay packing and transport back, though these costs would be only a microscopical part of my damage. Have you an idea about a solution ?

Very sincerely yours

Otto Schneid

Dec. 6, 1962

Mr. Myer Feldman,
Ass. Deputy Counsel to the President,
The White House,
Washington, D.C.

Dear Mr. Feldman :

I had the privilege to know personally Mrs. Eleanor Roosevelt and she appreciated my paintings and sculptures. I donated a painting that she liked to the FDR Library, Hyde Park; you find it on the last page of the booklet enclosed.

You certainly share my belief that this personality deserves a memorial. I should be happy to create it. Her son, Mr. James Roosevelt, informed me that you are the proper man to contact about this question.

Thus allow me please to submit to you a little material enclosed, for first information about my works and myself. If necessary, have please the kindness of forwarding it to another competent person or institution.

Very respectfully yours

Otto Schneid

(Σ) אגודת ישראל, תל אביב (העיר) תש"ס

Aug. 16, 1962

Drogi Topi,

Obawiam się, że tym razem nie mieliśmy szczęścia. Słę Panu tu kopję listu do B. B.

Muszę Pana fatygować w sprawie banalnej : Myślać że wkrótce wrócimy prosilem Pana o lask. przechowanie pudła, w którym są różne papiery i druki. Czyby mi to Pan lask. przysłał pocztą ? Jeżeliby nie było możliwe nadać tak jak jest, to można i otworzyć i przepakować, bo tajemnic osobistych tam pewnie nie ma.

Co słychać od Pani Holt ?

Mamy donatora, któryby obraz darował jednemu z dobrych muzeów.

Najserdeczniejsze pozdrowienia dla
drogiej Malzonki i Panu

Miriam i Otto

YAD WASHEM

רשות־הזיכרון לשואה ולגבורה
MARTYRS' AND HEROES' MEMORIAL AUTHORITY

יד ושם

ירושלים, הר הזיכרון ת"ד 84 / מברקים: ירושם / טל' 22169, 24847, 26518 / CABLES: YADWASHEM / P.O.B. 84 JERUSALEM, HAR HAZIKARON

י"ח בחשדי חשכ"ג
16 באוקטובר 1962

ירושלים

לכבוד
פרופ' נפתלי שנייד
סקרנטן.

פרופ' שנייד הנכבד,

הריני ממחר להשיב למכתבך מיום 10.10.62, שהוא מלא דאגות וחששות, ואעשה כמיטב יכולתי להרגיעך.

לאחר בירורים נוספים, יכולני להודיעך שחבר השופטים לא יתכנס לפני ה-7 בנובמבר, מועד המשאיר 18 יום מיום המשלוח שצינח במכתבך האחרון. אם אכן יצאה אניה ביום זה או בסמוך לו יש סכויים שהמשלוח שלך יגיע בזמן, אך אם לא, עלול הדבר לקחת למעלה מחודש.

ברצוני גם להסביר לך למה אין אנו דוחים ישיבת השופטים, למועד מאוחר יותר. הנהלת המוסד רוצה שהגל-עד יוקם ליום הזכרון שחל בכ"ז בניסן חשכ"ג (21.4.63), וימלאו 20 שנה למרד גיטו וארשה. הזמן הנשאר להכנת התכניות המעשיות והקמתו הוא כבר מועט וכל דחייה נוספת חוציא מכלל האפשרות להשלימו בזמן הנקוב לעיל.

מכל מקום לא פתחו שלטונות המכס עד היום את ההצעות שהגיעו עד היום מחו"ל, ובודאי כך ינהגו גם להבא.

ולסיום אבקשך להודיעני את התאריך המדויק שבו שלחח ומועד הפלגת האניה שלקחה את התבילה. אביא זאת בפני יו"ר חבר השופטים וייתכן שנשיג דחייה נוספת במועד התכנסותם.

בכבוד רב,


ש. ספקטור
מזכיר יד-ושם

יז-ושם רשות-הזכרון לשואה ולגבורה

ירושלים, הר הזיכרון * ת.ד. 84 * טלפון 22169, 24847, 26518 * טלגרמות: ידושם

ל" בחש"י חשב"ג
ירושלים 28 באוקטובר 1962

נא להוכיח מספר.....

לכבוד
פרופ' נפתלי שנייד
סקרנטן

פרופ' שנייד הנכבד,

רב תודות עבור מכתבך מיום 22.10.62. יכולני כבר כיום להודיעך, שאם לא יהיו תקלות בלתי אפוליות, ישב חבר השופטים לשפוט ב-26 בנובמבר. כך שהצעתך תגיע בטוחות בזמן. כמו-כן עשינו הסדר עם המכס וחברות ההובלה שישחררו את החומר במהירות, ואכן נחבצע הדבר עד כאן.

באשר להקמת הגלעד עד כ"ז בניסן הקרוב, הרי כפי שכתבתי לך זה הוא רצון בלבד. כמובן שלא נוותר על בצוע ראוי לשימו הן מהבחינה האמנותית והן מהבחינה המעשית וזאת מסיבות שאחה מציין אותן. ובכלל כל הדבר תלוי מה יבחר חבר השופטים, ואלה בודאי לא יושפעו מרצון זה על חשבון הדברים שהזכרתי.

בכבוד רב,


ש. ספקטור
מזכיר "יז-ושם"

W. B. TOPOROW
ART GALLERY
7042 HOLLYWOOD BOULEVARD
HOLLYWOOD, CALIFORNIA

7/19/62

Mr. & Mrs. Otto Schneid,
Scranton, Pa..

Drodzy Miłam i Otto!

Dziś otrzymałem list Otto z dnia 17-go b.m. i spieszę wyjaśnić sytuację. Jak to ustaliliśmy przy rozstaniu się wszystkie bieżące sprawy miałem załatwić przez p. Romana. Z chwilą zaistnienia sprawy państwa Lehman niezwłocznie porozumiałem się z p. Romanem prosząc go o przedstawienie jej Państwu. Uczynił to natychmiast i odpowiedź Wasza /telegram/ otrzymałem w rekordowym czasie. To samo uczyniłem gdy powstały zupełnie nieoczekiwane trudności w doprowadzeniu transakcji do szczęśliwego końca /mam na myśli otrzymanie gotówki/. Z treści listu który otrzymałem widzę, że w tym wypadku p. Roman nie poinformował Państwo o powstałych trudnościach. Są one zupełnie niejasne i należy brać pod uwagę tylko dwie alternatywy: p. Lehman wogóle zrezygnował z kupna obrazu - to jedna, druga zaś /i to jest bardzo prawdopodobne/, że mające nastąpić rozwiązanie i przyjscie na świat potomka pp. Lehman, istotnie wprowadziło ~~w~~ zamieszanie w realizację powzietych decyzji. Podkreślam w tym miejscu, że do dnia dzisiejszego nie wypowiedzieli się oni w sposób zdecydowany czy z nabycia rezygnują, czy też odkładają sprawę do czasu, kiedy oczekiwany ewenement stanie się faktem dokonanym. Sądząc, że natarczywość w tym wypadku może sprawę tylko pogorszyć, zajmuje stanowisko wyczekujące, nie rezygnując jednak z poczynienia dalszych /dyplomatycznych/ kroków. Znajac Was jestem pewien że zaaprobujecie moje postępowanie. Jaki będzie dalszy tok tej sprawy informować Was będę bezpośrednio.

Bądźcie zupełnie spokojni, że pani Coe sprawa będzie załatwiona tak jak by Wy tego chcieli. Przyrzekam też poczynić usiłowania aby ją przekonać, że nabycie "pendant" po takiej samej niskiej cenie, jest doskonałym interesem.

Wystawę likwidowałem stopniowo aby spóźnionym gościom móc choć część prac pokazać. Obecnie większa część /przeważnie duże obrazy/ są zamagazynowane na górze, a kilka mniejszych mam na dole aby w dalszym ciągu mieć coś pod ręką.

Skoro weszliśmy w bezpośredni kontakt, nie mogę się powstrzymać od wypowiedzenia swego zdania ~~o~~ o sytuacji, która wytworzyła się po Waszym wyjeździe. Pani Prins jest wciąż chora i nie opuszcza mieszkania, pan Roman jest bardzo trudny

d.c.

d.c.
Prof. Dr. Otto Schneid.

2/

do osiągnięcia i, mam takie wrażenie, zmuszony jest ciężko p
pracować. Cała więc impreza, której wszyscy zainteresowani
poświęcili nie tylko dużo czasu i energii, zawisła ponie-
kąd w powietrzu i tym samym zatracą swą aktualność w przy-
spieszonym tempie. Jeszcze raz powtarzam, że takie odnoszę
wrażenie.

Chcąc odpowiedzieć na pytanie: "... co slychac o propozycjach
p. Thue ..." przerwałem list i skomunikowałem się z p. Prins.
Otóż z rozmowy wywnioskowałem, że optymizm w tej sprawie
nie będzie usprawiedliwiony. W tej rozmowie poruszono też
sprawę pani Coe. Nieprzyjemnie zaskoczyło mnie zdziwienie
pani Prins, że uważają Państwo sprzedaż jej obrazu za fakt do-
konany. Swoje zdziwienie uzasadniła tem, że rzekomo naza-
jutrz po dyskusji o kupnie, zakomunikowała ona /p.Prins/ &
Miriam, że pan Coe na kupno obrazu nie zgadza się i tran-
zakcja nie dojdzie do skutku. Pani Prins zastrzegła się, że
mogły mieć miejsce dalsze bezpośrednie pertraktacje między
Wami i panią Coe, o których ona nic nie wie.
Bardzo więc proszę o wyjaśnienie tej sprawy możliwie odwrot-
nie, gdyż, o ile zaszło jakieś nieporozumienie, mogła by
się wytworzyć sytuacja bardzo nie miła dla wszystkich zain-
teresowanych stron.

Bardzo mnie zmartwiła wiadomość, że macie jakieś trudności
z przeniesieniem się tutaj, na myśl o czym cieszyłem się
bardzo. Wierzę jednak, że te trudności przezwycięzicie.

Proszę o szybką wiadomość, wraz z żoną zasylamy bardzo ser-
deczne pozdrowienia i chcemy wierzyć, że przedko zabaczymy
się.

List otrzymałem od Otto, odpowiadam Wam obojgu z tej prostej
przyczyny, że niespotykalem małżeństwa, które stanowi tak,
jak Wy kompletną całość. Myśląc o Otto mam zawsze w swym
polu widzenia Miriam i vice versa.

Wam szczerze oddany

M. Tabor

TOPOROW ART GALLERY

7042 HOLLYWOOD BLVD.
HOLLYWOOD 28, CALIFORNIA
PHONE HO 7-8666

MEMBER OF
HOLLYWOOD CHAMBER OF COMMERCE
AND
AMERICAN INSTITUTE OF FINE ARTS

Professor
Dr OTTO SCHNEID
931 Clay Ave.
Scranton, Pa.

Dec. 8, 1962

My dearest Otto :

Quite apart from your recent favour to Mr Toporow I was about to inform you that I have not been quite idle in trying to further promote the sales and exhibits of your work and have been exploring some new possibilities.

Of course as you may know during the vacations there was not really anything one could do and then came the so called "crisis" which delayed all our plans, personal and business.

On top of it my time was 100 % occupied with various matters having no connection at all with the art business.

As things are now, if you need the paintings urgently I can of course send them back any time but if you still would like to try the result of steps which I have taken to arrange some exhibits through the Technion Chapter and the University of Judaism, it could pay off in the end.

Dr Prinz was here the other day and told Mrs Prins that he respects you very much indeed for what you have done and conceived although under no circumstance he could be member of a committee for construction of the Monument, as the Congress could not support it financially looking for funds for its own support.

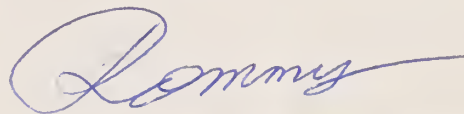
He seemed however to approve the idea of the necessity of a Monument to make people think of what they badly want to forget or to deny as they do nowadays in Germany.

Dr Melnitz has not yet received me and please tell me whether you want the manuscript still handed over to him or else returned.

With best regards and greetings to you and Mme Schneid from Mr Toporow, myself and our ladies,

I am, dear Otto, as always,

Most affectionately yours,



MS 615

B0 C

March 20, 1962

Mrs. Nettie S. Horch, Director,
Riverside Museum,
New York City

Dear Miss Horch,

I have the honor of introducing to you my work and myself by
a little information enclosed.

If you would admit, in principle, an art that is not in line
with the ideology and the practice of today, my works could interest you.
I believe to be one of the pioneers of an art of tomorrow, though
this means isolation and a life without, or with very little, encouragement.

If nevertheless you would take friendly interest in the works
of such an outsider, I should be very glad to mail to you a portfolio
of my paintings and sculptures published by Alinari, Florence.

Very sincerely

Otto Schneider

SIGMUND KARFIOL, M. D.
3024 CLARENDON ROAD
BROOKLYN 26, N. Y.
—
BUCKMINSTER 4-8084

January 16th, 1962

Dear Otto:

Thank you very much for your interesting letter dated January 12th, 1962.

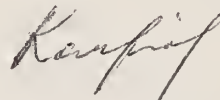
There is nothing unusual about discoveries or inventions in the medical field made by non-physicians. The time, when only medical doctors worked in medical research is over. Nowadays the plurality of research people are Ph. D's., especially bio-chemists.

We, the general practitioners, are far away from any research. We do not even know the names of the researchers. The only institution known to me, which would be interesting in your problems, is the "Rockefeller Institute for Medical Research", East 66th Street and York Avenue, New York 21, New York. Phone: REgent 4 - 8000.

You may ask for a hearing and you certainly will find out soon whether they can be of some use or not. The Rockefeller Institute has not only laboratories but also a large research hospital.

I am glad to learn that you continue to be successful in your field. There is not much I could report about us at the present time.

Many cordial greetings to you, your dear wife and children.



Sigmund and Helena

SK/tl

Jan. 14, 1962

Dear Dr. Axel von Saldern,

May I offer to you to enlarge your knowledge of my works
by showing you photographs of my recent paintings and of some sculptures ?

I have to be in NY for the after-next weekend, Jan. 27 - 28.
On Saturdays and Sundays you certainly don't come into the Museum,
but I could stay until Monday or even until Tuesday. Could you, resp.
when could you, kindly receive me ?

At the Everhart Museum, Scranton, Pa., an exhibit ion of my
recent works will be opened Feb. 4.

Very sincerely yours

Otto Schneid

113-7

111

My dear Mr. May

2 of the 11 1/2

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

1870

1801
 1802
 1803
 1804
 1805
 1806
 1807
 1808
 1809
 1810
 1811
 1812
 1813
 1814
 1815
 1816
 1817
 1818
 1819
 1820
 1821
 1822
 1823
 1824
 1825
 1826
 1827
 1828
 1829
 1830
 1831
 1832
 1833
 1834
 1835
 1836
 1837
 1838
 1839
 1840
 1841
 1842
 1843
 1844
 1845
 1846
 1847
 1848
 1849
 1850
 1851
 1852
 1853
 1854
 1855
 1856
 1857
 1858
 1859
 1860
 1861
 1862
 1863
 1864
 1865
 1866
 1867
 1868
 1869
 1870
 1871
 1872
 1873
 1874
 1875
 1876
 1877
 1878
 1879
 1880
 1881
 1882
 1883
 1884
 1885
 1886
 1887
 1888
 1889
 1890
 1891
 1892
 1893
 1894
 1895
 1896
 1897
 1898
 1899
 1900

27 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045 1046 1047 1048 1049 1050

240

Jan. 30, 1962

Hon. Judge Louis Levinthal,
Philadelphia

Sir,

I have the honor of introducing myself to you by the enclosed information about myself and about my main aim, erecting of a Monument to the Six Millions.

In Israel it would almost have been erected on a magnificent place, on Mt. Carmel, overlooking the sea; but orthodox resistance forced me to give up.

After my arrival in America the idea met encouragement. Nevertheless, it is not yet realized, maybe because I didn't find the right personality to do the first step.

I don't think that it is mainly a financial question. The maximum that could be wanted is a third of a million, and maybe it will be 200.000 \$ only. But even if a wealthy man would offer a significant part of this sum I should not be entitled to accept it, because a responsible organization or committee does not yet exist. That is the reason why I approach you; I believe the sake of the Monument is worthy of your initiative.

So I dare to submit to you the suggestion of organizing a committee. Once constituted it would doubtless meet support and much friendly cooperation. I believe that our generation would so do his duty, a holy work that could be forgotten only in case of a world catastrophe.

I would be happy to visit you at any time convenient to you to discuss the idea and its problems.

Very respectfully yours

Otto Schneid

March 4, 1962

Lieber Walter,

Dieser Telefonanruf war doch besonders schoen, sowohl von Dir als auch von Erwin. Ich wuerde es mir nicht nehmen lassen, Dich zu besuchen, wenn es nicht so weit waere. Aber da Du doch jedenfalls wieder einmal in NY zu tun haben wirst, kann ich doch auf Deinen Besuch hoffen.

Mit der Vorstellung von Dir verbinde ich unwillkuerlich die von Deinem Elternhause und besonders die Erinnerung an Deinen Vater, der in mich etwas indem Massstab eines Menschenlebens Unvergaengliches eingepflanzt hat. Fuer meine Beduerfnisse war seine als Kindheits-erinnerung so lebendig gebliebene Biblische Geschichte keineswegs zu sentimental. Etwas von ihr mag noch mitschwingen, wenn ich heute das Menschliche durch das biblische Medium hindurch male.

Ausser Deinem erwuenschten Besuch koennte ich Dich vielleicht wiederschen, falls eine meiner Ausstellungen in Dein Staedtdchen gelangt.

Ja, was zwischen unseren gemeinsamen Brinnerungen und unserer Gegenwart liegt, ist nicht viel weniger als das Leben. Es in grossen Zuegen und ohne unnoetiges Detail zu erzaehlen wird gewiss auch fuer den Erzaehlenden interessant sein, wenn auch nicht schmerzlos.

Auf Wiederschen

Dein

Otto

Feb. 14, 1962

Mr. Ralph T. Coe, Curator,
The William Rockhill Nelson Gallery of Art,
Kansas City, Mo.

Dear Mr. Coe,

May I hope my name is not quite unknown to you ? To introduce myself to you I send you here the catalogue of my new exhibit and some other information. I could send you also the Alinari album of my paintings and sculptures, but not immediately, because at present I possess only one copy.

I would highly appreciate any expression of interest, especially an invitation for a show in your Museum.

Very respectfully yours

Otto Schneid

May 28, 1962

Lieber Leo, liebe Gerda,

3 schwere Kisten sind fast fertig gepackt und damit ist die erste Phase der ungewöhnlich grossen Anstrengungen für Hollywood beendet. Auch mein Reiseplan ist gemacht.

Indem ich Eure lebenswürdige Einladung vielleicht zu weitgehend annehme, will ich Dienstag, 5. Juni, 11.40 p.m. mit der Eisenbahn in Cleveland eintreffen und Freitag, den 8., 9 a.m. abreisen, via Chicago nach Hollywood.

Ausser dem Wunsch, Euch und noch ein paar Sehenswürdigkeiten zu geniessen, habe ich kein spezielles Programm.

Vielleicht holt Ihr mich vom Bahnhof ab?

Beiliegend eine kl. Neuerscheinung in der Bibliographie über O. S.

Über eventuelle Abkürzung meines Besuches werde ich mit mir reden lassen.

Herzliche Grüsse

Euer

March 20, 1962

Dr. Axel von Saldern,
The Brooklyn Museum

Dear Dr. von Saldern :

I am not entitled to take so much of your precious time. I know you will remember me, and I should await patiently. Now, however, an important circumstance forces me to ask your active help or advise.

Prince de Sora, who is himself an artist, founded a gallery in Hollywood and invited me for a one man ^h show. He plans a beautiful catalogue with a short essay (that could be reused for my next exhibit in NY or elsewhere).

Would you have the great kindness of helping me by your advise to find a distinguished prefacier ? Or could I dare to ask you to do it yourself ?

27 Of my originals are kept in NY, which might facilitate it; I possess also many slides in color.

In the exhibit and in its catalogue I would not emphasize myself, but an idea, that of Human Art.

Gratefully yours

Otto Schneid

Feb.14, 1962

The Baltimore Museum of Art

Sirs,

Hoping my name and my artistic aims are not quite unknown to you
I have the honor of introducing myself to you by the catalogue and the
other information enclosed.

I could also send you the Alinari album of my paintings and sculptures.

Very respectfully

Otto Schneid

Feb. 14, 1962

Mr. Gordon Mackintosh Smith, Director,
The Albright Art Gallery,
Buffalo, NY

Dear Sir, Allow me to introduce myself to you by the catalogue of my new exhibit and by some other information enclosed.

I could also send you the Alinari album of my paintings and sculptures, but not immediately, because at present I possess only one copy.

I hope for your friendly interest. I would consider an invitation for an exhibit in your Museum a high distinction.

Very respectfully yours

Otto Schneid

14 Fevrier 1962

Monsieur le Directeur

P. M. Bardi,
Museu de Arte,
Sao Paulo

Monsieur le Directeur,

Vous certainement ne me connaissez point, mais moi je vous connais. Je vous ai lu et je me souviens avec un sentiment de reconnaissance de ce que vous avez fait pour un grand artiste comme le feu Lasar Segall.

Il y a longtemps que je pense a vous, un de nos contemporains exceptionnels dont la connaissance et dont la science les obligent et, en tout cas, qui croient qu' il y a quelque chose d' obligeant.

Une publication d' Alinari, un album de mes peintures et de mes sculptures que je voudrais vous faire parvenir, m' offre l' occasion de vous presenter ce que je veux et ce que je crois. Vous y trouverez sans doute une affinite a vos idees et a vos ideaux. Permettez-moi aussi de vous envoyer ci-joint un catalogue d'une exposition nouvelle et un peu d'autre information.

Veuillez recevoir, Monsieur le Directeur, l' assurance sincere de mes sentiments respectueux.

Otto Schneid

April 2, 1962

"Clarisse", NYC

Excuse please the impersonal form of this inquiry.

By Mr. Siegle of Profile Press I am only informed that the owner of this house is eine sehr nette Wienerin and that you do work of high quality. I am an artist and ask you kindly to let me know the price of a post card reproducing a painting faithfully in full color. What costs it if you do 3000, 5000, 10000 ? Which are the price differences between different sizes of postcards ? Could a part be printed on paper for sticking on a catalogue ? What about a text of a few words and the lines for the address ?

With best thanks sincerely

Otto Schneid

P.S. I would make possible to reproduce the original.

Could all your work be done in a 2 weeks ?

PHILADELPHIA
ART ALLIANCE



251 SOUTH EIGHTEENTH · PHILADELPHIA 3

June 26, 1962

Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pa.

Dear Dr. Schneid:

Thank you very much for sending in your reproductions for the Water Color Committee's consideration. Unfortunately, these did not reach the committee before their last meeting of the season. They will meet again in September. At that time, they would like to have you bring in, if possible, several more examples of your work for the committee to see.

We will let you know well in advance of the meeting so that you will have time to make the necessary arrangements.

Again, thank you for your interest.

Sincerely,

Charles T. Coiner
Chairman
Committee on Water Color

CTC/ms

P.S. We are returning your reproductions under separate cover.

Laurence H. Eldredge
President
Raphael Sabatini
Vice-President
Edward Starr, Jr.
Financial Vice-President
William P. Wood
Treasurer
Theo B. White
Secretary
James Kirk Merrick
Executive Director

PHILADELPHIA
ART ALLIANCE



251 SOUTH EIGHTEENTH · PHILADELPHIA 3

July 3, 1962

Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pennsylvania

Dear Dr. Schneid:

Your letter of July 2 arrived here
this morning.

Your reproductions have not been
returned to you; therefore, at your suggestion
we will keep them here at the Art Alliance until
the Watercolor Committee meets again in the fall.

As they would like to see a few
more examples of your work, you will be notified
well in advance of the meeting date so that you
will be able to either send or bring these in.

Thank you for the pamphlet, "On Otto
Schneid and Human Art." I will see that this
material is brought to Mr. Coiner's attention.

Sincerely yours,

Mimi Sharp

Secretary to Executive Director

Laurence H. Eldredge
President
Raphael Sabatini
Vice-President
Edward Starr, Jr.
Financial Vice-President
William P. Wood
Treasurer
Theo B. White
Secretary
James Kirk Merrick
Executive Director

ms

July 13th, 1962

Dear Meriam and Otto:

I did so enjoy receiving the poetry, and the letter. I waited until hearing from Rommy about the plans for proceeding with the monument, and feel a little as though more crystalization must take place as for the objective of its motive, or our committee will be unfunctionable.

Perhaps I did not make it clear to you that I felt that this monument could be used as a tool to awaken mankind to a new way of life...one in which no longer could the mass destruction of mankind take place, as the six million victims of religious persecution in Germany represent. It can only be used as an example of the wrong forces unleashed...and therefore the monument can never be a reminder of the horrors...but a means of learning something from this tragic mistake.

Just as the Statute of Liberty, standing in our Harbor, represents Freedom to mankind...and has guarded these shores with great strength...being in itself more than a symbol, being in itself the very life pulse of America...so could a monument dedicated to the freeing of the human spirit from the bonds of limitations...self imposed...but never-the-less limitations. such a monument could be the means of liberating all mankind...not just those within the glorious boundaries of our shores. The Light of God has almost gone out of Europe and the Middle East...as well as in the Orient. The spirit that is represented in America, must be given to all those tragic areas...so that the complete globe can be a blaze of light, and its destruction a thing no longer to fear. The human spirit knows no death nor destruction...and this it seems is what your statue means...If a new understanding is to come to mankind...we must be the means of bringing it...not just be a tool in the hands of others. Leadership means dedication and sacrifice...but a constant and unswerving desire to raise the lot of those we are trying to lead.

(cOn't.)

At no time must the monument stand for defeat...It must stand for VICTORY...victory over depression, starvation, hatred, discord fear...all the destructive elements leashed in the world today. The WINGED MESSENGER...was perhaps not the most fitting name for such a colossal feat as the monument is to bring about. But neither does it represent to mankind anything morbid. The placing of Christ upon the Cross...made a symbol to mankind that suffering was good and as a result by so twisting its meaning...great mass murders and destruction were committed under its banner. By all means, we do not want to repeat such a holocaust for the next two thousand years. We are ushering in a GOLDEN AGE...a age where the Spiritual Light that is the only power there is, is finally understood. Mankind has descended from his great pinacles of past achievements, because He forgot that spirit within, and the Jews...who through their own love of liberty and human freedom, being the vanguards so to speak of what God meant when he gave the ten commandments...and Jesus gave the other two...Love Thy neighbor as Thyself...and Judge not...lest you yourself be judged...or in another terminology...Love Thy enemy...have been feared for their knowledge...and since they represent to mankind the thing that they did not want to learn...have been under constant annihilation. This time, it is not an old teaching that is being brought to mankind's attention...it is something that is entirely new...THAT THERE IS NO DEATH IN ALL THE UNIVERSE...and THAT WITHIN EACH MAN IS THE SEED OF IMMORTAL LIFE...that cannot be kept in bondage because it is part of UNIVERSAL LIFE...OR GOD. It is time that the ASCENSION be understood...that once mankind has conquered his own discords and disharmonies, He too will gain immortal life...and be freed of the limitations of earth...making earth itself again into a paradise...not by escaping through death, but by arising victorious over death itself. perhaps the name THE ASCENSION of the HUMAN SPIRIT or one representative of it can be used...But unless there is a clear concept of its purpose...the effort will not have

strength. Nor can we get cooperation page three.
from those whom we desire it of. Since we are trying to have
the site near the City of the Angels...somehow it should tie
in with the fact that Heavenly assistance will be the final
means of overcoming our own difficulties. The Victorious
Freedom over the human self and all its limitations, can only
be gained when we raise our sights in contemplation of the Divine
Life all about, and no longer give our power of attention to that
which is destructive. THE VICTORY....or MIGHTY VICTORY or some
title which inspires success and freedom will draw the attention to
that which is constructive, and uplifting, and be the motivating
power behind this Monument which is to bring the Peace. Perhaps
Peace in itself is misunderstood. Usually it is thought of as weak
and ineffectual. But peace means Harmony and Love...and that must
be felt within the individual before it can come about between each
other. Peace is not static...it is very alive and vibrant..full of
joy and happiness...and is this not what you wish mankind to achieve..
the final victory over human suffering. And man will listen if they
think there is an answer to their suffering. But they will not...if
the idea adds to their already heavy burdens. Nor will money be spent
in mourning...that could be spent in find^{ing} a remedy to all grief.

I hope you do not mind this tirade...but since my own service
to mankind must only follow along these lines...I can only inspire
in others what I myself feel. Beauty is the greatest achievement
to me of the conquering of ^{all} else...and the noble, the pure, and
the beautiful are most nearest to the perfection of the Noble Creator
who has blessed us throughout the centuries, leaving us the choice
of whether we accept his gifts or reject them. Perhaps this time
mankind will not turn his back again.

My fondest regards to you both and your wonderful children.
They must have been jubilant when you got back. I do hope things do
adjust themselves...They will of course.....love and kisses..estelle..

Estelle

Estelle Prins . . .

PERSONAL REPRESENTATIVE

2953 Nichols Canyon - L.A. - 46 - Calif

19206 HILLHAVEN • TUJUNGA, CALIFORNIA • FLORIDA 3-3554

May 22nd, 1962

Prof. Dr. Otto Schneid
931 Clay Ave.
Scranton, Pa.

Dear Prof. Schneid:

It is with deep appreciation for your great art that I have dedicated the words that flow from the Universal Fountain of all creative fire. The catalogue is beautifully done, and my many thanks for choosing to place my name on its cover. It was not my intention to draw recognition to myself, but only to give you the due that is coming to your valiant efforts to challenge the unknown. I am most happy that your sketch was used, since it will be molded more of the same cloth of the creator of this great Monument to Freedom, and naturally will bear the signature of the artist, by the very handling of the pen. My only purpose in creating the sketch was to facilitate the printing, in the event you did not have one already made. However, as an emblem, for the work on the monument, it may prove useful, providing the sketch does not reduce into a mass of dark splotches.

As you surmised, I do have some ability at art, but being so involved in trying to eradicate the hate and misery that is the present lot of man, I have no time to further this talent. But to have you speak words of praise, does give me inspiration to some day try my hand at it again. Perhaps once the Peace is won...and the world again in accord with the Law of the Great Creator. My many thanks to you for your kind words. Someday, I have hopes of putting into print, for the enlightenment of mankind the manuscript that has been given me from Divine Sources. But it is too precious to produce in the ordinary commercial channels, thereby losing its dignity and sacred contents... When You arrive, should you have a few minutes I will very much like to hear your opinion on it. Meanwhile we are anticipating the time of your arrival.....Cordially yours,

Estelle Prins *Estelle Prins*

Estelle Prins . . . PERSONAL REPRESENTATIVE

10206 HILLHAVEN • TUJUNGA, CALIFORNIA • FLORIDA 3-3554
2953 Nichols Canyon Rd. Hollywood, 46, Calif.
April 28th, 1962

Dear Mr. Schneid:

This is to acknowledge your most pleasant response to my efforts, to convey in words, what your inspiring works evoke in those who view them. It may amuse you however to note, that I did not see any of your artistic creations, before doing the handwriting analysis, since I did not want to let any personal opinion influence, what I might see in your handwriting. To me, it is a challenge to know, how accurate such a "reading" can be, since only by this method can I verify what I know is the understanding that is often revealed through my poetic writings. Since I am only a channel for the greater Cosmic Being, who has created mankind in His image, I am most interested in verifying the tremendous truths that often flow through my touch as I write, but which I am very happy to be the recipient of. Since all that I write simply is allowed to flow forth, I never edit the words. After all I am only the channel. But it is usual to capitalize the first words of each line in poetry, and this will probably be the correct procedure. However, use as little punctuation as possible, as simplicity cannot be misunderstood. Since I did not mean to limit your creative works to mere concepts in clay, of course it would be more truthful to include — "or etched in immortal rock" "or hewn in timeless stone"...it does not matter how it is presented, as long as it conveys your artistry. You may take any licence you wish with what I write, since I do not pretend to know what will be the most presentable way that will indicate the clarity of thought. This is an art, I leave to the craftsman.

It is a pleasure working with such a evolved being as your works reveal of you, and since you could not reach such depth without going through the purifying flame of truth, I am certain the writing does not exaggerate....what you are within... Sincerely .E. Prins

Estelle Prins

April 16th, 1962

In viewing the writing of Otto Schneid, and wishing to present what I perceive of this simple humble artist, whose real desire to create works of art that are comprehensible to the larger masses of humanity, instead of trying to create works that will be judged by artistic standards superior, I shall elaborate on why he thinks this way.

By the simple process of detaching himself from what is the superficial view of society, and looking deeply into the significance of the inner action of humanity at large, Otto Schneid has captured the essence of the life force surging within each creature and only asking to be recognized. In his utter simplicity of attitude, being at no time eager to impress anyone with what he thinks, Otto Schneid has devoted himself to searching out and revealing the essence, and trying to capture for the moment the fluid motion of the human soul. Because he has a very analytical mind, penetrating deeply beneath the superficial structure, and identifying himself with the feeling of that which he creates, his works have a monumental ability to express for all time the life substance caught up in materialized form. The mobility and dynamic expression represents the disregard for outward appearances, and it is as though the artist was himself dissolved in the mystical experience of being welded to that which he creates. For any one seeking to find expressed in concrete form the philosophical concepts of human emotion, both the yearning for light and the succumbing to despair, one need only turn to his works and achieve^a/simple understanding that goes beyond the concept of words. Due to the very sensitive nature of this artist, who with great surgery has whittled away at his own errors and gone through the purifying flame of search to find that which in himself could be identified with the selfhood of others, he has by this amazing illumination been able to reveal the truth, naked in its expanse, undissolvable in its concept, monumental in its approach, and unconquerable in his understanding of the spirit that moves all things..... ..Estelle C. Prins.

The Phoenix Art Museum

F. M. HINKHOUSE
DIRECTOR

PHOENIX FINE ARTS ASSOCIATION
1625 NORTH CENTRAL AVENUE
PHOENIX 4, ARIZONA
PHONE — 258-5345

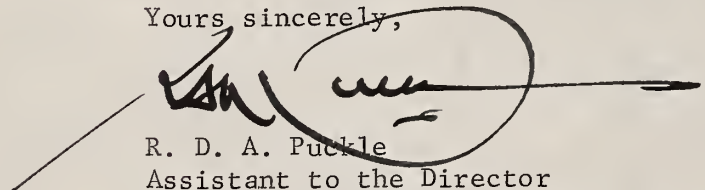
February 21, 1962

Dear Dr. Schneid:

I am much obliged for your letter of February 16 and for the photograph and information enclosed. Unfortunately our exhibition schedule is such that we have to reserve our one-man exhibitions primarily to local artists and it is with much regret therefore that we cannot offer space for an exhibition of your work in the Museum.

With regard to acquisition funds, they are extremely limited and again our first duty is, of course, to local artists and those artists from further afield who are of very special interest to our community. We are sure your photograph and information are required for your records therefore are returning them under separate cover.

Yours sincerely,



R. D. A. Puckle
Assistant to the Director

Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pa.

RDAP:nj

NEWMAN GALLERIES
1625 WALNUT STREET
PHILADELPHIA 3

February 8, 1962

Professor Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pennsylvania

Dear Professor Schneid:

In answer to your letter of February 1st, I am very sorry to tell you that it is impossible to have an exhibition of your paintings until the Spring of 1964. In your letter of November 16, 1962, you stated that you wanted an exhibition in 1962. You wrote that you could not do anything for the success of an exhibition in 1963.

We feel strongly that it is important both for the sake of the artist, and the dealer to do everything possible to make an exhibition a success. On this basis we went ahead and filled our open dates for 1963 and early Spring of 1964.

If you are at all interested in waiting until late Spring 1964 for a one-man exhibition in Philadelphia, kindly let me know as soon as possible.

With kindest regards,

Sincerely yours,

Yvonne G. Newman

Yvonne, G. Newman
Director of Exhibitions

YGN:jb

Wielce Szanowny Panie Toporow,

July 17, 1962

drogi Topi :

W dzien 5go b.m. wyslalem do Pana night letter w ktorym Panu i drogiej Pani Malzonce najserdecznie dziekowalem za cala Wasza mila goscinosc i pomoc. W sprawie propozycji Lehman'a, 600 \$ za "King Saul's Last Night", zgodzilem sie, a prosilem Pana o teleon collect w podobnych wypadkach. Poniewaz do dzis dnia nie mam dalszej wiadomosci, ani od Pana ani od p. Romana, nie mam pojecia jak nalezy wytлумaczyc brak odpowiedzi. W kazdym razie mam nadzieje, ze Pan i Panska rodzina sa zdrowi i ze wszystko u Was w porzadku.

Z Mrs. Coe unowione zostalo, ze kupuje obraz ktorego widziala tylko w fotografii. Cena na ktora sie zgodila 600 \$. Poslemy jej ten obraz, a oprócz tego i pendant, ktorego nie mogliśmy pokazac w fotografii, bo fotografie wtedy miał p. Secunda. Ten pendant wyslany zostanie z Nowego Yorku, obaj na adres Panskiej galerji, drugi za ta sama cene. Drugiego obrazu Mrs. Coe nie jest obowiazana odebrac, to tylko nasza propozycja przez niej przyjeta. Poprosze Pana o laskawe skomunikowanie sie telefoniczne po otrzymaniu obrazow i o doreczenie. Upraszam Pana tez o przyjecie pieniedzy i o przeslanie 66 % do mnie.

Czy juz sie nic nie ruszylo ? A co slychac o propozycjach p. Thue, szwagra pani Prins, o wystawie w innej galerji ? Czy p. Adamowicz odebral album ? Nie pamietam czy wyraznie Pana prosilem dac w moim imieniu album pani Holtowej. Przy naiblizszej sposobnosci badz Pan tak dobry. Jeszcze 5 albumy wydawca wyslal na adres p. Romana z Italji.

Najserdecznie pozdrawiamy, Miriam i ja , Droga Malzonke i Pana

picture, and they gave me a specified date² on which I was supposed to pick up the picture, which I did - and it is now in my house along with the two others. I have not had the time to go downtown to the warehouse and pick up the others. If you feel that it is urgent for those pictures in storage to be in my possession for any reason - do tell me and I shall certainly make the time to get the pictures. As it is now, I shall eventually get settled and will be able to attend to them. Of course you know full well that I am more than happy to be

1. April 17, 1962

Dear Dr. Schneid,

I am sorry not to have written sooner, but I returned from St. Thomas just a week ago today, and what with setting up housekeeping, I have had no time at all. I hope that you and Miriam are well and happy and that this cold winter has left you healthy.

I took your pastel to the Water-Color Society on the scheduled date, but within a few days, I received a form communication from them informing me that they were not able to exhibit your

SM

(3.)

able to have your work in my home.

I do apologize for this delay in writing - and hope that you will understand how hectic and busy I have been.

My love to Miriam, and
fondest regards to you both.

Michelle.

ERWIN TRAMER, PH. D.
717 ARLINGTON AVE.
PLAINFIELD, N. J.
PHONE: PL 7-4116

Plainfield, 17. März 1962

EIDESSTATTLICHE ERKLÄRUNG
Betreffend Herrn Prof. Dr. OTTO SCHNEID

Ich, der Unterzeichnete Dr. Erwin Tramer, Chemiker, erkläre hiermit:

dass ich Herrn Dr. OTTO SCHNEID, Professor der Kunstgeschichte, von Kindheit an kenne;

dass wir als Volksschüler dieselbe deutschsprachige Volksschule in Bielitz, ehemals Österreichisch Schlesien, besucht, als Klassenkollegen dasselbe deutschsprachige Gymnasium daselbst absolviert und beide an der Wiener Universität studiert haben, anfangs die gleichen, wenn auch später verschiedene Fächer;

dass seine Muttersprache Deutsch ist, wie dies auch die Umgangssprache seiner mir sehr vertrauten Familie gewesen und geblieben ist;

dass Dr. Schneid zwischen den beiden Weltkriegen in verschiedenen europäischen Ländern, Polen, Österreich, Frankreich, wissenschaftliche und populärwissenschaftliche Vorträge in deutscher Sprache hielt;

dass ich mehrere dieser seiner Vorträge in verschiedenen europäischen Ländern selbst zu hören Gelegenheit hatte;

dass sein Briefwechsel mit mir bis zum heutigen Tage ausschliesslich in deutscher Sprache geführt wurde.

Ich bestätige fernerhin:

dass Dr. Otto Schneid seit seiner Kindheit bis zum Ausbruch des zweiten Weltkrieges ständig in Bielitz gewohnt hat, mit Ausnahme der oberwähnten Studienjahre in Wien und anderer, meist beruflich bedingter Unterbrechungen, und

dass er im Jahre 1937 in Bielitz war.

Dr. Erwin Tramer

Robert F. Brant

NOTARY PUBLIC OF NEW JERSEY
MY COMMISSION EXPIRES OCT. 7, 1964

AMERICAN ZIONIST COUNCIL

515 PARK AVENUE

• TELEPHONE PLAZA 2-1234 •

NEW YORK 22, N. Y.

Cable Address: AMZIONIST

January 15, 1962

Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pa.

Dear Otto:

Thanks for your note of January 12th. The exhibits at Brooklyn and Hunter Colleges are being handled by our SZO Chapters there and they are working out the details.

I hope to have most of the answers to your questions when you arrive in New York.

Let me know when you are coming so that I can make sure to be here when you arrive.

I am looking forward to seeing you.

With best wishes.

Sincerely,

Lea

Theodore Comet,
Director, Youth Department

TC:bg

CONSTITUENT ORGANIZATIONS

American Jewish League for Israel • Bnai Zion • Hadassah, Women's Zionist Organization of America • Religious Zionists of America (including Hapoel Hamizrachi Women and Mizrachi Women) • Labor Zionist Movement (including Farband, Pioneer Women) • Progressive Zionist League—Hashomer Hatzair • United Labor Zionist Party (Achdut Avodah-Poale Zion) • United Zionists-Revisionists of America • Zionist Organization of America



April 15, 1962

Dear Dr. Schneid,

I wish to express my thanks for the lovely portfolio, which I received last Friday. If arrangements can be made, they will be exhibited at school. I do not, as yet, know if this is possible.

I understand the importance of your forthcoming exhibits and cannot harbor any anger at your cancellation of the Hunter exhibit. I only regret that your letter did not reach me in time to notify those people who waited so patiently for you. A

letter sent Air Mail to
New York on the 10th will reach
it on the twelfth, but the
mail is delivered after
most people have left
for school or work. Therefore,
I did not receive your
letter until the evening of
that Thursday, when I
returned home.

With best wishes for a
successful exhibition and
a

ONE CN

I remain

Sincerely yours,
Shari Stern

1265 Olmstead Ave
Bronx 62, N.Y.

April 4, 1962

Dear Dr. Schneid,

Please accept my apologies
for delaying so long in writing
to you. I wanted to wait,
however, until I had all the
necessary permissions. The

main exhibit will be set
up in the old South
Library in Sallet Hall.

A portion of the exhibit can
be displayed in the new
library in Shuster Hall.

We would like to have the
exhibit from Monday, April 30th
to Friday, May 11th. It will
be necessary for you to
visit Hunter College in order
to survey the facilities and
to decide which of your

2

work would be most
suitable. Please notify me of
the earliest date it would be
convenient for you to visit us.
I will arrange for someone
to meet you and for you
to see the necessary school
officials. I must know both
the day and time of your
visit in order to arrange things
properly.

With sincere thanks for the
privilege of exhibiting your work
at Hunter College, I await
your reply.

Respectfully yours,
Shari Stern
President
Student Zionist Org.
at Hunter, Bronx.

JUAN WARSCHAWSKY

O'HIGGINS 472
CONCEPCION - (CHILE)

Concepción - Chile 7 de Mayo de 1962

Carilla 1044

Lieber Otto:

Mit grosser Freude erhielt ich Dein Schreiben vom 12. Dez. 1961 und sowie Du durch einen Zufall nach so vielen Jahren meine Adresse gefunden hast, so kam Dein Brief durch einen Zufall bei uns am 25 ten Maerz an. Die casilla stimmt nicht mehr und obwohl der Eingangsstempel Deines Briefes in Chile der 17 te Dez. ist, ist durch irgendwelchen aussergewöhnlichen Zufall derselbe nach Monaten erst in meinen Besitz gelangt.

Wir waren eine zeitlang verreist und deshalb will ich Dir jetzt erst antworten. Es ist unglaublich wie die vielen Jahre vergangen sind und wie Du mir schreibst, dass mein letzter Brief an Dich aus dem Jahr 1940 ist, weiss ich garnicht wo zuerst beginnen. Ich will der Reihe nach die vielen zum grossen Teil sehr traurigen Nachrichten berichten.

Wir kamen nach einer Irrfahrt auf der St. Louis einem deutschen Hapagdampfer Via Cuba - es waren gefälschte Visa - nach Holland zurück und sind nach grossen Schwierigkeiten im Dezember ~~1940~~ 1939 in Chile gelandet und sofort hierher - die Zentralzone des Landes - gegangen, da wir hier eine aus Beuthen befreundete Familie hatten. Im Dezember 1940 hatte unsere Tochter Ursula geheiratet und ist im Juni 1941 nach einer Operation im Alter von 18 1/2 Jahren gestorben. Du wirst Dich ja wohl noch an sie erinnern können. Es war der grausamste Schlag unseres Lebens. Nachher hatten wir eine furchterliche wirtschaftliche Situation und da wir G.s.D. ja noch einen Jungen haben der damals 7 Jahre alt war, haben wir uns mit aller Energie durchgerungen und um ueber das Allerschwerste hinwegzukommen schwer gearbeitet und uns wieder aufgerappelt. Unser Sohn Franz wird im Juli 28 Jahre alt ist seit ueber 5 Jahren verheiratet und wir haben 2 geliebte Enkelchen, einen Jungen von 4 Jahren, ein Mädchen von 2 1/2 und eine Drittes unterwegs. Und das ist unser ganzes Leben und alles was wir schaffen ist fuer die Kinder - wir haben eine wunderbare Schwiegertochter, vaeterlicher seits deutsche Juedin, muetterlicher seits Chilenin und wir alle sind gluecklich.

Hannes ~~Eltern~~, ihre Schwester Frieda mit Mann, meine Mutter und mein einziger Bruder alle umgekommen. Ich selbst war ja noch vor meiner Auswanderung in Buchenwald und ich habe diese Verbrecher hassen gelernt und kann und will nicht vergessen.

Mein Schwager Gerhard, den ich noch im allerletzten Augenblick retten konnte, war mit uns in Chile und ist im Jahre 1948 bei einem Feuer in seinem Geschaefte Geld und Werte zu retten, verbrannt.

Das ist der tragische Saldo unserer Lieben.

Wir hatten von unseren Leuten im Juni 1941 aus Teresienstadt die letzte Nachricht und nachher war alles ausgeloescht.

Selbstverstaendlich wussten wir auch dass all Deine Lieben umgekommen sind.

Und nun zu Dir: Ich wusste nur, dass Du in Israel gelebt hattest und es ist fuer mich eine Neuigkeit zu hoeren, dass Du seit 1945 in den USA lebst. Hoechst interessant fuer mich zu hoeren, wie Du Dein Leben umgestaltet hast. Ist Deine Frau Amerikanerin. Wo liegt Scranton?

Ich erwarte recht bald wie Du mir versprichst ausfuehrlicher von

Euch zu hoeren

Mein bester Freund lebt in Chicago, er ist Arzt in einem Hospital, Spezialist fuer Blut. Wir hatten uns im Jahre 1959 in Buenos Aires getroffen und zwar nach ueber 20 Jahren und er war fuer uns ein grosses Erlebnis. Er hatte mich hier in Chile besucht und war von dem Wenigen, das er hier kennen lernte, begeistert. Ist es Dir oder evtl. Euch nicht moeglich mal zu uns zu kommen. Wir leben hier in Concepción in der Zentralzone - das Land ist ca. 4500 Kilometer lang und es gibt vom tropischen Klima bis zum europaeischen Klima, auch landschaftlich eine deartige Abwechslung und erlebt und lernt wohl alles kennen, was es in der Welt an Naturschoenheiten nur gibt. Concepción ist eine der oberschlesischen Industriestaedte sehr aehnliche, ca. 170000 Einwohner und da wir hier fast 28 Jahre lang leben, sind wir trotz aller Erdbeben und Sismen gluecklich. Wir haben hier sehr viele chilenische Freunde und einen sehr angenehmen Kreis und man wird viel eingeladen und hat auch abenso oft Gaeste. Wir haben 2 Geschaefte, ein sehr elegantes Damenmodengeschaeft und mein Kinder im gleichen Gebaude modische Kleingkeiten und es geht uns G.s.D. wiirtschaftlich recht gut. Ich freue mich auf Deinen naechsten Brief und bitte Dich mir recht ausfuehrlich von Euch allen zu schreiben.

Mit herzlichen Gruessen an Euch alle

Ein
Paul E. Fauer

April 5, 1962

Altrusa, Scranton

My respected and very dear Ladies,

It is wonderful to get such fine greetings as yours.
It is a good experience, a comfort stronger than different disappointments.
I thank you noble people indeed cordially.

I would like to invite you to come , to visit me and my family
and to see a part of my works ; but our home would certainly be too small
for an assembly of Scranton Altrusa.

Thus may I invite a delegation and ask you kindly to let me know
the time we shall have the privilege to receive representatives of
this friendly Club ?

With most sincere greetings

yours

Otto Schneid

March 1, 1962

Dear Mr. Helie,

I shall not soon forget the generous favor you did to me by housing in the Church my paintings and sculptures. I also hope you remember us friendly.

Long ago I suggested to you to paint your portrait and you agreed. For this reason and for the great pleasure we shall be delighted to get from you a suggestion about a date convenient to you.

My sincere thanks also for the publications of the Universalist Church you kindly have sent to us. So far I only knew that you don't want to hate. By one of your poetic confessions I learned that you cannot. I should be happy to arrive at this high grade.

Cordially yours

Otto Schneid

Jan. 23, 1962

Dear Mr. Helie,

At least , we come this Friday to NY to take my paintings and sculptures from the Church, to send a small part to Scranton for an exhibit in the Everhart Museum , and most of them to a place in NY that we shall choose finally.

At this opportunity I thank you again most cordially for the generous favor of storing them and for your admirable patience.

I hope for our friendly contact in the future too.

After our arrival we shall call by phone. You will certainly have the kindness of giving instructions so that we shall be admitted also in your eventual absence.

My most sincere thanks also for the publications of the Universalist Church that you kindly have sent to us regularly. So far I only knew that you don't want to hate; by your grand poetic confession I learned that you cannot. I would be happy to arrive at this high grade.

Cordially yours

Otto Schneid

Jan. 25, 1962

The Universalist Church,
CPW at 76th Str.,
NYC

Please release to Mr. Carl E. Ellis, Curator of the Everhart
Museum, Scranton, Pa., five of my sculptures and two of my paintings.

Respectfully

Otto Schneid

Feb. 16, 1962

Mr. Charles Nagel, Director,
City Art Museum,
St. Louis

Sir,

Allow me to introduce to you my work and myself
by the short information enclosed.

I would highly appreciate any friendly interest
you would take in my art, particularly an invitation for
an exhibit or an acquisition.

Just now I possess only one copy of the Alinari album
of my paintings and sculptures, but as soon as I shall get
other copies it would be my pleasure to send one to you.

Very respectfully yours

Otto Schneid

AMERICAN ZIONIST COUNCIL

515 PARK AVENUE

TELEPHONE PLAZA 2-1234

NEW YORK 22, N. Y.

Cable Address: AMZIONIST

Jan. 9, 1962

Professor Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pa.

Dear Otto:

Thanks for your letter of January 6th. I regret that you still have not located a site to use your paintings. As I mentioned in my last letter, I could place them in our basement here, but I am just not sure about the heat problem and as I am not an expert on this matter I cannot judge, but perhaps this would not effect the paintings. This still can be a consideration.

As for exhibitions, two colleges have expressed interest, Brooklyn College and Hunter College, Uptown. I could see an exhibition lasting for two weeks at each Campus around sometime before and during the Yom Haatzmaut period. Let me know if your paintings are free for that period.

Your moving portrait of Isaiah is receiving a prominent spot in the front window of the House of Living Judaism.

I was glad to hear that Miriam is just about back to normal. Please give her my best.

Cordially,

Lead
Theodore Comet,
Director Youth Department

TC:bg

CONSTITUENT ORGANIZATIONS

American Jewish League for Israel • Bnai Zion • Hadassah, Women's Zionist Organization of America • Religious Zionists of America (including Hapoel Hamizrachi Women and Mizrachi Women) • Labor Zionist Movement (including Farband, Pioneer Women) • Progressive Zionist League—Hashomer Hatzair • United Labor Zionist Party (Achdut Avodah-Poale Zion) • United Zionists-Revisionists of America • Zionist Organization of America

20. 3. 1962.

Lieber Herr Otto!

Vielen Dank für Ihren langen Brief, der mich sehr ge-
freut hat. Ich sehe, Sie sind mitten im Schaffen und
wenn es auch eine bittersüße Freude ist, weil es, glaube
ich, den ganzen Menschen her nimmt, so ist es doch
das, was Sie sich am meisten wünschen. Und wofür
Sie leben. Bitte, richten Sie uns in freundschaftlichsten
Umgänge an Frau Gemahlin aus. Ich bin glücklich zu
wissen, daß es jemanden hat, der Sie umsorgt. Ich
hoffe, Sie stehen mit den Kindern auf gutem Fuß, aber
ja, dafür wird schon Ihre Frau Gemahlin sorgen. Ich bin
überwältigt, wieviel Sie leisten. Ihre letzte Karte hat
mir sehr gefallen, sie machte einen mächtigen Ein-
druck. Mir geht es nicht schlecht, obwohl ich nach
einer starken Grippe bin. Mit den Augen muß ich halb-
wegs zufrieden sein, ich kann auf der Straße gehen,
außer dem rechten Auge habe ich einen Schleier an.

ich kann nichts viel sehen, aber das ~~re~~ linke Auge
ist weit besser. Es geht, weil es gehen muß. :

Ich freue mich, daß Sie mir Du sagen, wenn ist
sich irgendwie näher. Erlauben Sie mir, daß ich Ihnen
weiter Sie u. Otto sage. Das ist gut für mich.

Als Sie mir über Dr. Macku schrieben, schaute
ich sofort im Telefonbuch nach: da waren 6 Mackus,
aber kein Kunsthistoriker, alles Musiker. Ich schrieb
ihre Namen und Adressen auf, ~~da~~ ich wollte Ihnen
diesen schicken, u. habe ihn leider verlegt. Wenn man
alt wird, wird man vergesslich. Ich werde mich bemü-
hen, den Fettel zu finden. Ich war eben in einer Te-
lephon- box u. schrieb alle Mackus heraus. Hier sind

- 1) Sie: Macku Edi, Hanslgarten, Wien 14, Lebingerg. 6/2
- 2) Macku Eduard ~~14~~ 14, Koppelweg 3 6
- 3) Macku Eduard, Konzertdirektion, Lothringerstr. 20
(Konzerthaus)

4) Macku Eduard, Musikdirektor Wien 23
Rodaun, Martin Schneiderg. 3

5) Macku Hilde, III, Erdberger Lände

6) " Paul, Pressephotograph 18.

Gentzg. 56.

Das sind alle Mackus. Sie fragten aber noch einen
Dr. Anton Macku, Kunsthistoriker.

Ist das Wetter bei Ihnen auch so schön wie bei uns? In
Wien ist es unwahrscheinlich schön, aber für Frühlings-
anfang recht kalt und oft windig. Ich wollte noch
sagen, daß ich an einen H. Macku geschrieben habe
[Postkarte], aber keine Antwort erhalten habe.

Soll ich in Ihrem Namen schreiben, d. h. ihn von
Ihnen sagen u. Ihre Anschrift schreiben. Ich weiß es
wirklich nicht, aber wie Sie wünschen. Ich möchte
gern erfahren, ob Ihre Ausstellung Erfolg hatte. Ich

glaube ja.

Ach grüße Sie von Herzen und wünsche, daß Sie
10 Bilder verkaufen. Sind die Amerikaner Kunst-
verständig? War die Ausstellung gut besucht?
Ach glaube ja.

Schreiben Sie bald

Ihrer alten Freundin

Lise.

WADSWORTH ATHENEUM

COLT, MORGAN, AND AVERY MEMORIALS—A FREE PUBLIC ART MUSEUM—FOUNDED 1842

25 ATHENEUM SQ. NORTH
HARTFORD 3, CONN.
TELEPHONE JACKSON 7-2191

April 5, 1962

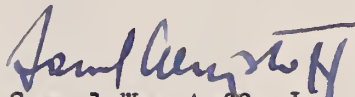
Professor Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pa.

Dear Professor Schneid:

Thank you very much for your letter. Unfortunately, our purchase funds for contemporary painting and sculpture are rather small and therefore, I think it would probably not be worth your while sending the Alinari Album.

However, if you have a show in or near New York some time, would you please send me a notice, as I would like very much to see your work.

Very cordially yours,


Samuel Wagstaff, Jr.
Curator of Paintings

SW:jb



Feb. 26, 1962

Mr. H. M. Kurtzworth,
Art Director,
American Art Society,
Los Angeles

Dear Mr. Kurtzworth,

I thank you cordially for your friendly answer of Feb. 20
and the most interesting information enclosed.

I'll write first to the Plummer Galleries, #1 of the ads
you had the kindness of sending to me.

May I hope you would remember me whenever any cooperation
would be suitable ?

With my most sincere wishes for the success
of your activities

yours

Mr. H. M. Kurtzworth,
Art Director,
American Art Society,
Los Angeles

Memorial Day, 1962

Dear Mr. Kurtzworth :

On Feb. 26 I had the pleasure of thanking you for your friendly letter of Feb. 20 and its enclosures.

Soon afterwards, a distinguished friend of my art, Dr. de Sora, founded in Hollywood a gallery and named it after his ancestor Saint Constantine Gallery. He invited me for an exhibit, and I enclose an invitation for you. I enclosed also a new brochure published by Dr. de Sora. He also acts in favor of my main project, the Monument to the Six Million Martyrs.

As to my exhibit I gratefully recall your benevolence. I am sure that you are inclined to help and that you can do very much. I have not enough knowledge of the City and its society, nor do I know your special possibilities; thus I don't suggest to you anything, but I should highly appreciate any advice or cooperation, both that of your A. A. S. and your personal one.

I want to come myself to attend the preview. Of course, I am strongly interested to meet you.

Most sincerely yours

Otto Schneid

BROWN UNIVERSITY
PROVIDENCE 12, RHODE ISLAND

February 15, 1962

Mr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pennsylvania

Dear Mr. Schneid:

We have your letter of February 14, concerning your interest in the Howard Foundation.

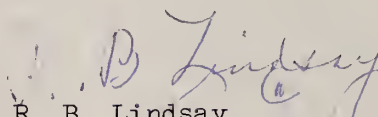
The Howard Foundation accepts applications only upon nominations by the individual's institution or by an outstanding person in his field. Grants are made in the spring for the following academic year, in amounts of \$1500 to \$5000, to scholars and artists preferably between the ages of thirty and thirty-five, but in no case older than forty, to enable them to carry on work in their chosen field. The grants may not be used for technical research in the sciences or for work toward any academic degree.

Normally we receive approximately sixty applications for Howard Foundation grants each year, and about four awards are usually made.

If you would like to apply for 1963-64, and will so advise us, we will be pleased to send you an application form at the time they are being sent out.

Applications, together with the required supporting material, must be returned not later than December 1st of this year.

Very sincerely yours,


R. B. Lindsay
Dean of the Graduate School

RBL:dsv

Enclosures

Gerötet erglaenzte der Spiegel des Meeres,
Gerötet die Kueste und ringsum das Land,
Gerötet die Ruecken der Kraftdromedare,
Die schnaubend sich reckten im gluehenden Sand'.

Gerötet die Höcker der schweren Kamele,

Ich bin noch nicht fertig

Die sonnen und auch die sonnen

Gerade die sonnen und auch die sonnen

Gerade die sonnen und auch die sonnen

Gerade die sonnen und auch die sonnen



Scranton, Oct. 12, 1962

Dear Mr. Bencetic ;

I gratefully acknowledge your letter of Oct. 8.

The value of the portrait "Miriam" is \$ 400. - As you yourself feel, I am indeed not able to accept the offer in connection with the lecture. So we have to postpone it. - It would be a loss for the exhibition that both of us try to arrange as perfectly as possible, if you would not be able to include the album.

Thus I await the pleasure to welcome you as agreed.

Very sincerely

Otto Schneid

The following information was obtained from the records of the [illegible] Department of the Interior, Bureau of Land Management, regarding the [illegible] land grant made by the [illegible] Congress to the [illegible] State of [illegible].

[The rest of the page contains extremely faint, illegible text.]



W. Zawony Przejawka, Otto!

MILANO

Il Cenacolo di Leonardo da Vinci

The last Supper by Leonardo da Vinci

La cène de Leonard de Vinci

Das Abendmahl von Leonardo da Vinci

Wczesniej, dzis i juz bardzo za to dziękuję.

Musieliśmy szybko wyjechać do kraju.

Teraz jestem w czterech, rozumiesz?

do Grecji, Turcji, Izraela, Hiszpanji i Kanady. Już 4.12.1961.

Żadno jescze u L.A. powiedzialam

Co mi, ze znam bardzo dobrze ciebie, 2

dzieci, ktora zafascynowala mi

poim i wydatkami ztemi, od

23 dni. Noze przyjdzie do wyko-

zystac na moim miejscu.

Podziwiam bardzo jescze.

Podziwiam jescze dla ciebie

znowu, tam. Dobrze ci.

Wszystko ci. T. KARPIAK

1861 CENTENARIO UNITA D'ITALIA 1961



PROF. DR. OTTO SCHNEID

931 clay ave

SCRANTON, PA.

U.S.A.

ze yciej mojej zginęła napewno i już trzęsła
piszcie. —

lecz są bardzo ze mną kochanego synka
i dobre znowu. Sprawili mi wielką radość
fotografii. Trzymaj i Twoją K. Rodkiewicz.
Przesłałem ci przynajmniej 2 fotografie. Bardzo
ci proszę napisać mi wzywać w Wasz do kogoś. Jak
zjście? By wam było się polepszyć? By wście
chać na wście? Drogile wzywać.

Również z okazji życzę ci wzywać
naprawdę.

Perdennic liść waz znowu i synkiem całości
Adela

W mojego męża i córki najserdeczniej nie pozdrawiam

Mej adres: Skrzynka Adela

Wąbrzeźno ul. Stalina 11/7
D/ślask Polska.

Latvian 21/11.48.

Moja Otto!

Otkryvšam v tebe lič klōren ty o to meji
pisat'. Na kileka dni pned tym byla u nas delegacija
gości palestyniškich i ja pytatam o liebie, včas
pervny raz doviedvādam si z izjer. gaŕ barho
si to vādomoŕci ucienydam nie mozem oŭbie
vyobrazit'. Pripomniaty mi si te lata kiedy
clōviki tam v Biełsku o to nhoty i bydam u tvojich
błp. rodkach, a ty bawidesi si z mamoj, bēdāca
včas mater okiercyuka. gacie misliwie rasy
to byty meji Boie. - Dais, mam vrasenie z
cote viki pnedy, nie lata - tylc pzed, tylc
mienozie - i to vnyotro me pvozvati bez
slovot. - Ja otka pracuji jako nauczitelke
vydovavoyui v Pōdmiternasie nkoluyu ryzorskim.
Tam tei sportovam vyzet goŕci z Palestyny.

Mez meji me otety pracovai na nasie me moie,
nabavio si novinej cloroby serca i lchone
zabovili na pracovai. Mez meji zeit barho
dobrym otvorchiem, zetsenij 14 lat po slubie.

Mam tei to lchmij cōrkę, nazva si Gloua
chodit o to ir. ke. i barho dobre si usy.

My si kēvrajolicoj jēnyke tei. v o mathi
meji to cliz ja sprowadit o to siche, v^{te} mam
na madkiej vkrōtce u si z mola. To
byloby mamej vyzet vnyotro v nas tu otvory. 30

Dr. Otto Schnei

Jerusalem

P.O.B. 1307.

Palestyna

Anna Kuroi Zabrzyck
ne Halina 11 D/Slask
Polska

Warszawa, 26. IX. 1952

Ściszony Panie.

Otargumeliśmy między listem Pana. Ciężko
nam, że nie udało się Panu dostać. Pieniążki
(myślimy otargumelić w nieopracowanej kopertce).
Wszystko nam się zdarzało się przez poru-
szenie niecierpliwości, spowodowanego tym,
że nie porządnie nam przez do korekty.

Myślę, że najlepiej się obecnie w
Panie zprężyć w kierunku w Świdł-
tanie obok Otwocka, gdzie go prze-
biegnie. Cóż się może stać lepiej,
bywa, że schodzi na poszukiwanie.
ogólnie soli a także odwaru się
na krotkie spacer po otaczają-
cym dom - lasem.

2017.12.12

The first of these is the
 fact that the
 (1) of the
 (2) of the
 (3) of the
 (4) of the
 (5) of the
 (6) of the
 (7) of the
 (8) of the
 (9) of the
 (10) of the
 (11) of the
 (12) of the
 (13) of the
 (14) of the
 (15) of the
 (16) of the
 (17) of the
 (18) of the
 (19) of the
 (20) of the
 (21) of the
 (22) of the
 (23) of the
 (24) of the
 (25) of the
 (26) of the
 (27) of the
 (28) of the
 (29) of the
 (30) of the
 (31) of the
 (32) of the
 (33) of the
 (34) of the
 (35) of the
 (36) of the
 (37) of the
 (38) of the
 (39) of the
 (40) of the
 (41) of the
 (42) of the
 (43) of the
 (44) of the
 (45) of the
 (46) of the
 (47) of the
 (48) of the
 (49) of the
 (50) of the
 (51) of the
 (52) of the
 (53) of the
 (54) of the
 (55) of the
 (56) of the
 (57) of the
 (58) of the
 (59) of the
 (60) of the
 (61) of the
 (62) of the
 (63) of the
 (64) of the
 (65) of the
 (66) of the
 (67) of the
 (68) of the
 (69) of the
 (70) of the
 (71) of the
 (72) of the
 (73) of the
 (74) of the
 (75) of the
 (76) of the
 (77) of the
 (78) of the
 (79) of the
 (80) of the
 (81) of the
 (82) of the
 (83) of the
 (84) of the
 (85) of the
 (86) of the
 (87) of the
 (88) of the
 (89) of the
 (90) of the
 (91) of the
 (92) of the
 (93) of the
 (94) of the
 (95) of the
 (96) of the
 (97) of the
 (98) of the
 (99) of the
 (100) of the

Na Bielanach iść się niezapomniał,
gdzie dopierośne lato było zimne
i deszczowe, zai domek w którym
mieszkał był nieprzytulnie zimny.
Mam nadzieję, że wkrótce by-
dzie się iść tak dobrze, że znowu
wiecej pracować. Stędy i samopo-
sunięć będzie dużo lepsze.

Możę zapytać za moim pośred-
nictwem, jak daleko jest poannista.
Pamięta ostatnia praca i czy już się
drukuję?

Starożytności i historyi w A. Allen
album przed. jego artystycznych zjednoczeń.
od nas obywateli i innych ludzi, którzy podobnie

The following is a list of the
names of the persons who have
been named in the report of the
committee on the subject of the
reform of the law of evidence.
The names are given in the
order in which they were
mentioned in the report.
The names are given in the
order in which they were
mentioned in the report.
The names are given in the
order in which they were
mentioned in the report.



KÜNSTLERGRUPPE
FREIE BEWEGUNG

hierher Herr John Herr
es hat mir sehr
leid getan Sie
vor meiner Abreise nicht mehr
gesprochen zu
haben. Anfangs
September bin
ich wieder in Wien

Otto Schreier

Wien V.

Siebenbrunn

n° 13

F. SALVENDY
KNABENBILDNIS



78

T-A, 27. XI. / 62

Lieber Dr. Naffati Schneid,

Ich erhielt die Reproduktionen auf Karten von Ihnen (Aug. 61 u. Sept. 62) sowie auch die Broschüre über Sie von C. E. Pims (wer ist dieser Herr?), u. ich danke Ihnen. Erst jetzt, vor einigen Augenblicken, kann ich sagen, Ihr persönliches Wort "Towards human art" in dieser Broschüre zu lesen. Es enthält dieselbe Mahnung bezgl. Kunst, wie sie ein gewisser W. Dahms in einem Buche der Nietzsche - Gesellschaft (Münchener Verlag - München) Anfang der 20er Jahre bezgl. moderner Musik veröffentlichte. Was Sie jedoch über Impressionismus sagen, kann ich nicht unterschreiben. Rodin z. B. kann man zu den Impressionisten rechnen, u. ich nehme an, daß auch Sie ihn sehr schätzen. —

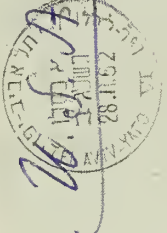
Ich hat Sie schon einige Male, um zu schreiben, ob auch Ihre Gattin u. die Kinder sich bei Ihnen befinden. Und ich wiederhole dieses auch jetzt wieder. Es ist wohl klar, daß mich das Schicksal Ihrer ganzen Familie interessiert. —

Von uns ist wenig zu berichten. Wir waren im Sept./Okt. mal wieder ca 5 Wochen in Jerusalem, in einem sehr beschönerten Hotel, wo wir vegetarisch verpflegt wurden, wenn auch nicht sehr gut.

Mit herzgl. Grüßen,
Ihr

André Meyer

איגרת אוויר
AEROGamme



Mr. Naffali Schneid
(Ott)

Scranton Pa.
931 Clay Ave
U.S.A

דואר אוויר
PAR AVION

קפל שליש

אם יושם משנה בפנים, תישלח האיגרת בדואר רגיל

השולח - EXPEDITEUR

Dr. A. Meyer, Del Aviv
(Israel)

Shalom Hekhem - Sh. 29

קפל שני

קפל ראשון

לפני שנינו היקר, שלום / זיכרה!

קדמון לא ידענו שישנו יחסי, לא כן באיחור, .
אולי זה לא ידענו.

מה חכם הצלח? ניצב אורג צמח 2/3 ארץ? הלא חכם
החלוצים קיבלו להנחלת?

הקוד מלל יאמר בן המולד למעמם ולקטיו הצרם.
הנה נלה חלף-לחלף עם חלוקה מעט.

בָּיִת וְאֵת חֹפְשִׁי בְּמִכּוֹן וְעֵינַי בְּחִתּוֹת נֶאֱסָר
 וְקִישִׁי. זֶה הִיב חֲמוּרִים עָי אֵיכָּא בְּשִׁמּוֹתֵי בְּרִיאוֹת, פִּקְלִי
 חֲמוֹר בְּרִאוֹת אֵיפְסָר בְּרִאוֹת וְאֵל כִּי אֵפְסָר בְּרִאוֹת וְאֵל
 חֲמוֹר וְעֵצָה אֵיפְסָר (אֵלִיָּה לְעֵצָה בְּרִאוֹת סִלּוֹת) וְאֵל הִיב
 אֵל בְּרִאוֹת בְּרִאוֹת, וְאֵלֵּהּ אֵלֵּהּ אֵלֵּהּ, בְּרִאוֹת בְּרִאוֹת וְאֵלֵּהּ
 בְּרִאוֹת וְאֵלֵּהּ אֵלֵּהּ אֵלֵּהּ. אֵלֵּהּ אֵלֵּהּ אֵלֵּהּ בְּרִאוֹת
 בְּרִאוֹת הִקְשִׁי, עֵצָה יֵשׁ בְּרִאוֹת אֵלֵּהּ הִקְשִׁי בְּרִאוֹת
 וְחִסִּי. אֵלֵּהּ הִיבֵּהּ הִיבֵּהּ יֵשׁ בְּרִאוֹת לְעֵקֶל עֵלֵּהּ אֵלֵּהּ חִסִּי
 עֵצָה בְּרִאוֹת הִיבֵּהּ.

אני חתומה עליו

104/1 W332 282

2. ח.ח./ח' סט' א' גלויים פתוח.

~~לְקַדּוֹם בְּרִיאֹת הַעַם~~
~~דָּבָעוּן~~

~~כתבת המערכת~~
נחלת־יהודה, א. קריא.

_____ .00

תאריך

[illegible]

22 י'צ'רג מ'מ'פ
פ'מ מ'מ'פ ק'מ

.....סס

"טבע ובריאות"

דב-עון

לקדום בריאות העם

כתבת הסערכה

נחלת יהודה. א. קריא.

טל' 941398

1.6.1962

חאריך

למיני דיקר קי נ שניצ!

אני געין וואו היינט אל באפאלט לעבן אל דצור וויכח
שניצ דעלעק. דעיק אלל דעו וואס צו וואנדק לעין וואו, זאק באקרב
פניפון זאן באזאג צו צעק. שווארץ און לעזא, זאק זאל זאג האפאל
אנלאזי וואס באזענדע לאנטישטיק וואס לאנטישטיק.

דעו שאלו זאק קטע וואסן דעקק" אל אנצוהט-האלס, וואס וואסן
דעקק אלל. זאק זאן געלעב, זאן געלעב אלל אל געלעב אלל וואס באזאג
וואס דעו וואסן אללעק זאג, שאלו באזאג צו צעק וואס זאג וואס.
זאק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
שאלו אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
צאק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
זאק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק

דעו וואסן זאג אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק
אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק אללעק

שאלו אללעק אללעק

Nov. 7, 1962

Mr. Sidney Janis,

NYC

Dear Mr. Janis :

Almost two years ago I showed to you the album of my paintings and sculptures published by Alinari. You reacted very friendly, but told me the time for my art did not yet come.

I knew it will. Now I am not surprised to read about your exhibit of new realistic art. It makes me hope for most advantageous cooperation.

Maybe you remember that my art is not merely realistic. I enclose a brochure printed at the opportunity of my recent exhibit in Hollywood. After the works represented in its poor reproductions I started my latest phase whose results are not "different", but absolutely new.

This group of works is now exhibited, not for sale, in Mansfield State College. Afterwards, arrangements could be made to show a part of them to you.

I have to be in NY soon. It would be a great pleasure to call on you.

Very sincerely yours

Otto Schneid

Aug. 12, 1962

Dear Mr. Louis Marvin,

We~~s~~ were not too sorry when leaving LA a six weeks ago, since we planned to move to this attractive city soon. In the meantime, however, we were forced to stay here for another year.

There were some themes that I wanted to discuss with you, and you obviously also felt you have to say something to me. For the time being I remember your friendly interest in my art, and your question about a painting that would perfectly fit a person devoted to peace and freedom and to love of life. Yes, I have a painting for you.

In this picture, "The Last Humans", without its frame 30 x 36 ", I dared to show the nightmare of a mankind that would remain after a nuclear war, on a small island in an ocean of destruction. I enclose the photograph. You can't see all the expression that is in the colors, but you'll relize^a the composition and most of its details. Instead of the regular price of \$ 1000 I offer it to you for 600.

My regards to your friend Mr. Allan Carter.

We greet you, my wife and myself,

yours

Otto Schneid

Scranton, Pa., Dec. 9, 1962

Mein teurer Herr Dr. Andre Meyer,

In Ihrem neuesten Briefchen, vom 27. Nov., sind Sie ein wenig boese, so dass ich eile, Ihre sonst immer so freundliche Stimmung wiederherzustellen. Ich arbeite hier, seit ich nur Maler und Bildhauer bin, viel mehr als je, zuweilen fast 20 Stunden taeglich. So konnte es kommen, dass ich eine Frage uebersah. Ja natuerlich, wir sind hier wie immer beisammen, meine Frau lehrt an einer Schule Hebraeisch, Bibel und Juedische Geschichte; unsere Soehne, jetzt 16 und 11, haben die Sprachschwierigkeiten so schoen ueberwunden, dass sie in ihren Schulen glaenzend vorwaertskommen. Moshe-Adam, der Kleinere, macht auf Jeden einen verheissungsvollen Eindruck. Physisch fast zu schoen, scheint er eine herrliche Synthese reichen Gemuetslebens mit sehr scharfem Verstand zu sein. Jaki ist jetzt eher in einer Phase der Stagnation seines Koennens, doch erscheint demnaechst sein erstes hebraeisches Buch in japanischer Uebersetzung.

Ihr Bericht ist allzu lakonisch; wuerden Sie das nicht auch gutmachen?

Da Sie in T.A. nicht gerade von philosophisch interessierten Leuten umgeben sind, moechte ich Sie gern mit einem hochkultivierten Menschen zusammenbringen, der als Geschaeftsmann arbeitet (jetzt in Rasco) und Autor mehrerer philosophischer Buecher ist. Er leidet auch am Mangel eines Forums. Ob sich nicht starke prinzipielle Gegensatzze zeigen wuerden, sobald der beantragte Kontakt hergestellt waere, weiss ich nicht. Aber das tertium comparationis sind zwei denkende Menschen, und das ist wohl nicht / wenig Adr.: Ing. Leopold Goetz, Chowewy^e Zion 36. Sollten Sie ihn zufaellig schon kennen?

Mit sehr herzlichen Gruessen von Haus
zu Haus

Ihr

Sept. 24, 1962

Mr. Stephen T. Bencetic,
Mansfield State College

Dear Mr. Bencetic,

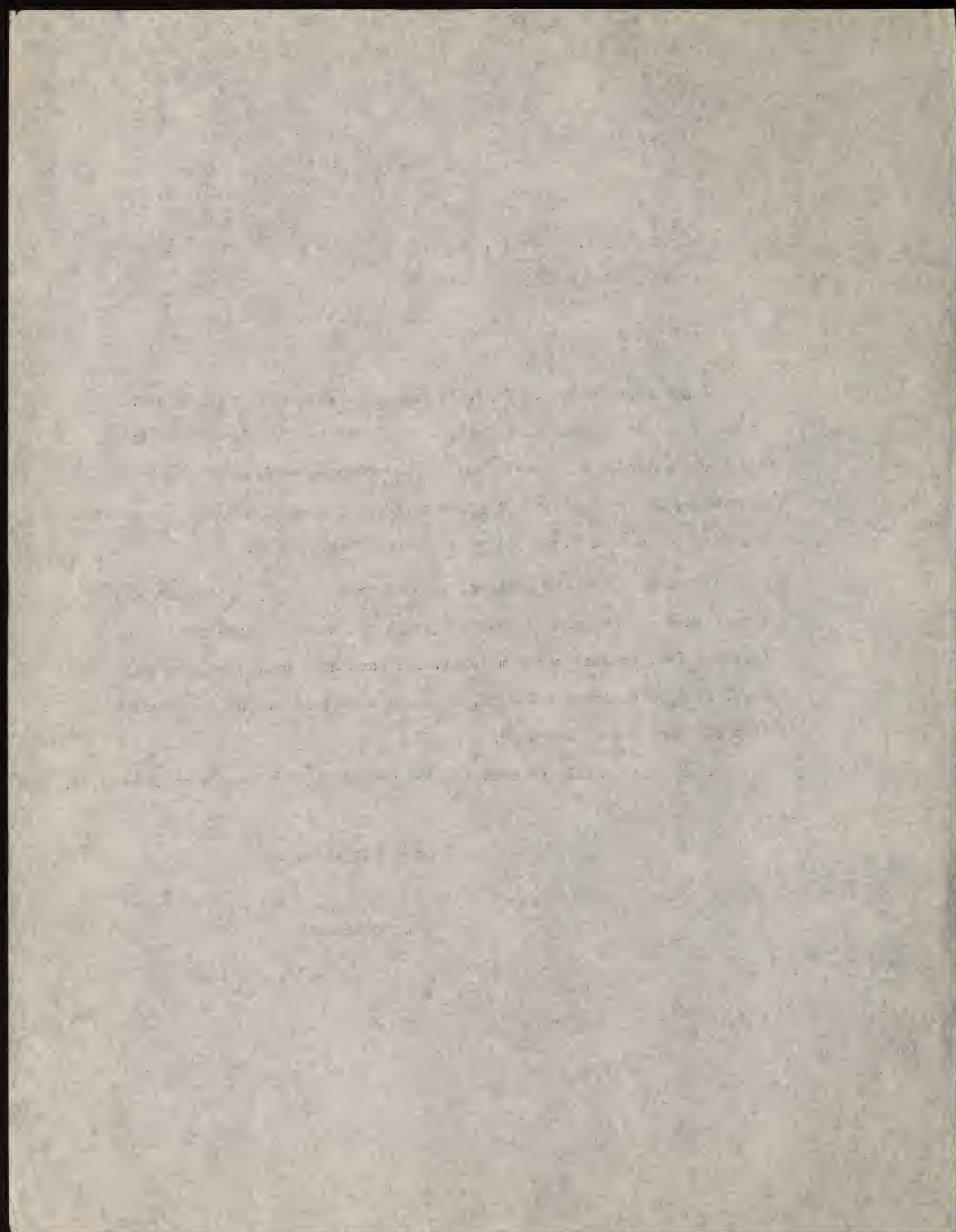
I got your letter of Sept. 19 and agree with your suggestions.
In order not to complicate things, I shall not include works kept in NY.
The works selected will await you as you propose, on Oct. 16, in the
afternoon, and we shall await you with great pleasure. The largest painting will be 48 x 64 ". We can also include 3 sculptures.

As to my speech or lecture, I would prefer Sunday afternoon. Could I be picked up and brought home ? Here in the States I have not yet a "usual" fee, because since my arrival I have done exclusively artistic work. If 100\$ would be too much, I should accept less. The theme would be :
"Art of Today and my own Way".

I shall certainly be able to send you the list of works before Oct. 2.

I greet you sincerely

Otto Schneid



ויכרן ל. י. ויכרן
 ח' ל. ויכרן 20
 ב. ויכרן
 ויכרן.

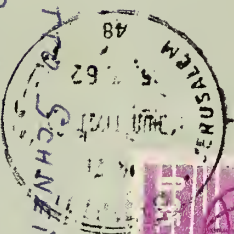
12-7-62 תאריך השלמה

אהי יקירי נפתלי.
 כשגש כן הצפיה
 חום ואינך בכל פיה.
 אור שאת אור בחובות הקטנה והנחמה
 בהוצאת E.C. PRINS חשך רבתי תאכל, וכמה לפיות אהבות
 והלבב כי התאבקת עם מאמר האצות וגם וכלת לו.
 רבות חשתי לך, ואודה לך כי אהבת
 בלבי: האור שגשגו נוצר והיה לך נוצר אורמלך והיו
 אתה אורן והלבי עם יחד, ואין צורך חפשו להבין רב נבו
 להחליט שאת נוצר, ואחרי שפוצצת את גבול אהבה את
 כלומת האהבה והיוצרה, אכל אהבה אנה - אתה אצאת
 בצדוק את עצמך... אין לך איפה אצמך?
 שאת, אריות את צמח פחיתו של - אוזותך
 אר יתה אנה - את צמח אתה: של הוצר של היוצרה
 אחר אהבה. הצפיה וצמח אריות והוא עם אהבת
 את הפצח ואינך את הקטנה אשה בלש. הצפיה אינה
 תוצרת האור כי הוא עצמה היום האור: האור האור לבל
 ואחרי הוצר אהבת אריות בל בל הצפיה: כי גאון
 למ תלמה האהבה עם עם השכנה לוקה.
 יפות הן התאורות חשך צואה נאצות בחובות,
 (ולו יפתי אהבת את האוריות), אכל האור האור אהבת
 של השואה אלה אלה, כי שואה אהבת וצמח אהבת וצמח
 בעצמה, כשגשג ובשגשג, כשגשג אהבת אהבת בהצמח,
 עם כי הצמח שבו חשך חשך אכל קשה אכל, והנה צמח
 אי צמח, אכל כי חשך צו צמח אכל חשך חשך, כי אכל
 הנך אכל את הצמח והופה.
 אה שגשג אה חשך? אה שגשג אה חשך וצמח וצמח
 ואכזב הורחם? אה אתה נאצות? והוא אה, או אתה
 נאצות?
 אכליו אכל כשגשג נאצות, חשך צמח אכל חשך
 באכל ושגשג חשך אכל ואכזב.
 באכל אהבת החיים באכל, האהבת אהבת את
 החובות והם תאכל והתפלו ואחרי אכל הצמח. אה והצמח אה!
 אהבת, י.ש. אהבת

אִיגְרָת אוויר
AÉROGRAMME

דואר אוויר
PAR AVION

DR. O. SCHNID
c/o DR. ROMAN D. DE SORA
1302 NORTH ALEXANDRIA AVE.
HOLLYWOOD, CALIF.
U.S. AMERICA.



קפל שליש

אם יושם משני בפנים, תישלח האגרת בדואר רגיל

שולח - EXPÉDITEUR

Dr. O. Schnid
c/o Dr. Roman D. de Sora
JERUSALEM ISRAEL.

קפל שני

קפל ארבע

אם יושם משני בפנים, תישלח האגרת בדואר רגיל

Jerusalem, 20.8.62.

Dear Liebermann,

Thank you for letting me see the little illustrated booklet on

" Otto Schneid and Human Art "

which was for me a source of real enjoyment and rather more than that.

It allowed me a glimpse into the creative life of a true humanist.

What a rare specimen of the human race a humanist has become in our days - the days of ~~the~~ dehumanisation of men -. To be a humanist means in fact to be the embodiment of the antithesis of our time of robots.

Our epoch gave birth to the highest technical achievements which were ^{paid} for at a terrible price, the price of splitting men into compact departments without the means of communication of one to the other.

Each and one of these departments does its job to perfection. But at the same time the control of the soul is most efficiently shut off. No mental and no spiritual inhibition hinders the actions of the departmentalised, specialised whole. This is the way men are being degraded to the part of robots in the service of dictators or whoever controls the " apparatus". This is also the way scientists do their highly specialised jobs in the service of the military machine of West and East alike.

What then is the place of the artist in our time? Can the artist be satisfied with l'art pour l'art or else ?

It seems to me, that your friend Schneid dares to give an answer to this eternal problem. He strives to give a creative expression to the central theme of our time. The test of such high endeavour is of course the perfect blending of artistic form, clarity of mind and depth of feeling.

Only truly great men and artists have stood this test.

sincerely yours

Otf. Schneid

TO MRS

Prof. Dr. Otto Schneid

931 Clay Avenue, SCRANTON, PA.
Phone: DI 6-6340

Sept. 9, 1962

M. Paul Murtaugh,
New York City

Dear Mr. Murtaugh :

I am almost sure you don't know paintings and sculptures by my husband, Otto Schneid. If you would have known his works you would have contacted him, for the best of people who appreciate your guidance.

The interest you take in well established artists is quite understandable, though the position of some famous men might be based on overestimating, and could sooner or later collapse.

On the other hand, an artist who is far less known than he objectively deserves to be, might suddenly reach high appreciation; esp. one who opposes the dominating taste of his time. This taste seems to have reached its peak.

So let me introduce to you my husband and his work by a little information enclosed. I could also mail to you the Schneid album published by Alinari, Florence.

The prices of O. S.'s works are still very modest. Whoever buys some of them right now, can never lose a penny. But your intuition and experience will certainly tell you that there is a chance to gain very much.

The originals now available in U.S. are divided into three parts :
One is at present in Los Angeles, another in our home, the third is kept in a warehouse in NYC.

I should be happy to cooperate with you.

Very sincerely

Miriam Schneid
Miriam Schneid

Dear Mrs. Schneid:

We are very interested but
need PRICE RANGES, past & present --
together with "where to buy."

151 WEST 25

NEW YORK 1

PROFILE

PRESS INC.

OREGON

5-1220

March 28, 1962

Prof. Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pa.

Sehr geehrter Herr Schneid:

Da meine Sekretarin seit Wochen krank ist und ich daher meine Korrespondenz selbst schreiben muss, kann ich ebenso gut Deutsch schreiben - mit Entschuldigung, fuer den Fall, dass es etwas rostig ist.

Vielen Dank fuer Ihre Anfrage und Gruesse an Professor Gschwendtner und Frau.

Natuerlich koennen alle Zahlen nur sehr approximative sein. Nehmen Sie fuer Ihre Orientierung an, dass 1000 Kataloge in Groesse $8\frac{1}{2} \times 11$ " mit vier Illustrationen (etwa $6\frac{1}{2} \times 8$ ") 8 Seiten und Umschlag etwa

\$ 200.00

kosten. Dieselben in halber Groesse (die Illustrationen proportional kleiner)

\$ 150.00

Farbige Postkarten sind unserer Erfahrung nach nur billiger, wenn sie in grossen Quantitaeten bestellt werden, etwa 10,000 und mehr. Fragen Sie diesbeueglich bei "Clarisse" 160 East 64 Street, N.Y. 21 an. Sie ist eine sehr netter Wienerin und liefert gute Qualitaet.

Wir selbst koennen im Farbdruck auch viel billiger als die Konkurrenz sein, da wir Klischees von unserem Wiener Betrieb bekommen. Allerdings dauert dies mindestens 5 - 6 Wochen. Die Kosten fuer ein Klischee in Postkarten Groesse sind etwa \$ 140.00 und der Druck in vier Farben erhoeht die Kosten um etwa 60.00.

Schade, dass meine Sekretarin krank ist. Sie ist College Graduate und schreibt Kunstkritiken in Ihrer Freizeit ganz gut. Vielleicht haette Sie Ihren Text schreiben koennen. Die Autoren, die ich kenne sind Professionals und wuerden daher wohl uebliche Honorare verlangen.

Mit bestem Gruss,


Fred E. Siegle

Profile Press



M A N U F A C T U R I N G C O M P A N Y . G R E E N S B U R G , P E N N S Y L V A N I A

October 25, 1962

Professor Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pennsylvania

Have read your letter with a great deal of interest and am of the opinion the product you hope to develop and market can be fabricated at a reasonable cost.

The potential demand is something of which we have no knowledge. However, your being an expert in art, Dr. Schneid, you must see a need to have gone this far in the research of the product.

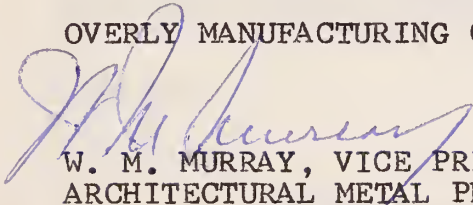
We would like very much to jump on the "band wagon" with you Dr. Schneid. However, it is evident to us that fabricators of stamped metal products are the type of manufacturers you are looking for if you are to produce the item at a competitive price.

Our equipment is adaptable to bending, rolling, etc. If any of our work requires stampings, we subcontract this work. McDowell Manufacturing Company, 301 Stanton Avenue, Pittsburgh 9, Pennsylvania are competent people in producing metal stampings of steel, copper, aluminum and stainless steel.

We trust that Mr. Gordon of Alcoa has contacted you since your last letter. He will be in a position to suggest many more people capable of supplying your requirements.

We appreciate your contacting Overly and trust we may someday have the opportunity to serve you thru our product line.

OVERLY MANUFACTURING COMPANY


W. M. MURRAY, VICE PRESIDENT
ARCHITECTURAL METAL PRODUCTS DIVISION

WMM/paj

Architectural
metal
products
since
1888



M A N U F A C T U R I N G C O M P A N Y · G R E E N S B U R G , P E N N S Y L V A N I A

October 9, 1962

Prof. Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pennsylvania

This will acknowledge your letter of October 4, 1962 in which you ask several questions regarding the casting and anodizing of aluminum products. Our activities, Prof. Schneid, is more in the field of fabricating aluminum sheet products. We do no casting work and though most of our work is anodized, this is performed by people who specialize in this field.

To get the information you desire, I have forwarded your letter to Mr. William Gordon of the Aluminum Company of America at the Pittsburgh home office, whom I feel sure will send an answer directly to you.

The enclosed brochures picture and describe the type of work in which we are engaged. We trust you will find them of interest.

OVERLY MANUFACTURING COMPANY

Kermit C. Griest jml

KERMIT C. GRIEST, SALES MANAGER
ARCHITECTURAL METAL PRODUCTS DIVISION

KCG:jml

Enclosure

CC: William Gordon

Architectural
metal
products
since
1888



Aluminum Company of America

1501 ALCOA BUILDING

Pittsburgh 19, Pa.

November 30, 1962

Professor Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pennsylvania

Dear Sir:

This is in reply to your letter to the Overly Manufacturing Company which has been forwarded to me.

I believe the best way to answer your letter is to take your questions, one at a time, as they appear in your letter.

- A. All forms of aluminum can be anodized--some alloys receive color better than others, however. All casting alloys can be anodized for protective purposes, but the dyeing and brightening processes are restricted to a small range of alloys. Castings that are to be anodized, particularly those to be color anodized, must have a sound or smooth surface. Inattention to this point will result in inferior color shading on the casting. Particular care should be made to inform whoever makes the casting that the surface texture should be as smooth as possible.
- B. Anodizing is designed for exterior use. Anodizing is nothing more than a rapid build-up of the oxide coating under controlled conditions that would form on the metal by a natural process if the metal were left alone. Anodizing is extremely desirable and durable in a rough climate with extreme changes of heat and cold.
- C. The goldest, reddest tone is available but not recommended, however, for an exterior application, since the dies available today are not sun-fast.
- D. The size of any piece of metal to be anodized is limited by the equipment available. The largest tanks commercially available today are approximately 30 feet long, 10 feet deep and 5 feet wide.

To DR. OTTO SCHNEID DATE NOVEMBER 30, 1962 SHEET No. 2

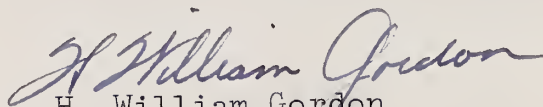
- E. Yes, Alcoa does have a foundry, and we would be very pleased to give you quotes on any drawings that you might submit to us. It is my opinion that any figure as large as you mentioned in your letter would probably have to be cast in several units or sections and fit together.
- F. As just stated, we will not give any figures out without first having prints from you.
- G. No, we do not cast in bronze.

I am enclosing our booklet on anodizing which might be of some value to you, and I would suggest that if you so desire to send any prints to us for quotation, they be directed to Mr. Page Murray in our Philadelphia Sales Office located at 1800 Two Penn Center Plaza, Philadelphia 2, Pennsylvania. I would further like to mention that the licensed anodizer in your area that you might wish to contact direct is Lustrik, Inc. located at 3235 Frankford Avenue, Philadelphia 34, Pennsylvania.

Thank you very much for your inquiry, and I hope that this information is what you desire.

Very truly yours,

ALUMINUM COMPANY OF AMERICA



H. William Gordon,
Assistant Manager,
Non-Residential Building Products
Sales

HWG:gmp

CC: Messrs. N. Page Murray, Philadelphia Sales (Alcoa)
Wake Murray, Overly Manufacturing Co.

J. WALTER THOMPSON COMPANY

420 LEXINGTON AVENUE
NEW YORK 17

September, 62

Dear Professor Schreid,

I cannot adequately express my pleasure at receiving your exquisite album. In the first place, your works of art are works of joy, to possess and to ponder. And secondly, it was most thoughtful of you to remember me after all that time. I was delighted to hear from your wife that your great project is receiving such well merited support and that your children are making such excellent progress.

Rachel Robinson

Once again, I must reiterate
my deep appreciation of your most
valued gift.

With all good wishes to
Mrs. Schind,

Yours sincerely,

Paul A. Schind

Scranton, Feb. 6, 1962

The Mayor Mr. William T. Schmidt,
Scranton, Pa.

Dear Mr. Mayor,

Let me most cordially thank you for your visit in my exhibit.
Your kindness makes me still more like the Friendly City. It was
an encouraging distinction and, I feel, a new beginning of good
success.

Very respectfully yours

Otto Schneid

The Mayor Mr William T. Schmidt,
Scranton, Pa.

Mr. Mayor,

Let me thank you most cordially for your visit in my exhibit.

Your kindness makes me still more like the Fräa

REMOVE BEFORE TYPING • REMOVE BEFORE TYPING • REMOVE
1
April 5, 1962

Dear Miss Shari Stern,

I hasten to thank you for your letter of yesterday and for all the trouble you had the great kindness to take.

You are right, I have to come, to meet a representative of the College, if possible also your art experts, to see the hall and to discuss with you and eventually with your friends different questions, as that of a catalogue, publicity, transport, hanging, sale.

Though a big one man show is being prepared in Hollywood and I participate simultaneously in group shows, our selection still could be very big. To avoid difficulties of shipping I would include only paintings, not sculptures.

So let us decide together about number, sizes and character of the works to be chosen.

I would come Thursday, April 12, about 11 a. m., if I shall not get from you other news in time. But to be on the safe side let me kindly know if this is convenient to you and your phone number, of which I would take advantage after arriving in NYC.

I greet you cordially

Otto Schneid

Scranton, Feb. 6, 1962

Dear Mr. William W. Scranton :

I hasten to thank you most cordially for your letter of Feb. 2 and especially for your generous readiness to visit my exhibit in the Everhart Museum at the opportunity of your coming home.

Please let me kindly know the time, since I am only too strongly interested to welcome you there.

I greet you very respectfully

Otto Schneid

Feb. 23, 1962

Dear Mr. William W. Scranton:

It is too kind of you to apologize; everybody knows how precious your time is, particularly at present.

Though the exhibit will be open until Feb. 28, I don't hope that you would have another opportunity to see it. Therefore, if you kindly want to indemnify me for not having met you this time, I should consider it a high distinction for me to receive you in my home and studio here and to show some of my works to you. Your exterior too would attract me as a potraist. A portait painting would cost you an 8 hours of your time, a portrait bust (that I would have cast in bronze) a little more.

Please don't feel obliged to acknowledge this for mere politeness. But I should be happy at any time to get good news about your visit, with or without the offered portrait.

Very respectfully yours

Otto Schneid

April 10, 1962

Dear Miss Shari Stern :

I have to apologise not only politely, but to ask you cordially to excuse my apparent unfaithfulness to our agreement. It is, however, a sort of vis maior that prevents arranging of our planned exhibit.

The small exhibit that we could show in your College collides, unfortunately, with a big one that has unusual importance for me, and not only for me. It happened that I have suddenly to prepare a comprehensive show of my works in Hollywood. From there a series of exhibitions has to start for all the big cities of the West Coast. This involves, as you well understand, a lot of mainly technical work that has to be done in a hurry, because of a cruel deadline. This big undertaking, managed by a distinguished friend of my art, is supposed to solve several of my and my family's problems, and it is connected with a far more important matter than any exhibit, with that of my Monument to the Six Millions.

You certainly understand that besides the preparations for these directly and indirectly so important exhibits I can now not do anything; to then I have to devote all my energy and I postpone even art work and interrupt a half-ready painting. So I can only ask your pardon and hope for your full understanding.

But I can also indemnify you in some degree by a substitute. Maybe you saw the portfolio of 9 of my paintings and 3 of my sculptures published by Alinari, Florence, with an English-French-Italian text. If you made formal preparations for an exhibit, you could use these 12 plates and display them under glass, on a wall or on tables. I mail this album to you today. Please consider it a personal present. Inside you'll find some additional information about my works.

Very sincerely yours

March 27, 1962

Mr. H. Siegle, NYC

Sehr geehrter Herr Siegle,

Mein Freund Prof. Geschwendtner hat mir erzählt, dass Sie Spezialist in der Herstellung schöner Ausstellungs-Kataloge sind und dass Sie dank dieser Spezialisierung auch Preise berechnen können, die für Künstler erschwinglich sind.

Ich brauche eine Broschüre von der Grösse dieses Briefpapiers, auf gutem Papier, 8 Seiten; wahrscheinlich 3 davon Text, 1 Titelseite, 4 Illustrationen. Der Umschlag ~~ist~~ wäre wohl am besten halbstreif. Den eigentlichen Katalog möchte ich auf einem separaten und eingelegten Blatt haben.

Wissen Sie einen Hersteller farbiger Postkarten von sehr guter Qualität? Ich möchte eine für den Umschlag verwenden, angeklebt.

Teilen Sie mir freundlicherweise Ihre Preise mit, auch den für die Hälfte des genannten Formats.

Können Sie mich auch über die Preise von Postkarten (etwa $5 \times 6\frac{1}{4}$ ") informieren?

Mit bestem Dank ergebenst

Otto Schneid

P.S. Schreiben Sie mir bitte wie es Ihnen bequemer ist, englisch oder deutsch. Der Text ist noch nicht fertig; ich halte nach einem Autor Umschau, der seine Seele nicht dem abstrakten Bluff verschrieben hat.

H. Hollywood, 30.7.62

Meine lieben Freunde!

Ich bitte tausend Mal um Entschuldigung, daß ich euren lieben Brief solange nicht geantwortet habe.

Mein Mann müßte plötzlich eine Reise nach Europa machen, für ein oder zwei Monaten und all diese Vorbereitungen haben uns alle Zeit genommen. Nun ist er weg.

Es wurde hier eine Kommerzialsellschaft organisiert und er wurde ausgewählt für diese Reise, um die Kontakte für Import zu besorgen. Er muß 7 Länder besuchen. Jetzt ist er in Italia. Werden wir hoffen, daß er Erfolg hat!

Und wie geht es Euch? Wann werdet Ihr zu uns übersiedeln?

Wir haben so gute Erinnerungen an Euch beiden!

Yo konnte nicht schreiben. Er hat mich aufbetragt Euch herzlichst zu grüßen. Ich sende Euch auch meine besten Wünsche und küsse

Euch beiden
Eure Lidia

FOLD SIDES OVER AND THEN FOLD BOTTOM UP
MOISTEN FLAP WELL AND APPLY PRESSURE TO SEAL



J. KARPIAK
7711 Tujunga Avenue
N. Hollywood, Calif., USA

Prof. Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, PA.

AÉROGRAMME • PAR AVION

DO NOT USE TAPE OR STICKERS TO SEAL.
NO ENCLOSURES PERMITTED

T - A, 15. III. 62
 S. H. Meckum 29

Lieber H. Naphtali Schneid,

vor mir liegt mal wieder Ihre schöne,
 zuletzt mir nochmals unter dem 12. VII. 61
 übersandte Reproduktion von "Jonah 1959".
 Und fehlt aber von Ihnen noch jedes Wort
 über den Grund u. die Art Ihrer Übersetzung
 bezw. Ihres Einlebens in Amerika. —

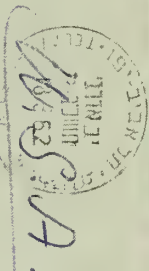
Über uns selbst ist wenig zu berichten. —
 Sie warnten mich vor unserem Wegzug von
 New Os einmal schriftlich vor "dieser eis-
 kalten Stadt Tel-Aviv" u. da an diesem
 Abriß so sehr viel Richtiges ist, muß ich
 häufig an Sie u. natürlich auch Ihre Familie
 denken. Man nimmt "im allgemeinen"
 hier keine Notiz von mir, woran aber selbst-
 verständlich auch meine geringe Teilnahme
 an hebr. Kunst & Literatur etwas schuld ist.
 Das Bewußtsein, einige wenige innige Freunde
 neben der häuslichen Trübsal zu besitzen,
 erleichtert diesen Zustand. —

Ich würde mich sehr freuen, bald mal
 wieder etwas ausführliches über Ihr inneres
 u. externes Leben zu hören.

Mit herzlichen Grüßen,
 auch an Ihre Gattin u. Kinder,
 Ihr

André Meyer

אִגְרַת אוויר
AÉROGRAMME



Exp. Prof. Dr. Schneid

931 Clay Ave
Scranton, Pa.
U.S.A.

דואר אוויר
PAR AVION

קפל שלישי

אם יושם מעטו בפנים, תישלח האיגרת בדואר רגיל

השולח - EXPEDITEUR

H. Meyer, Tel-Aviv (Israel)
Shalom the chairman

קפל שני

1000000000

[illegible]

אז נסים נעשו ביום זה לך. חג פסחא, 14/1 שנה
קום מצותך, פתחתו ומשפט, לא יאמר ומהם של ואלו-
ביום פתחתו, פתחתו ואלו ביום של שנה. אמר פתחתו
ופתחתו פתח=פתח, שכן פתחתו חסד, פתח לאו פתחתו
ופתחתו פתחתו ומהם לא חסד ואלו חסד, פתחתו
זה לא פתחתו פתחתו כל ימי יוסף ומהם זה חסד פתחתו
אז נסים. ואלו!

זייענדיג באמאלט אים

ה'תש"ב
ה'תש"ב

נ. 2. גם אתה שחשתי זוגות פרוציון, כי באש-העור של לזם-
אנצ'לס פגשתי זרוע המעצור של שני מיליון דולר להקמת
אנצ'רס-השקלם אה תה הכרחי. בזה הפולק היו אנצ'רס
השואה והגמ"ע, שכל יצירתם או מוצא אנצ'רס או תכנה?

~~רבעון~~
~~לקרוע בריאות העם~~
~~במחל'ת הסערה~~
נחלת יהודה, א. קריא.

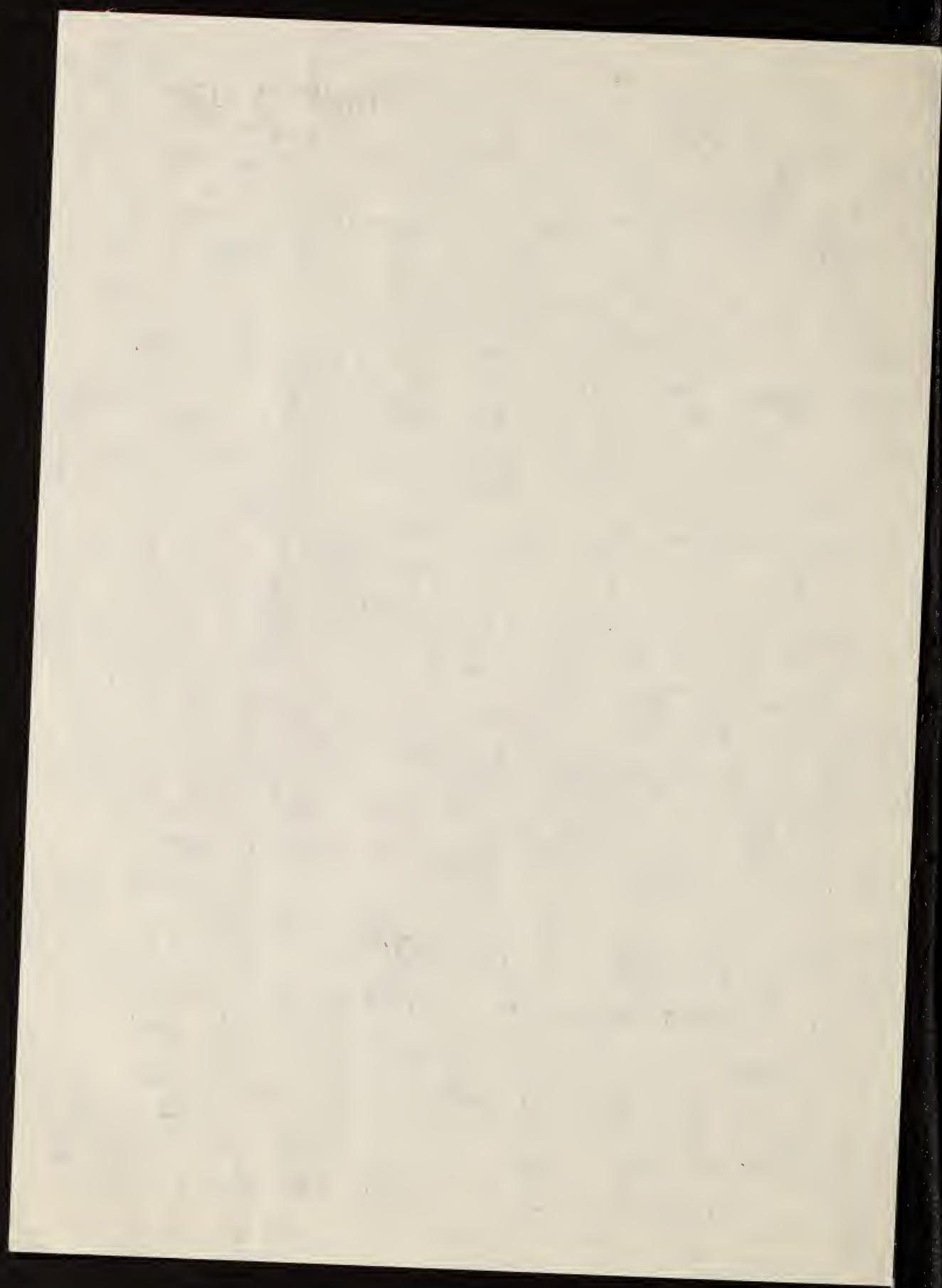
תאריך: פ' בא"ב תשפ"ב
יום נדפסוולט ג' חזיר
ישראל.

'צ'צ' ציגער , פון ר. הלל"צ!

שמותי לקח מכתבך אם הנשואה, שנתנו סוף-סוף גאון מצינו
אחרי כן, שיתבאר לקדם את הפאק הושיע לקראת הושיע
הקדמה. ואין מצינו מצאנום צוהם צוהם, הכי זה בלל.
פנטסט, כפי שאמרנו הפעם בלל. והוא מביא אלמנט מקרה
שנמצאה ממנה למען לך פנל גם למען.

אם לא תהיה סביר לך ותרצה להשיג אל תהיה רוב,
שהוא מאזן לספר לי פירטת מיהו הנסח דה-ס/כא, שכתוב
הנפח ^{בכ"ה} והגדלה כה נהג ללבו. האם הוא EX NOSTRIS
או יאמר המס' ויחול המלם, כיצד מציגו אלא שזה הפירטת
שפירטת להיות באופן מציגו מלם. כן פירטת כלפיך לפעם אלק
עזרה המעלה. יאלץ חוששני שאלו המלם חתם יגד אל המל' דה, שכל
מלם אל כי הפך נהג שפירטת של חוסר פנאי כדור.

בנוסף על הנתונים ידועים, שבדיון מדיניות (מסמך בדיון כחול)
מבואר, ואכן, יום-יום למשל, אותו שלבנו חסרה יפ מדיניות
לקבל את הוועדה. ישנו סעיף שבו "סעיף" תחילה
קנה מעמד החוק סק של 2,500 ל' אשר והשני שהנה
נאלץ לקבל מדיניות שלב, אשר יבצע את המדיניות אוצר ית
כחול. פיסתו מ'פסד' במדיניות' ונתקבלה צד' הפסד. בחינת



23/8-62

Drogi doktore,

Szczęśliwy jestem, że mogę Pana odpiśać i serdecznie
podziękować za pamięć i przestane mi prospekty
wystawowe.

Niestety ostatnio ostatnio niedobrze i w związku
z tym opóźnieniem dłuższy czas zagranicą. Przyjecha-
łem dopiero w ubiegłym tygodniu. Byłem we Włochach
i krajach. Obecnie czuję się już zupeł-
nie dobrze, jestem w pełnej "formie" i rozpocz-
nę swoje normalne zajęcia w Ministerstwie.

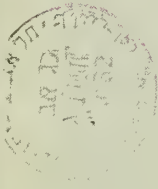
Wciąż to mam niezmiernie Pańskie powodzenie
w dziedzinach malarstwa i rzeźby, a szczególnie
w pierwie swe wystawy urządzał Pan zagranicą,
a nie u nas. Prowincjonalizm w podjęciu do-
zgodnień sztuki i zawieszanie jej, nie
stworzyłby sprzyjającej atmosfery dla urwa-
nia pańskiego talentu. Nie wątpię że urwanie
na światowej arenie sztuki, przyczyni się do dal-
szego rozwoju pańskiego talentu.

Będę naprawdę niezgodny, jeśli wobec Pan-
stwa mam "au courant" pańskich dal-
szych zamiarów i nowych prac. Czym Pan
poświęca więcej czasu malarstwu czy rzeźbie?
Jaki poziom jest sztuki malarstwa nowocze-
snego w Ameryce?

Serdeczne pozdrowienia dla h. Matywiec i
dzieci.

Łechmień i życzę
M. K.

אִגְרַת אוויר
AÉROGRAMME



Dr. V. Schneid

931 Clay St.

Seranton, Pa,

U. S. A

דואר אוויר
PAR AVION

קפל שלישי

אם יושם משהו בפנים, תישלח האיגרת בדואר רגיל

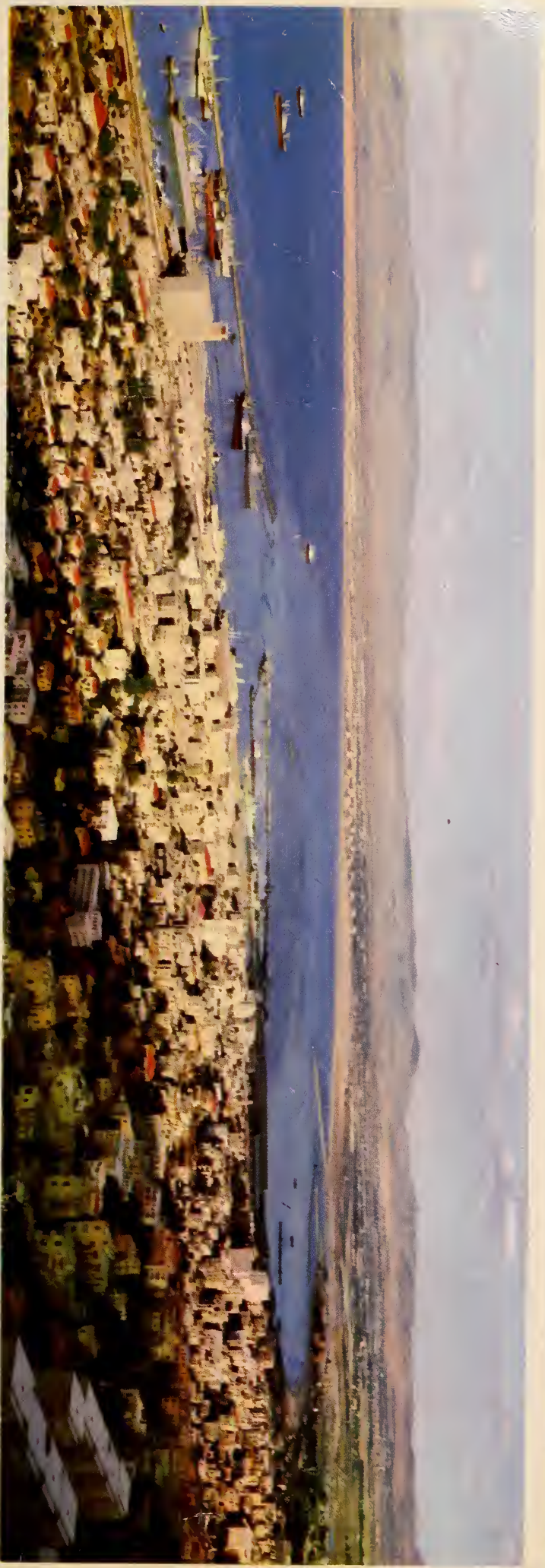
השולח - EXPÉDITEUR

Dr. M. Kon, 108 Rotschild Blvd.

Tel. Aviv, Israel

קפל ראשון

קפל שני



COPYRIGHT BY PALPHOT

HAIFA

חיפה

MADE IN ISRAEL

«גלית» Card

Address

מ-5 מילים - המצריך של דאר מכתמים
המקרי של דברי דפוס ואם נכתבו יותר
PRINTED MATTER RATE MORE THAN
FIVE WORDS - LETTER RATE

Copyright by "Palphot" Herzlia
ל'הצילום "פאלפוט" תל אביב



5143 C

[illegible]



COMMONWEALTH OF PENNSYLVANIA
DEPARTMENT OF PUBLIC INSTRUCTION
MANSFIELD STATE COLLEGE
MANSFIELD, PENNSYLVANIA

October 26, 1962

Dr. Otto Schneid
931 Clay Ave.
Scranton, Penna.

Dear Dr. Schneid:

We arrived with the paintings from Scranton without incident and the exhibition was hung the following day.

Our printer was tied up last week with Homecoming commitments and could not have our catalogs printed until this week. Enclosed you shall find a dozen copies and hope that the layout meets with your approval.

It was a pleasure in meeting and talking with you regarding your paintings. I have scheduled the closing of the show as November 30, and have it insured until December 6, but probably will get it back to you before the 6th, but at this time it is impossible to predict whether the college station wagon will be available.

I shall keep in touch with you, and please let me know if you wish more copies of the catalog.

Sincerely,


Stephen T. Bencetic
Art Director

May 18, 1962

Dr. Roman Prince de Sora,
Hollywood

My wonderful Rommy,

I have your letter of May 15. Thank you . May the future bring me an opportunity to do it not only in words, Amen.

I am awaiting for the printer who will bring a few copies of the β brochure. The two first are for you and E.C.P. Tomorrow a package with a 450 has to go to you. Please give to E.C.P. as much as she wants.

We ordered 3000. How much should I send you else in the next time ?

The invitation will surely also be finished soon after the weekend. We ordered 1000, but we can have at any time more. I can send to you 950 and use myself a 50.

A letter of Joachim Prinz : "I shall be very happy to have Prince de Sora contact me. I shall give him whatever cooperation I can." If he wants he can much; I think you ought to schmieden das Eisen solange es heiss ist.

I sent to you a supplement to Alinari's catalogue; though I am ashamed to be there the only living Stämpfer along with the greatest masters it is a strong Erlebnis, deeply obliging. I dare to dream, however, that the Monument could bring me nearer to the incomparable ones.

At the opportunity of my exhibit Δ in Columbia University an interview dialogue between Rabbi Ritterband and myself was radioed. I have the tape. There are my views on art, on culture, religion, and the projected Monument. I could send it to you if this could complete the other material.

Cordially- devotedly yours

This letter goes alone,
the printer didn't come,
so I send you the brochure tomorrow.

MUSEU de Arte

SÃO PAULO, BRASIL, RUA 7 DE ABRIL N.º 230

São Paulo, dia 24 de novembro 1962

Monsieur Otto Schneid,
Scrabton , PA.

Cher Monsieur,

le directeur du Musée, Mr. P.M. Bardi vient de rentrer d'Europe où il est resté pendant des mois, et me prie de Vous communiquer qu'il a trouvé avec un très grande satisfaction Votre très beau livre de reproductions et Votre lettre postérieure.

Il Vous remercie beaucoup, avec les meilleures compliments,
salutations distinguées,

Augusto Barbosa, ass.

Augusto Barbosa

"Riron-sha"
1-64, Jimbo-cho,
Kanda, Chiyoda-ku
Tokyo

Sep. 11, 1962

Prof. Dr. Otto Schneid,
931 Clay Avenue,
Scranton, Pa.

Dear Sir:

I am receipt of your letter dated 26th Aug. Please excuse me for my long silence again.

A serious disease of the lumbar vertebra put me on my back for two years, therefore it prevented me from the business, and only recently I returned to work.

The Japanese translation of the manuscript of your son Mr. Jacob Schneid will soon be finished (within this month). It will be published as soon as possible, within five or six months.

I am sorry to have kept you waiting so long.
Please give our best regards to Mr. Jacob.

Yours sincerely
Mikio Hara.

ZVI GEZARI
211 CENTRAL PARK WEST
NEW YORK 24, N. Y.

Nov. 16, 1962

Dear Miriam and Otto - 'pide -

We were delighted to receive
your letter and the very nice brochure.
Thanks so much for the check -
We have never worried about the
money being returned. Whenever you
can manage will be alright with us.

As you see from the address, we
have moved back to the city and
are delighted to be near our work
and all the activities that interest us.

The boys are both at Cornell
University and working very hard
at their studies. We are happy
because they are in an excellent
school and are together.

How are your two wonderful
boys? By this time they must feel

very much at home in Scranton.
And how is your teaching, Meriam?
I hope you enjoy it very much.
Otto, I am sure, loves his work and
as long as he has an opportunity to
do it, that is probably all that he
asks for.

What are your plans for the
future? Are you spending more
time here or are you thinking
of returning?

You see, there are many questions.
Let us know how things are with
you. When you come to N.Y., call us.

Lvi joins me in wishing you
a belated של חג and של טוב -

Our love to the children -

As ever,

Meriam

קרית-ימ 16 ספט' 1962

בית לניצח ביקר

לחמתי מאד לקבל את מכתבך ואת מודים לך
בעד פז'ק וללחם אצ"ם לאין אופי חזיונותי דעליו
לא היו לי חלומות כחצט בעצמך.
אחרי לך לאן במלא וחמך ^{בעצמך} סופר יפאן אחד
אלר ער שוקין. ילדתי ללחמאמו לריוחלא ולפז'ק
לעלוג או לעמר את מרגל לל הספר וככס לאפולר בולאמו
במכרה. זה יומר פלוט יוחטל לל זוג בולאפ אחרי
כאלר קראט מחק ללוד כחצט לריוחלא, בקלט את
חצרו לחכות עד לגזיז יפוער חפלא מחק על החלם
בניכחי לל בפבר.

בבקלר לפודיצני באמ קלט בינתיים גלופר ו
מכנה סצ'ה לל עמ כן אמ "ראי לא ענפ פכלל ואת
אסדר את הלאר לל שפלוט. איני יכול לפשט לל מלכו
מחאל אפל נראפ אמ יסכימ ריוחלא ואמ עמ כן חצרו
שוקין ופז'ק מוכן לעצור בפבר בל יקבלא ^{חצרו}
לכר בעד במרגל ולל יומר. לכר סופריו מוכרה
לפא אלוין. פ

לכונסר בריאור, כל טוב ופז'קה ללחם
עמ בעצן במלחמה.

בידידו נאמן

א. ג. ינצ' אולט

פ אמחראילעוו יאלל לחלא
ביג בולאפ אחר אן מוכרה לל
לו מלכו.

איגרת אוויר
AÉROGRAMME



דואר אוויר
PAR AVION

Pa USA

SCRANTON

931 Clay Avenue

Dr. & the Schacht Schneid

קפל שלישי

אם יושם משו בפקים, תישלח האגרת בדואר רגיל

השולח - EXPEDITEUR

D. Sine

Shikun Agad. 278

Kyiv 1 Jan 1978

קפל שני

קפל ראשון



Lieber H. Schmidt.

Mar. 11. 82

Wenn ich die Fabrikten gemacht habe, ein Copie Ihre Briefe
zuschicken, habe ich nur wenige erhalten. Manche haben vollständig
geschrieben, aber ein Copie zu schicken. ~~zum~~ ^{haben} manchen ^{haben} nicht geschickt
haben, so ist die Richtung - Anfang auf Verlang gehen, so ist man
kein Interesse an Export haben, so ist es möglich ist, so ist
Regierung ist die Einführung der ind. Phantasie keine Freiheit für die.

Es ist wirklich da her der phantastisch an
künstlerische Leistung u. subjektiver pers. d. d. Gebundenheit
Bewertung? Schöpfung ist Kommunikation, Unterbreitung,
Verkündung. Nur ein Vermittler redet nicht allein. Man
sitzt nicht nur an der Hand der Zustimmung, man sucht auf
Widerstand und Streit.

Es ist die Frage gestellt worden, ob ein Biot
schon sein kann, wenn es in einer unangenehmen Position
hängt und von keiner Menschenseele gesehen wird.
Es definiert sich selbst als Biot, wenn es von einem
Dunkelstein zu einem Objekt der Frage wird.
Nur wenn es, bestenfalls kann es von einem
potenziell schmutzigen Objekt gesehen werden
hast.

hast.
Durch Brief an Prof. bezieht ein
wesentliche Unterschied. Ein Brief ist ein vollendetes
Werk. Auf dem es jemand etwas sagt, kann es
unter günstigen Umständen ein Kapital anlegen sein.
Es hat und Jahrhunderte seinen Reiz nicht verliert.

alte handschriftliche Rechnungen
sind ein Schatz für allerhand Forschungen
und werden früher oder später von einer gewissen
Hauptsache auf die Mittelmaße kommen.

First future

Leo

איגרת אוויר
AEROGamme

Prof. Dr. Otto Schuer



931 Clay Ave
Scranton Pa
USA.

דואר אוויר
PAR AVION

קפל שלישי

אם יועם משהו בפנים, תישלח האיגרת בדואר רגיל

השולח - EXPEDITEUR

Leopold Goltz
31 Boulevard
Tel Aviv

קפל שני

קפל ראשון

Liebe Beide, 3 & 4 (Ich bin Dir 3, 4 + 4)

Aug., 24, 1962

Eilenden Fusses schreite ich zur Beantwortung Eurer lieben Zeilen vom 14. welche eben eingetroffen sind. BZW. Briefe könnt Ihr sie ruhig bei Winters lassen, was kann schon sooo nebbich important sein ;!;!;? Beim Nachschicken ist die Sicherheit eines unters Eis gehn zu gross (Für Andersgläubige: Unters Eis gehn = Verlustig gehn auf Schwyzerdütsch)

Hier, ungerufen, alles in Ordnung, Arbeit leise überwältigend, Jenny sitzt in Chandri-La, ganz verlassen (da Auto verkauft, und kein Telephon) aber dafür sicher. Ich Abgefetzt und mit schmutzigen Schuhen - alles absichtlich, um eventuelle Räuber von der Witzlosigkeit eines Ueberfalls a priori zu überzeugen - im feindlichen Leben (frei nach Schiller) Da es sich ja nur noch um weniger als 3 Wochen handelt wird datallierter Bericht auf mündlich verschoben. Bis BALD, auf welches sich schon sehr freun

JUAN & JENNY

Liebe Beide bzw. 4re

Caracas, den 6-7-62 (6.Juni 1962)

Seit einer Woche steht Dein Self Portrait "anklagend" auf meinem Schreibtisch und der erste Ruhe(?) Moment wird zur Lebenszeichengebung verwendet. Ein detaille-Bericht wird Euch von Jenny 15. August gegeben werden an welchem Sie wieder bei Euch sein wird, ich treffe dann Anfang September ein. Soweit ist alles hier in Ruhe und Ordnung, nur sehhr viieel Arbeit, aber man bekommt eben nix geschenkt. Wir würden an einem Bericht von L.A. im allgemeinen und von Euch im Besonderen sehr interessiert sein und schlagen tentativ die am Briefumschlag erscheinende Adresse für einen versuchsweisen Briefanknüpfungspunkt vor (Nix gewisses was ma net in Venezuela) Habe ledeiglich die Postkarte aus L.A. erhalten. Wir wohnen in einem begorgten Haus in den Hügeln der weitem Umgebung von Caracas und versuchen erstgarnicht Post dorthien zu leiten.

In Erwartung baldiger Zeilen von Euch

Eure J. & J.

August 6/62

Dear friends

We write you in English, so everybody can read it. According to the last developments, we changed our plans in such a way that we will arrive together September the 13th. Also we are unhappy to be so long away from you, situations requires our stay here. We include a copie of a letter to our landlord, which we send to him by registered mail, but no trusting the ^{Venice} Postoffice we ask you the favor, to go there and give the copie to them personally. Mr. Richard Winters, 738 Monroe Av; and a second favor, will you be so kind and go opposite of you in the Venetian house and ask Mrs. Fiorani if she wants some money, because we rented the appartement from the 15th of August, but we will arrive September 13th - and sending from here is always a question of chance. In the case that she wants some money, could you give her something? Thank you very much for your help, we remain your three friends
Jenny and Hans.

Handwritten text, likely bleed-through from the reverse side of the page. The text is mirrored and mostly illegible due to fading and the quality of the scan. It appears to be a continuous paragraph or a list of notes.

MRS. JONAS B. GOLDMAN
PARK TOWNE PLACE, S-1112
PHILADELPHIA 30, PA.

August 14, 1962

Wendell R. Schaefer

I must apologize for the delay
in which I functioned in
your interest. The last four months of my third
term as President of the Women's Commission
behind me hectic and many of my personal
affairs were shelved and neglected.

I have exhausted every source
I know to show your paintings, but it was of
no avail. I wish the results were otherwise.

I have returned your prints by mail
to-day under insurance for fifty dollars,
and you should receive them in a few days.

If I can serve you thru any other channel
please be free to contact me.

Why don't you write

Mrs. Henry Milch

1025 Fifth Avenue New York 28, N.Y.

And mention my name! Mrs. Milch is a
charming woman on the Board of Education
in New York and is well connected with
people on the lists - Perhaps her contacts
may bear fruit

Wishing you & your family a good
year & with kindest regards, Love

Truly yours

Arthur Goldhamer

Haifa den 26-ten 10. 62.

Unser sehr-sehr lieber, teurer D. Schmid & Familie.

Bitte nicht böse sein auf mich. Als Sie von hier
wegführen, habe ich bitter geweint. Ich würde
jetzt habe ich außer meiner Frau nieman-
den. Jetzt haben wir auch Sie nicht.

Am 23-ten ist Sie von uns gegangen und
haben Sie am 24-ten begraben. Ich kann
es nicht fassen und habe keine Gedanken
mehr. Wir haben sehr viel mitgemacht. Lei-
der konnte ich meiner armen Frau kein
ausgewogenes Leben schenken. Nur immer sehr
periodisch. Glauben Sie mir bitte ich beweine
und bemitleide mich nicht.

Wenn ich mich etwas beruhigt habe, verspreche ich
das ich Ihnen sofort schreiben werde.

Mein Sohn war beim Militär, war Konkist,
und haben uns geprügelt das sein Gehör da-
runter leidet. Bin 1 1/2 Jahre herumgerannt, hatte
viel Arbeit und konnte nichts machen. Dann
hat meine gute arme Frau Herz-Krankheit
bekommen. Man hat Sie ausgeheilt, und
jetzt ist Sie nicht mehr.

Verzeihen Sie mir bitte, das mein Brief so
dau'rig ist, ich weiss es ist nicht gut so
zu schreiben. Ich muss mich zusammen nehmen
und verspreche, alles-alles zu corrigieren. Bin
und werde ewig dankbar sein, das Sie immer so gut
zu uns waren. Würde Ihnen über alles schreiben.

Ihr Verehrer Hans Göthmann

אִגְרַת אוויר
AEROGRAMME

M & MRS.

Prof. Dr. OTTO SCHNEIDER
& FAMILY

דואר אוויר
PAR AVION



931 clay Ave.

SCRANTON Pa.,

U. S. A.

קפל שליש

אם יושם משהו בפנים, תישלח האיגרת בדואר רגיל

השולח - EXPEDITEUR

GOLDMANN P.O.B. 4917

HAIFA, ISRAEL

קפל שני

קפל ראשון



1962/7

היום שלישי כ"ב

היה מודע דעלתי חתך את המעבר
אלו חתך נכדתי רצתי איך צדוק צדקתיה
הח"ם לעלן איך קליה אצל און חת
לפי אשדודי
יל. לאלף סוף באר פופי
הגורם פיסאני לז פסד מאר בקר
לא כבי רצתי קדומו אק בזמן
באחרון און בקר צד סוף פסד
אחר וברא לבי רצתי איל רצתי און חת
לכרס לו בקר פ"מ צד חת און און
~~היה ידע~~ כל טוב לך ותלפזר

פיקר:

לך

א.ל.ל.



ISRAEL

נלוית דואר • CARTE POSTALE

השולח אוסף זיל
לבן אילן 878
קרית-מג' 84100



Dr. Otto Schneid
731 Clay Avenue

Seranton Pa.

USA

149

ט.כ.פ. 2

7-8-62

Liebe Beide

Zur Beantwortung Deiner lieben wenn auch leider nur partiell erbaulichen (Z.B. dass wir im kommenden Jahr doch zusammen sein werden, was uns die Rückkehr nach Sc. sehr bedeitend versüsst - Kein Kompliment, just a statement) Dass sich unser Eintreffen auf den 13. verschiebt, steht in der Beilage. Hier wohnen wir in einem 20 Zimmer-Haus geborgt (Einer der wenigen Vorteile eines Diebslandes, dass die Leute nur von wegen Aufpassen einem ein Haus mit allem Drum und Dran überlassen) 15 Minuten outside of Caracas in den Bergen und nehmen es als einen Ferienersatz. Ich arbeite nach wie vor komme aber schon um 4 nach Hause. Im Moment ist es hier ruhig von ein par kleineren Raubüberfällen täglich was ja schon zum Normalen zählt. Vivere peligerosamente hat der Mussolini gesagt. Da wir das Auto verkauft haben kann die Jenny nur ser gelegentlich aus dem Käfig, was mir wieder eine grosse Beruhigung ist. Ansonst wir alles mündlich überliefert werden..... Bis Bald

Fran & Jenny

Maxwell Goebl
26 Khovavim St.
Tel Aviv

Tel Aviv - 4. August 1962

Lieber Professor Scherer!

Augenblicklich ist der Touristenverkehr in Israel
gestiegen ist. Wir privat haben immer Gäste am Aus (und)
die von uns immer in Hotels wohnen. In jeder zweiten Zeit
in Anspruch nehmen. So von letztem bis uns Gäste aus USA,
England, Brasilien, Australien, Japan kommt in sein aus Belgien.

Meine Arbeit in Ramat ist sehr interessant,
besteht nicht jedoch nicht im Mangel der Erfolge in meiner
literarischen Tätigkeit.

An Dr. Prince in Lira. Ich ist geschickter und
ich antwortet, dass ich verstanden habe dass 14 Frauen
ihre Rechte effektiv einbringen werden, ich habe mich bereit
erklärt auf Hand bei Sieher zu helfen, wenn ich dann
ausdrücklich Bevollmächtigt werde.

Hatte ich ihren Plan aufgeführt & ist mit Familie
nach Californien zu überlegen?

Beste Grüße an die
ganze Familie

1.1

Leopold G O E T Z

Tel Aviv

Choveve Zion 36

20. VII. 1962

Lieber Professor Schneid!

Habe sowohl die Brochüre „On Otto Schneid and Human Art“ sowie Ihren Brief erhalten. Es freut mich aufrichtig über Ihre Erfolge zu lesen. Ich werde Ihnen sehr verbunden sein, wenn Sie mich über Ihre Karriere am Laufenden halten.

Habe auch Ihren geschäftlichen Vorschlag aufmerksam gelesen. Nach meiner bisherigen Exporterfahrung, müssten die von hier exportierenden Firmen direkt mit dem Importeur in Amerika verhandeln, sowohl um Zeit zu sparen, wie auch um alle Einzelheiten der technischen Ausführung, Farben, Grössen, Lieferzeiten und dgl. ohne störende Zwischenhände miteinander zu besprechen. Beim Export hat man in Israel zumeist keinen Gewinn, oder einen derart minimalen, dass ein Exporteur oder Exportagent sehr grosse Transaktionen durchführen muss, um seine Arbeit zu bezahlen. Da es sich in diesem Falle um ein Pioniergeschäft handelt, schlage ich vor, dass der zukünftige Exporteur^{x)} sich direkt mit den Firmen, die in Frage kommen in Verbindung setzt. Ich bin bereit unentgeltlich die in Frage kommenden Firmen anzurufen und zu veranlassen, dass sie an Ihren Freund schreiben, falls Sie mir seine Adresse angeben, eventuell auch Bankreferenzen. Als weitere Exportzweige aus Israel empfehle ich Badkostüme und Regenmäntel.

Mit besten Grüßen

x) das dürfte ein Schreibfehler sein.
Er meint offenbar Importeur.

August 7, 1962

Dear Mrs. Dorothy Gordon :

When I had the privilege to welcome you at my exhibit you expressed friendly interest in my bust "Mother" that you saw only in the album.

Then we hoped to move to LA this fall, but we have to stay here another year.

If we should have moved to your city as soon as we thought we should have brought the bust, and you would have easily decided whether to purchase it or not. Since this can't be done now I send you here a little photograph of the 15 3/4 " high bronze bust. (In the album the plaster cast is reproduced, the final bronze cast had not yet been done then.) The price is 750 \$.

Some artists and critics consider it my best sculpture. I hope you still like it. If you want it I shall take care of good packing and shipping.

With friendliest regards, from my wife too,

most sincerely yours

Otto Schneid

८१

LEOPOLD GOETZ

36, Khowewei Zion Str.

TEL-AVIV, (Israel)

PHONE 23010

2 XI. 62

Lieber Professor Schuer!

Seinerzeit hat eine Karrikatur von George Grosz einen gewissen Eindruck auf mich gemacht. Sie stellt einen Dichter dar, der „über den Ereignissen schwebt“. Der gewissenlose Schriftsteller, offenkundig Stellung nehmen, Propaganda schreiben, auf die Barrikaden steigen, ich gebe dem Dichter recht. Sollte wegen der Welt zugrunde gehen, ist es Pflicht des Künstlers oder Wissenschaftlers, seiner Berufung zu folgen, zu sagen, was er zu sagen hat, zu schaffen, was er befähigt ist.

Für Ihr Interesse an Ihrer freundlichen Anregung, bei mir einen sehr dankbaren. Ich habe ein ausgewähltes Auditorium von Philosophen, Tänzern, die Vorträge halten aus meinen Vorträgen. Die alten Herren sind leider steif und neuen Ideen unzugänglich. Ihre Denkprozesse sind abgeschlossen. Ich betrachte den Zweifel als identisch mit Denken und bin immer bereit, meine Ansicht zu korrigieren und daran zu lernen. Meinen Freunden höre ich nur dasjenige, das auf ihn einen angenehmen Eindruck und verdrängt die Diskussionen auf Nebensache. Trotz dieser Anregung, die ich dankbar empfangen, ist das ganze doch eine Frustration.

Hat Prince Sora sein Unternehmen gegründet?
Wie sieht es mit der von uns erwählten Firmenkontakts aus?

Ihre Appareturen haben sich lebhaft nach Ihnen
umgesehen und lassen Sie wissen, dass
Stellen Sie sich vor? Kommt es Ihnen dabei?
Nach Empfehlung an die für Sie
bestimmte Stelle.

humboldt

2 11 54

LEOPOLD GOETZ

36, Khawweel Zion Str.

(Tel-Aviv, Israel)

PHONE 23010

Dear Mr. Goetz,
I have just received your letter of the 11th of November and am very glad to hear from you. I am well and hope this letter finds you the same. I have been thinking of you very much lately and wondering how you are getting on. I hope you are still in good health and enjoying your work. I have been very busy lately but I will try to write you more often. I have been thinking of you very much lately and wondering how you are getting on. I hope you are still in good health and enjoying your work. I have been very busy lately but I will try to write you more often. I have been thinking of you very much lately and wondering how you are getting on. I hope you are still in good health and enjoying your work. I have been very busy lately but I will try to write you more often.

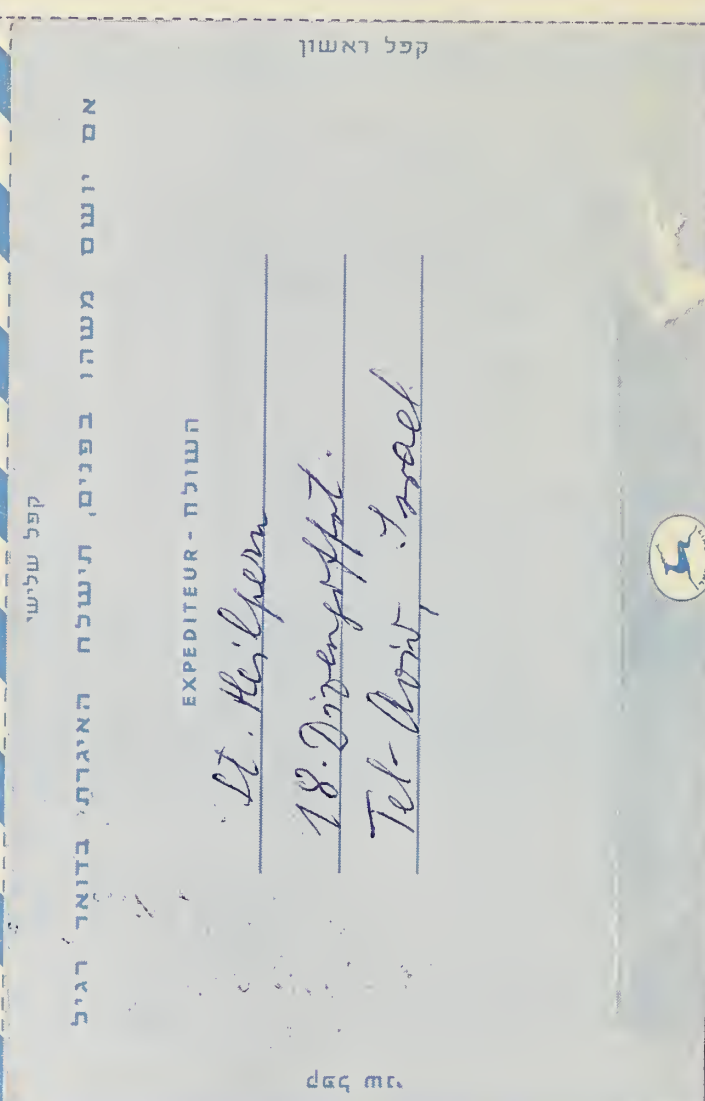
27. X 62

Lieber Freund!

Entschuldigen Sie, bitte, die lange Verzögerung
in Beantwortung Ihres 1. Briefes; leider bin ich derzeit
verrückt, dass ^{ich} keine innere Ruhe habe um mich
zu konzentrieren. Primo will ich Ihnen herzlichst für
Nützlichkeit danken; hoffentlich haben Sie unsere
rechtzeitig erhalten. Secundo: möchte ich Ihnen vom
ganzen Herzen zu Ihrem grossen Erfolg gratulieren. Aus
Ihrem Self-portrait-Karte ersehe ich, dass Ihr Werk
im Palazzo Pitti ausgestellt ist und gekauft würde.
Ich wünsche Ihnen viel Geschwindigkeit, damit Ihre Lie-
bhe schöpferische Tätigkeit lange, lange fortsetze.
Gratulieren Sie auch von uns Ihrer Frau, die Ihnen
sicherlich eine glänzende Hilfe leistet. -

Bei uns, leider schlüpft sich das Leben trübsallos.
Mein Mann ist nicht gesund; hat eine sehr hohe
Kreisläufe; ist auf strenger Diät; trinkt 2 L. Aqua
destill. täglich und "schluckt" Multivitamin, weil
die Diät nicht ausreichend ist. - Ich habe grosse
Sorgen um meinen Bräutigam, Manio; erinnern ^{sich} Sie
an ihn? Er wohnt mit seiner Frau in Buenos-Aires

1. Da der Antisemitismus dort sehr stark ist, flüchten unsere Juden sei es nach Amerika, wenn sie genügend Geld haben, sei es nach Israel. Auch mein Bruder muss auf seine alten Jahre auswandern. Er kommt im April zu uns und wir werden alles mögliche tun um irgendwie ihm behilflich zu sein. Es wird bestimmt sehr schnell



1. Ich bin einen Prosten für ihn zu finden, da es Hebräisch nicht gelernt hat und außerdem ist er über 60 J. Und seine gut situierten Freunde hier, befürchte ich, werden nicht mit dem Finger auf ihn zeigen um ihm zu helfen. Die Sorge um ihn belastet mich sehr; wenn unser geliebtes Lolo leben würde, dann wäre Manis's Situation nicht tragisch - Entschuldigen Sie, dass ich Sie mit meinen Sorgen belästige! Gute Wünsche für Sie alle
von Ihrer Schwester H.

Günste von meinem Mann

Haifa 19. XI. 1962

Mein sehr, sehr lieber und sehr geehrter Herr Dr. Schmitt
und verehrte Familie!

Die grosse Ehre die ich von Dir lieber Herr Dr. Schmid
erhielt nehme ich mit Ehrfurcht an. Aber dessen bin
ich sicher das ich nicht würdig bin so eine grosse Aus-
zeichnung zu bekommen. Ich danke Dir sehr Herr Doc-
tor!

Ich möchte heute - auch wenn es sehr lange dauert über
alles schreiben und bitte um Entschuldigung, das ich
hier, lieber Herr Doctor, lange damit aufhabe. Hatte da-
mals als ich die Nachricht ^{das ich nach Amerika} bekam einen 8 Seiten - langen -
Brief geschrieben, den Ihr, wie ich sehe, nicht bekommen
habt. Es war mir, und ist auch weiter, sehr bitter die
Herr Doctor, an diesem, nicht in meiner Nähe zu wissen.
Denn sonst fühle ich, und hatte auch immer gewünscht, das
Du seelisch in meiner nächsten Nähe bist. Da ich nicht
meinen Freunden schreiben, möchte ich auch von einem, Fa-
milien ^{Freunde}. Damit will ich mich nicht entschuldigen das ich
so lange nicht geschrieben habe. Denn ich bin sehr schrei-
felig, und auch allgemein nicht flüssig.

Mein Sohn ist damals eingewechselt. Er ist Musiker, Hornist.
War in der „Gadnat“-Orchester. Heute & Dirigent.

Der Dirigent von der „Gadnat“ war auch der Dirigent von
Militär-Orchester und hatte ihn - natürlich - also ein-
mal kam sofort angefordert. Wir waren natürlich sehr
glücklich, nicht nur deswegen, das er aus seinem Fachgebiet,
sondern das er auch beim Militär war für einen Katholiken
natürlich ein Gewinn, und viele.

Heute ist schon der 25. 12. und ich habe den Brief noch nicht fertig geschrieben. So als es mit mir. Ich schaffe immer mit „Toslos“, die aber unverständlich sind. Ich habe natürlich deinen zweiten Brief erhalten und habe bitter geweint. Niemand, aber niemand hat mir so geschrieben, niemand hat mit mir so gefühlt wie Du liebst Herr Doctor. Ich danke Dir sehr für die grosse Hilfe, denn was ich brauche ist keine Geld-Hilfe und die andere hast Du mir von Herzen, das fühle ich, mit deiner grossen Seele in edler Feinheit geschenkt! Ich habe hier Verwandte, aber niemand hat mich gefragt ob ich was wünsche, niemand hat mich geschaut. Wenn Du nicht wärest, lieber Herr Doctor, wäre ich ganz allein. Danke Dir aber nicht das ich mich beklage. Ich hatte mich genau kontrolliert. Nun aber will ich den ersten, den angefangen Teil fortsetzen.

Es geschah aber nicht so, mein Gehör kam nicht zum Vorschein. Es würde Töricht. Jetzt soll es sein, das Militär weiss was zu machen und haben Recht gehabt. Aber damals? Zwei Jahre tief ich hinein und es ging nicht. Ich war Major in unser Arme und konnte nichts machen. Über zwei Jahre vergebliche Zeit, Mühe und vernachlässigte Arbeit! Kein Tag und keine Nacht. Wir hatten befürchtet das sein Gehör darunter leidet. Seinen Gehör hat es bestimmt nicht gemindert, aber er hat seine Hand gestellt und

3.

Sehr oft bin ich stolz. Er hat sich nicht gedreht
oft hatten Sie die Kräfte beinahe verlassen, aber
er hat sich immer bemüht und hat immer seine Pflicht
getan. Er ist und wird immer ein Treue-Mensch
sein. Wenn er nicht bei mir und mit mir gewesen
wäre, wüsste ich nicht wie ich mein Leben überstanden
hätte. Lieber Herr Doctor sei mir bitte nicht böse
ich habe Sie aus, denn ich habe mich viel und
sp. 1880 mit Sie wie wenn Sie mich mir sitzen
würdest. Und dann ist auch meine Tochter die
Sohna eingewickelt. Meine gute feine Palma. Gestern
hat sie nicht, von gestern ist keine Rede, sie ist
ein kleines Mädchen, aber fein, edel und sehr gut.
Als meine gute Frau krank wurde, hatte sie sich
aufgeopfert und widmete sich ganz der Mutter.

Vor 10 Monaten wurde meine geliebte Frau krank.
Hervorbrach! Dieser gute Dr. Werner hat sie behan-
delt, hier in der Stadt, denn die wollte nicht ins Hospital.
Aber der Arzt glaubte die konnte nicht, denn die
war so kalt und kalt in Deine Palma. Aber Dr.
Werner behandelte Sie nicht nur mit Trost, son-
dern mit Güte denn er ist hauptsächlich ein
Mensch. Er war täglich 4-5 mal bei uns. Er
trug von der Haupt-Familie! Wenn er schlief war
erwändig gehalten hatte war er sogar öfter. Oft hatte
er meine Frau nichtmal untersucht. Hatte mit Sie
zusammen. Wenn er kam war alles in Ordnung,
meine gute Frau hat sich schon besser gefühlt.

43

Zwei Monate lag Sie und als Sie aufgestanden ist war alles, aber alles in Ordnung. Arbeiten - natürlich - wie früher durfte Sie nicht, aber Dr. Werner ist nicht nur stark und hatte dafür Verständnis, ja sogar er war dafür das meine arme beschäftigt sein soll. So ging Sie täglich mit einem kleinen Jungen spazieren. Die Leute wo sie arbeitete sind Millionäre, aber nur Millionäre und nichts sonst. Beschleunigt mit all's Geld.

Aber jetzt, vorgestern waren es zwei Monate das sie stark. Dr. Werner ging auf Urlaub. Sie hatte nur erst Kopfschmerzen was sie nie hatte. Dann bekam sie Fieber. Wir waren beim Arzt und schon 2 Tage waren bei uns. Am Abend hatte sie nicht Fieber! Am nächsten Tag war ihr Blutdruck normal. Als der Arzt kam in der Nacht ist ihr Blutdruck auf 65 herunter. Sie hatte noch mit einem andern Arzt gesprochen der sie auch eine ähnliche Zeit in der Nacht untersucht. Ein guter Bekannter. Er sagte es ist besser im Hospital. Ich kann Dr. Werner nicht auf Urlaub gewesen sein! So war das also letzter Tag, sie hatte keine Schmerzen, und fühlte sich nicht schlecht. Ich Dr. Schmidt war nicht guter Dr. Schmidt! Was im Hospital war das ist grässlich! Sie hatte 20 bis 30. Ich war eine Jahre Mediziner, also ich studierte, war das immer. Heute weiß ich es sind kann 10% tödliche

5.)

Alle. Man hat die 3 Tage kaum behandelt. Ich
mit dem Arzt gesprochen hatte, hatte er mich aus-
gesehen und sagte, wie die die Behandlung hat, das soll
ich nicht verlassen. Täglich suchte ich den Dr. Wimmer.
Meine Mutter, seine hat ihm gewünscht und wollte
nicht im Hospital bleiben. Ich Dr. Schmidt ich habe
mit der die mit der die. Sie hat hatte. "Halt - halt!"
sagte! Ich bin schuld, das ich die verordnet nicht
ausgeführt hatte. Ich kann nicht. Mein guter
Dr. Doctor Schmidt ich sage dir, was ich meinan-
den, müssen müssen Sohn sagte. Sie war 5 Tage im
Hospital, die letzten zwei Tage war die verabschiedet
wenn die. Sie hat hatte. Man hat die mit Medicamenten
versorgt, die die nicht geholfen haben. Man glaubte
da die im Hospital verbleibende Sachen sagte das die
nicht - konnte ist. Man hat den Psychologen ge-
sagt. Ich hatte mit ihm gesprochen und er hat mich
nicht im Leben unterstützt. Er sagte mir, das es ist
alles von Liebe. Die anderen Kinder nicht. Ich
meine Mutter Dr. Schmidt, es ist unbeschreiblich. Meine
gute, gute Frau wird die unsern Sohn lieben. Er wird
alles für die. Unsere gute, gute Anna. Am letzten
Tag war ich bei 5 Uhr bei der. Dann kam meine
Tochter. Ich sah die das, die fühlte sich wohl. Die
die Anna war bei der im der letzten Stunde. Die
Mutter hatte kein Atem bekommen, die. Anna wacht!
in der letzten. Die die kann sind dann der Arzt war
da nicht mehr am Leben. Eine Embolie, was man

6, voraus sehen müsste, und dagegen arbeiten.

Die Eltern teilnahmen nicht, ich fuhr sofort. Niemand war da, niemand. Ich ging um Her, nahm die in meine Arme. Ich küsste sie und küsste die malerischen. Im Schrein, mein guter einziger I. Schmidt ich fühle sie noch immer. Ich wollte nicht glauben das sie nicht mehr lebt. Sie war noch warm, ich fühle sie noch getötet und werde sie immer fühlen. Sie ist meine einzige gute, gute Frau. Ich rufe sie noch immer. Als ich den Brief bekam, lief ich nach Hause und wollte ihr sagen, das wir einen Brief von der Schwester bekommen. Und dann. Es war noch nicht. Ich wartete. Niemand. Meine Väter gingen vorher noch nach Hause, das die Eltern nicht alleine ist. Mein Sohn ist ein wunderbarer Tag nach. Ich habe es erfahren. Ich war bei meiner Frau 3-4 mal, wenn hat mich nicht mehr hergelassen. Niemand kam mit mir. Ich ging so alleine. Wie weiß ich nicht davon! Mein Kopf brüllte und füllte den Raum, die Tränen, die Tränen. Meine große Tochter die ich noch glücklich. Ich habe nicht zu der Seite meiner Frau. Sie lebt im Himmel. Sie war krank, konnte nicht kommen. Ein jüngerer Cousin von mir (22 Jahre alt) kam nicht, wurde angehalten krank. Die Töchter, Verwandte, sind alle heute noch wollen sie nicht stören. Mein Vater kam in der Nacht. Mein Bruder, guter guter Sohn, I. Schmidt, mein edler guter, es ist so, so, so, es kann nicht sein, es darf nicht sein. Ich rufe meine Frau

Ich hoffe die noch immer. Alles ist hier. Der Herr
von, Alles alles. Die hat für Alles gesorgt, für mich
auch für dich nicht. Dr. Schmidt, mein armer Mann
sein. Es ist einfach! Als die der stützt im Hospital
unterwandte habe ich der von Kopf der Schiene ge-
braucht, das habe ich hier. Eine ausgebreitete Platte
die die Tagelagerung des Kopfes und der Brust.
Mein guter Dr. Schmidt soll kommen nicht, sei mir bitte
nicht böse. So alles-alles habe ich niemandem ge-
sagt. Vielleicht störe ich dich, entschuldige bitte!

Ich kann wirklich nicht weiter.

Wie wir leben. Die Mutter meine Frau von hier.
Durchreise nach Jerusalem und ich soll zum Hausarzt
wird alle so glücklich wie vorher. Was hatte die auch
aufgenommen sollte darauf das alle so sein soll wie vor-
her. Die hat alle in Ordnung gefunden. Neben kommt
ich nicht mit der. Das heißt ich habe mit der gespro-
chen, aber das kann ich mit niemandem. Mit der mit
meinem Mann, mit der Mutter und natürlich mit der
Tochter meines Bruders die ich sehr lieb habe. Aber die
ist im Stille. Und ich will auch selber nicht mehr mit
niemandem. Will allein sein mit meinem Mann. Denn
die lebt, die lebt im Stille.

Ich habe viel zu tun. Kann jetzt noch nicht weiter
so wird die nach, so wird, dass die heute leben können
tun. Ich muss mich zusammennehmen und mich
schützen. In einer Privatklinik gut nicht ich will.
Denn die gerade und glücklich.

Es wird sehr sehr sehr I octat, glaube mir mein
guter es wird sehr gehen.

Meine kleine Tochter die Berggottin steht in die Balise.
Ist ein schwachblauer bewährter Menschlein mit zehn
Tönen. Die kleine ist goldig, süß, was macht alle
Kühnheit. Aber kein kommt am Meeresufer immer
nach Hause. Ich bin nicht allein, habe meine guten
Kinder. Aber doch es fehlt mir, es fehlt mir alles.
Aber ich will nicht wieder empfangen. Bei mir ist
es so.

Mein guter Dr. Schmidt, der Hof Meierberg hat
mich ungemein als Du ihm geschrieben hast. Das
habe ich nicht verstanden ^{das ist viel zu viel} ~~das ist zu viel~~ ^{das ist zu viel} ~~das ist zu viel~~
nicht, ich muss ihm danken. Ich muss aber nicht
das nicht kann.

Lieber Herr Dr. Schmidt, ich wollte dir noch vieles,
vielleicht schreiben, aber heute kann ich nicht mehr.
Schreibe mir bitte wenn du Zeit hast. Ich werde
dir schreiben auch wenn ich keine Lust
bekomme.

Ich wünsche noch alles Gute dem Kinde und
dem neuen Jahr. Meine Handküsse an deine
Mutter, grüße an die besten Kinder!

Dich umarmt in Liebe und Hoffnung dein
Karl.

V. B. Wächtersende ich bin ganz lieblich von dem




 חופה - מראה כללי
 עיר נמל גדולה עיר קדושה לדת הבתאית
 מרכז תעשייתי גורר
 HAIFA - GENERAL VIEW
 5969
 AN IMPORTANT PORT, A BIG INDUSTRIAL CENTRE
 HAIFA, ISRAEL

FA. U.S.A.

Sept. 2, 1962

Drogi Panie A. B.,

dziękuje serdecznie za miły list z 17go lipca, który nadszedł 3 dni temu. Już dawno sam wydawca posłał Panu książkę o historii reklamy, a ja już Pana o tem zawiadomilem. Oprócz tej przesyłki z Nowego Yorku wysłał do Pana wydawca Alinari z Florencji album moich prac bez tekstu, a ja Panu posłałem tekst. Spodziewam się, że w międzyczasie wszystko nadeszło.

Jestem bardzo ucieszony wiadomością, że mogliście spędzić piękny czas w okolicach przepięknych Zakopanego. Pamiętam spania i gorąco kocham Tatry. To Pan świeża siła wrócił do swojej pracy, która pewnie będzie miała nowe bogate wyniki. Cieszę się, że pisma Pana powinny być być przetłumaczone też w inne języki.

Moje powodzenie może Pan mylnie oceniać. Ja pozwalam sobie sądzić, że należy mi o wiele więcej. Jednak ma to znaczenie dość wysokie, jeżeli się bierze w rachubę warunki: Panująca abstrakcja którą wszystkimi środkami czynnika wszystkie pozycje. Moja sztuka nazywana akademicka, a może sami wiedzą, że nie ma opinii dalszej od prawdy. Nie brak też krytyków kompetentnych i szczerych, którzy uznają siłę należącą do Jutra, ludzie których widzenie i wiedzenie obowiązują. Ale tacy jeszcze nie mają wpływu; czasem nawet piszą artykuły slične, których się nie drukuje. A może dobre zmiany są en route. Moja sztuka ma kilka przyjaciół o wysokim poziomie, i od czasu do czasu otrzymuje encouragement od ludzi których nie znam.

Narazieśle Panu krótki tekst o moich nowych eksperymentach malarskich i 8 ilustracji, 1 kopie kliszy i 7 fotografii. Jeżeli Pan sobie życzy większe i lepsze, mogę Panu posłać.

Najnowsza moja praca to tetraptyk, który malowałem na grubych tablicach mazonitowych, każda 82x122 cm, "Cztery Elementy". Chyba Pan nie przypuszcza, że namalowałem jakąś tanja alegorję. Pragnęłam osiągnąć istotę rzeczy, a tak zbliżyłem się do abstrakcji co do wrażenia które wywołą, ale nie w znaczeniu; to zbliżenie się może być. Może będę mógł posłać Panu reprodukcje kolorowe. Otrzymałem zaproszenia na one man show od Mansfield State College i od University of California, Berkeley.

Dec. 24, 1962

Mr. Nathan Spector, Chairman,
The Jewish Culture and Art Committee,
Bureau of Jewish Education,
Cincinnati, Ohio

Dear Mr. Spector :

I acknowledge gratefully your kind invitation of Dec. 20
and accept your conditions. I feel this exhibit will be in very good hands.

Later on, I shall have the pleasure to contact you about some technical
questions.

I shall be glad to pay the commission of 10 % not only on the sales of
the works exhibited, but also on portraits, garden sculptures, murals and
any other art work I would do in Cincinnati in direct or indirect connection
with the exhibit.

To Dr. Zalesky I write separately and ask you kindly to forward the
enclosed letter to him.

Very sincerely yours

Otto Schneid

20. Nov. 1962

Lieber Dr. Berkowicz,

hoffentlich haben Sie uns noch nicht ganz vergessen. Seit wir in Ramot Remez Ihre Patienten und vielleicht ganz gute Nachbarn waren, sind immerhin ein paar Jahre vergangen. Ich war dann von der theoretischen Arbeit ueber Kunst und teilweiser Arbeit als Bildhauer und Maler ganz zur Kunst uebergegangen. Seit 1960 sind wir hier im Israel-American Teachers Exchange. Ich hatte in Italien und hier einige Ausstellungen meiner Arbeiten. Wir bleiben wahrscheinlich noch bis zum Ende dieses Schuljahres hier.

Ich habe eine Bitte an Sie; doch erlauben Sie mir im voraus zu bemerken, dass ich Ihre Zeit und Muehe nicht umsonst in Anspruch nehmen will. Vielleicht geben Sie mir auch Gelegenheit; hier fuer Sie irgen etwas zu erledigen.

Fuer das geraubte Eigentum meiner in Auschwitz ermordeten Angehoerigen und fuer meine eigene geraubte Habe haben die Erben der Moerder jede Entschaedigung verweigert. Hingegen hat mir mein Advokat mitgeteilt, dass ich fuer Krankheiten entschaedigt werden wuerde, wenn diese die Folge meiner Auswanderung von Polen nach Israel, resp. Palaestina, waren und wenn ich Bestaetigungen vorlegen kann. Das trifft nun wirklich zu.

Bald nach meiner Einwanderung (1939) lebte ich in Bedingungen extremer Unterernaehrung und dauernder Sorge und Nervositaet, abgesehen vom Wechsel des Klimas. 1940 trat ulcus duod. auf. Ich wurde in der Kupath Cholim Tel-Aviv behandelt, ohne Erfolg. 1942 ging ich nach Jerusalem und kam sofort in die K. Ch. zu Dr. Margalioth. In seiner Behandlung blieb ich bis 1947. Nach kuerzeren Zwischenstationen uebersiedelte ich mit der inzwischen gegruendeten Familie nach Haifa. Noch vor der Uebersiedlung hatten sich zum ulcus 2 Krankheiten gesellt, dermatophytosis und Herz-Anfaelle, die verschieden definiert wurden. Das Ekzem wurde bis 1950 intensiv behandelt. In der K. Ch. Haifa von Dr. Gur, privat von Dr. Gil und einem Jeken, den ich aus der K. Ch. kannte, an dessen Namen ich mich aber nicht erinnere; ich fuhr ach wiederholt zu Dr. Katzenellenbogen nach Jerusalem. Intern war ich in Haifa erst bei einigen mir nicht

erinnerlichen Aerzten, 1950 - 1956 (?) in Ihrer Behandlung. In dieser Zeit//
trat eine Besserung auf allen Gebieten ein, dank Ihrer Behandlung, wahrscheinlich
aber auch von vegetarischer Ernahrung guenstig beeinflusst. Verschwunden ist nur
das Ekzem. Mit dem ulcus bin ich nur zu einem guten modus vivendi gelangt, aber er
existiert noch; auch das Herz macht sich noch relativ oft bemerkbar, die Anfaelle
sind aber viel ertraeglicher. (1957-60 war ich zuweilen bei Dr. Lichtenbaum.)

Wenn ich an die K. Ch. schriebe, wuerde ich wahrscheinlich nur eine sehr
unzulaengliche Bestaetigung bekommen, vielleicht auch nichts. So wende ich mich an Sie,
da Sie teils die Belege leicht bekommen koennen, teils auch sich wohl noch selbst
erinnern.

Meine Frau unterrichtet an einer juedischen Schule, die Kinder lernen
intensiv. Wir gruessen Sie und Ihre Frau und Tochter, die wohl schon fast erwachsen ist.

Die noetigen Bestaetigungen brauche ich deutsch oder englisch. Wenn sie nicht
anders als hebraeisch gegeben werden, koennte ich sie uebersetzen und den Text notariell
bestaetigen lassen. Fuer die erbetene Hilfe werde ich Ihnen sehr dankbar sein.

Ihr ergebener

Nov. 8, 1962

American Federation of Arts,
New York City

Dear Sirs :

A year ago I called on Miss Ann Robin and tried to interest AFA in the of my husband Otto Schneid. I showed to her an album of paintings and sculptures published by Alinari, and she reacted friendly. It was felt, however, that the time did not yet come and the mutual distance was still too big.

Since you and other leading institutes abandoned exclusive promoting of abstract art, I feel I should introduce to you the new phases of the oeuvre of O.S. The booklet I enclose, printed at the opportunity of a recent exhibit in Hollywood, doesn't represent his newest works. Those are not only different; you would

(p.t.o.)

find yourself that they have no precedent. I believe
that you ought to present them to the public.

At the next opportunity it would be my pleasure
to call on you again.

Very sincerely

Miriam Schneid

• REMOVE BEFORE TYPING • REMOVE BEFORE TYPING • REMOVE BEFORE TYPING •

Oct. 29, 1962

Mr. St. T. Bencetic,
Mansfield State College

Dear Mr. Bencetic :

Thank you for your kind letter of Oct. 26 and the catalogues.
They are nice, though I hoped for an original text. Maybe there is still
an opportunity to do it ? If you have for me more copies, send them please.
What's about a sale ? Could you not interest the competent men of the
College itself to acquire something for this institute ?

Did you anyway use the theoretical text that belongs to some of the
paintings ? Did you display the album ? If somebody wants to have one,
I could order single plates (\$ 5) or complete albums (\$ 25).

If reviews will appear, please send me copies, too.

It is a pleasure to learn that you will keep in touch with me.

Sincerely yours

Otto Schneid

Scranton, Oct. 29, 1962

Mr. Joseph L. Carrigg,
Adm. Ass. to Mr. W.W. Scranton, M.C.,
Washington, D.C.

Dear Mr. Carrigg : I got the copy of Mr. Scranton's generous letter
written to Mr Esperdy.

Let me express feelings of most sincere gratitude towards Mr. Scranton
and yourself.

Of course, I shall have the honor of keeping you informed.

Very sincerely yours

Otto Schneid

Dec. 4, 1962

Moj drogi Panie Topi :

Mam nadzieje, ze Pan z droga Malzonka zdowi i ze interes cokolwiek zadawala.

Poniewaz od p. Romana nie otrzymuje odpowiedzi, jestem zmuszony fatygowac Pana w moich, wzgl. w spolnych sprawach.

Co Pan mysli o wyslaniu powrotem moich prac, a mianowicie obrazow ktore byly wystawione i tych dwoch, ktorych poslalem po wystawie, i rysunkow ? To, jednak, b. wazne, ale mniej spieszny niz kilka innych spraw: albumy; katalogi wydawcy Alinari; 2 albumy fotografii moich prac; ksiazka niebieska "American Art Guide" (?), ktora sie znajduje u p. Romana, i przede wszystkim moje rekopisy dramatyczne, ktorych przed wyjazdem doreczylem p. Romanowi; jak i inne materialy ktore Wam juz nie sa potrzebne.

Tu dowiedzieliśmy sie, ze najtanszy transport to - samolotem. Moze sie jeszcze znajduja u Pana te pudla w ktorych wyslalismy (niestety) te dwa obrazy celem sprzedania ich pani Coe? Ta sama firma ktora nam to pakowala i przelala moglaby i wyslac obrazy spowrotem. W kazdym razie chcialbym wiedziec Panska opinie w tej kwestji.

Te drobne materialy (ktorych b. bym chcial miec wnet) moze wejda do jednej paczki pocztowej. Moze uprzejmy Panski urzednik (Watson?) wezmie na siebie fatyge pakowania ? W kazdym razie prosze Pana o laskawe zawiadomienie mnie o wszystkich kosztach, insurance included.

Dzis nadszedl list niedzgentlmski od B.B.Record, w ktorem ignoruja moj list, w ktorym uprzejmie wyjasnilam sprawe w owczasie. Lacze kopje mojej odpowiedzi. Co Pan mysli ?

Najserdecznie pozdrawiam, w imieniu zony i w wlasnem,
droga Malzonke i Pana

Otto Schneid

July 6, 1952

Tres cher ami Arthur Secunda,

Nos intentions ⁿont toujours ete assez bonnes. Je voulais vous ecrire immediatement apres notre arrivee. Mais la situation que nous avons trouvee en arrivant etait tres compliquee : On ne laisse pas Miriam partir, bien qu'elle declare de le vouloir. Si cela dependra de nous, nous demenagerons, car a L. A. l'horizon est plus clair l'horizon humain et l'artistique. Et vous y etes une lumiere tres forte. Il est bon de savoir qu'il y a des gens comme vous.

Si-joint vous trouvez deux fotos, de "Jonah" et de "La Cave". Celle-ci complete a votre connaissance de mes travaux.

Nos meilleurs sentiments a Gladys.

Je vous salue, Arthur,

votre reconnaissant

April 8, 1962

Mrs Anne Peshkin,
National Director, Womens Division,
Am. Friends of Hebrew University,
NYC

Dear Mrs. Peshkin :

As I promised I send you enclosed some information about my work
and myself.

Tomorrow Monday the Schneid album published by Alinari will also be
mailed to you. I would suggest to display it too, its single plates
matted or unmatted under glass, on a wall or on tables. The originals
reproduced there are partly in NYC. The album itself can also be sold,
for \$ 25, single plates for \$ 5; a third can be deducted for AFHU.

Please give kindly my regards to Mrs. Goodman.

With best wishes for full success

sincer ly yours

Otto Schneid

MOVE BEFORE TYPING • REMOVE BEFORE TYPING • REMOVE BEFORE

Feb. 14, 1962

Mr. Otto Wittmann, Director,
Toledo Museum of Art

Dear Dr. Wittmann,

Hoping my name is not quite unknown to you I have the honor of introducing myself to you by the catalogue and the other information enclosed.

I could send you also the Alinari album of my paintings and sculptures, but a little later, because at present I possess only one copy.

I would consider it a high distinction if you would invite me for an exhibit or if you would take interest in one of my works.

Very respectfully yours

Otto Schneid

Dear Ted,

Jan.12,1962

Thank you so much for your letter~~s~~ of Jan.9.

I am especially glad about the prospect for the exhibits at the Brooklyn and Hunter Colleges. If this is more than a prospect ~~I~~ I would welcome an agreement with pleasure. It would be useful from several points of view if the dates could be fixed soon. As soon as you can let me kindly know some details : Do the conditions there allow to exhibit some sculptures too or only paintings ? Are large paintings suitable or only small and middle sizes ?

Next or after-next Friday the curator of the Everhart Museum in Scranton will give us a ride to NY to pick up sculptures and some paintings for my exhibit at this museum. At this opportunity we must do our best to settle the question of a storing place. Of course, we shall try to take advantage of your kindness and come to see the friendly offered room in the basement. If the temperature is not too high and in some measure constant, and ~~not~~ if the air is not too dry, and after all, if the place can be locked - it could be fine. But with all these questions I can't trouble you.

Our loves to your family. With cordial thanks yours

Otto Schneid

Feb. 18, 1962

Mr. Robin T. Tait, Secretary,
The National Arts Club,
New York City

Dear Mr. Tait,

Hoping my name is not quite unknown to you
I would like to introduce to you my work and myself
by the short information enclosed.

I should gratefully appreciate any interest on your
part in cooperation with me.

At present I possess only one Allinari album of my works.
As soon as I shall get other copies I would be very glad
to send you one.

Respectfully yours

Otto Schneid

Jan. 19, 1962

Jan. 19, 1962

Dept. W,
G. P. Putnam's Sons,
New York City

Dear Sirs,

May only a finished book be submitted to you ?

Or could in principle an agreement be made about a work
planned or being written ?

Very sincerely

Otto Schneid

Feb.14,1962

Mr. Thomas C. Wallace, Editor,
G. P. Putnam's Sons,
New York City

Dear Mr. Wallace,

Your friendly answer of Jan. 30 on my inquiry of Jan.19 encourages and obliges me to give you a short and faithful description of what I could submit to you. I mean works of myself, of my wife and of our elder son.

1)About myself you find here enclosed a quotation from "Who is Who in Israel" that shows to you that my activities are composed of literary, artistic and scientific ones. I write mainly in Hebrew and German. The most of what I could offer to you would have to be translated. My own suggestions refer to a) a book of poems and dramas, b) a booklet of short stories, c)and d) two projects of novels.

a) A few of my poems and five dramatic works are translated into English, though the translations of the poems are far from being adequate. to my knowledge, a book combining the two elements does not yet exist. Would you in principle take it into consideration ?

b) About my short stories let me quote the opinion of a prominent Israeli critic who is my personal enemy : "In all the world literature is nothing similar to them." Of some ones I could send you English versions.

c) The first of the two novels mentioned I began to write

in Hebrew. After taking care of a good translation I could submit to you a 50 pages. It is an educational and psychological tale; it begins some years before World War II and ends after it, reflecting historical reality of both Israel and Europe. It is mainly the story of a youth who was unwanted before his birth and in his childhood, that of the resulting problems and sufferings, and of his creative liberation by love.

d) I believe that to our poor generation a new utopic novel ~~sh~~ should be given, based on our longing for Existence and Security and for an end of the tremendous conflicts between the spiritual, political and economical powers (that are also conflicts within numberless individuals). In Utopia nothing is forbidden, nothing is ridiculous, nothing impossible: The Christian churches would end their struggle and merge. This united Christendom and Judaism would revise their messianic formulas and resurge as one. Some ideas in the Islam would allow to it to join the great Messianic Concept. Monotheistic elements and both ethical and messianic teachings in Hinduism, Buddhism and other eastern religions would also lead them into the divine fraternity of humans. Finally, between the Free World and Communism a bridge of reconciliation would be built and a syncretistic social system developed, to change Hatred into Love and to initiate its eternal rule.

The central plot of this novel is the story of an American who acts as a spy in Russia and a Russian girl student who both hates and loves him. It has a meaningful Happy End.

I did not yet start writing the text. I would do it in my poor English, for later improvement.

2) My wife, Miriam Schneid, winner of the First Prize of Poetry of the Israel Association of Authors and Composers, Tel-Aviv 1957, wrote two novels. The recent one, not yet published, is "Song of Mothers". She wrote it also in Hebrew, but would prefer to publish it first in English. Its idea is that of a cooperation of all the mothers of the world for avoiding War. The tale begins in Israel too, at the eve of the Jewish-Arabian war. Life, love, sufferings and death are seen with purely human eyes, Jewish and Arabian men, women and children are equally treated. At the conclusion of the realistically developed rich plot, in Europe, an eerie question mark rises.

3) Our son Jacob, now 15, wrote at the age of 10 a book on Greece where he had traveled. One of the leading Hebrew publishers made of it two volumes, "Hallo Greece" and "In Greece and Back Home", that were, in the circumstances of that small country, unusually successful. I don't suggest to publish this book in English, because meantime Jacob reached a higher step :

a) He finished a relatively short novel, "The Camel Market". In its plot it is rather a book for teen agers : He tells about his being kidnapped from his living place near Haifa to a camp of brigants in the southern desert, and his life there until his liberation. On the other hand, descriptive and lyrical parts show its specific character. The common feature here and in my wife's and my own works is Humanity, that includes the attitude ~~human~~ towards the animal too. This belief and feeling, however, is neither overdone nor preached. I would call its expressions modest, natural and poetic.

This is also a Hebrew manuscript. I myself could translate some pages, for your first reading only. More could be done by a professional translator.

b) Jacob began to write "Italy in My Eyes" which is a travel book with elements of a plot. The part of the manuscript ~~will~~ written so far might be its half; but it is forthcoming extremely slowly, because Jacob is a student, a high school sophomore. In the summer holidays he will perhaps finish it. I can send you a chapter that appeared separately in a Canadian newspaper.

Thus I defined what I could submit to you sooner or later. I should be happy if this would enable you to take special interest in a part of our manuscripts and if your interest would lead to an agreement.

Very sincerely yours

Otto Schneid

Feb. 16, 1962

Dr. Forest Melick Hinkhouse,
Director,
Phoenix Art Museum

Sir,

Allow me to introduce to you my work and myself by the catalogue of my new show and the short information enclosed.

I should consider it a high distinction if you would take friendly interest in my art, particularly by an invitation for an exhibit or by an acquisition.

One of my recent compositions, "Girl in Arizona", might interest you also thematically. I enclose a photograph.

Of the mentioned Alinari album of my paintings and sculptures I possess just now only one. As soon as I shall get other copies it would be my pleasure to send one to you.

Very respectfully yours

Otto Schneid

March 11, 1962

Paula G. Morris,
New York City

Dear Sirs,

Though my art doesn't belong to that of today
allow me please to introduce it to you by a little information
enclosed.

If you want to see the portfolio of my paintings and
sculptures published by Alinari I shall be very glad to mail
it to you. Some of the originals are at present in NYC.

Respectfully yours,

Otto Giacomini

Feb. 26, 1962

Paul Plummer Galleries,
Los Angeles

Dear Sir,

I take advantage of a friendly advise of Mr. Kurtzworth, Art Director of the American Art Society, and introduce to you my work and myself by a little information enclosed. For better knowledge I could send you the Alinari album of my works, but not just now, because now I possess only one copy.

I should be very glad if you would invite me for a one man show. Please let me kindly know your conditions, the suitable number of paintings and sculptures and eventually limits of sizes. The earlier an agreement about the date could be made the more would it facilitate fixing my exhibit time table.

Very sincerely

Otto Schneid

Mr. Duncan Phillips,
The Phillips Collection,
Washington D. C.

Feb. 14, 1962

Dear Mr. Phillips,

Hoping my name and my endeavors are not quite unknown to you
I have the honor of introducing myself to you by the catalogue
and the other information enclosed.

In March or April I also could send you the Alinari album
of my paintings and sculptures.

I would consider it a high distinction if you would invite me
for an exhibit or if you would take interest in one of my works.

Very respectfully yours

Otto Schneid

to ask her, because she is now in the State Hospital; but this was obviously so. In fact, it was not brought, but shipped, as mentioned above. This would also not have change anything, since this category of books is at any case free of custom.

March 2, 1962

I beg your pardon in case the error of my wife would have caused trouble or loss of time.

Postmasters Office, Scranton, Pa.

Sirs,

respectfully

I was today called by your Office for explanation about a parcel sent to me from Italy and delivered to me Jan. 22.

It contained a three-language-book and was therefore free of custom.

My wife signed to the mailman a form which, as your Office informed me, was a declaration that she brought the parcel with her. As it can exceptionally happen even to the most responsible person my wife signed in a hurry what she didn't read. I have no opportunity to ask her, because she is now in the State Hospital; but this was obviously so. In fact, it was not brought, but shipped, as mentioned above. This would also not have change anything, since this category of books is at any case free of custom.

I beg your pardon in case the error of my wife would have caused trouble or loss of time.

respectfully

Otto Schneid

2. Mai 1962

Sehr geehrter Herr Paul Macku,

ich kann nur hoffen, dass Sie einer der heute seltenen Menschen sind, die bereit sind, selbst einem Unbekannten eine für ihn wertvolle Gefälligkeit zu erweisen.

Ich brauche eine Adresse, die nicht im Wiener Telefonbuch steht, aber wahrscheinlich im Adressbuch, die des Kunsthistorikers Dr. Anton Macku. Ich erlaube mir, mich an Sie zu wenden, da die Gleichheit des Familiennamens möglicherweise auf Verwandtschaft beruht. Andererseits dürften Sie als Presse-Potograph besonders viele Wiener kennen und im schlimmsten Falle diese Information telefonisch bekommen können oder ein Adressbuch zur Verfügung haben.

Ich wäre sehr erfreut, zu irgend einem Gegendienst Gelegenheit zu finden.

Mit bestem Dank ergebenst

Otto Schneid

March 12, 1962

Dear Michelle,

It was so delightful half an hour we had the privilege to spend with you in NY. It is fine to meet you and to enjoy your exterior and reflections of yourself.

As to the paintings you generously agreed to house I must suggest a little change. Some frames are terribly shabby, some ones are even in a technically bad condition. Therefore we have to take care of new framing before the pictures leave the warehouse. Someones, however, are tolerably framed (especially smaller sizes); three pieces of a triptych painted on wood, "Mystery of Birth", don't need a frame at all. Thus I suggest to you to choose for immediate taking into your house the paintings whose frames you'll find acceptable. After changing the frames of the other pictures we shall have the opportunity to propose to you enlarging or changing your first choice.

At this opportunity let me repeat our most sincere and warmest wishes for your and your fiancé's happiness.

Very cordially yours

Otto Schneid

P.S. In order to avoid difficulties you could have in the warehouse ^{IX}
I enclose the Receipt and the copy of my letter to the warehouse. ^I
At any case contact please the warehouse by phone before.
It would be good if Rabbi Seltzer would accompany you, because his presence would also diminish the risk of the loading etc. and improve security. I also ask you to note expenses and to inform me about them.

May 1, 1962

Lieber Dr. Karfiol,

Euer in Aussicht gestellter Besuch wäre uns in der allernächsten Zeit besonders willkommen. Das hängt mit einer freundlichen Wendung in meinem beruflichen Leben zusammen, die Dich und zweifellos auch Helena freuen wird.

Meine Kunst hat in Prince de Sora einen begeisterten Freund gefunden. Er hat in Hollywood eine Galerie gegründet und eröffnet mit einer Ausstellung meiner Arbeiten, um dann meine weiteren Ausstellungen in anderen Städten des Westens zu zeigen. Zum Auftakt publiziert er eine kleine Brochure, die ich Dir werde schicken können. Zur Eröffnung der Hollywooder Ausstellung will ich fahren und etwa 2 Wochen dort bleiben. Das dürfte in etwa 2 Wochen sein. Wenn irgend möglich, möchten wir Euch noch vor meiner Abreise bei uns haben.

Ich gestehe, dabei noch einen Hintergedanken zu haben. Da wir für viele Rahmen etc. enorme Ausgaben hatten, habe ich noch nicht alles beisammen, was diese Reise und deren Vorbereitungen erfordern. Falls Ihr eines meiner Gemälde besitzen wolltet, würde ich es Euch gern um einen Bruchteil des normalen Preises verkaufen, was mir ja gewiss keinen Prestige-Verlust brächte. Oder vielleicht hätte Helena oder hättest Du selbst Lust auf ein gemaltes Portrait?

Wenn das überhaupt besonderer Betonung bedarf - Ihr werdet uns hochwillkommen sein, auch wenn wir keinerlei Geschäft machen. Du kennst mich ja einigermaßen, ich bin kein völlig schnöder Opportunist.

Dr. de Sora hat die Initiative in einer noch viel grösseren Sache übernommen. Er organisiert ein Comité zur Realisierung meines Modells für ein kolossales Monument der Nazi-Opfer.

Mit sehr herzlichen Grüßen von Haus zu Haus

Dein

July 11, 1962

Dear Mr. Kandaras,

I am back from Hollywood and this is one of my first letters after my arrival. I want to thank you very sincerely for your kindness towards me in Chicago. On my way back I was also in your city, but only for a 2 hours.

The reason of the long silence of our distinguished friend Dr. de Sora is much and comprehensive work he does for the sake of my art. He did much preparatory work before my exhibit in Hollywood, which is still open, and first of all for the erecting of my Monument to the Six Millions of Martyrs. Now he began to organize a committee of prominent people, artists, writers etc., both American and international.

One of the reasons why it is apitty that I failed to meet you on my way back was my interest to meet through your friendly intervention Mr. Karpuszek. So I take the liberty of sending you here a little brochure with the request kindly to show it to him at the first opportunity. I enclose a little more material for information. If you are interested I can send you also the album you surely remember to have seen in my hotel in Chicago.

One of the leading galleries of Hollywood is interested in a special exhibit of my drawings and pastels, while the University of California plans a comprehensive retrospective of my works. Sooner or later I hope to get an invitation from Chicago too.

With kindest regards and cordial thanks yours

Otto Schneid

20. Mai 1964

Lieber Herr Hermann Langbein,

Ihr unerwarteter Brief hat mich, um ganz offen zu sein, so stark berührt, dass ich mich der Arbeit, deren freiwillig-unfreiwilliger Gefangener ich bin, ein wenig entziehe, um Ihnen zu danken. Es ist tragisch, dass Sie für so viel Heldentum und selbstlose Hingabe so schmeiche belohnt worden sind, von Menschen, die ihre Vergangenheit zu reinerem Denken und Tun hätte führen können und sollen, wenn nicht Politik immer wieder in einen Sumpf hinabzöge. Wenn Sie bedenken, wie Wenige auch nur den Versuch unternommen haben, Politik und Ethik zu verbinden, werden Sie den schmählichen Undank nicht allzu sehr bedauern. Ich würde Sie zu dieser Verdrängung eher beglückwünschen und hoffen, dass die Trennung Ihnen viel ersparen und Ihnen erlauben wird, sich selbst völlig treu zu bleiben und das Ihnen adäquate Leben zu führen. Sicherlich hat Ihre wundervolle Frau Ihnen geholfen, auch diese Krise zu überwinden.

Ich arbeite penunlos und intensiv. In California ist ein Comité für mein dort geplantes Monument der Nazi-Opfer im Entstehen. Wenn die Initiative unseres edlen Freundes Dr. Maas auch in Deutschland ein Denkmal ermöglichen sollte, würde ich dieses nicht den Opfern, sondern den arischen Helden der Menschlichkeit widmen, die für ihren meinem Volke erwiesenen Edelmut ihr Leben hingegeben haben. Wissen Sie eine Publikation, in der diese Tatsachen zusammengestellt sind? Ich habe eine Reihe von Ausstellungen gehabt, deren Erfolge in dieser Zeit relativ ermutigend sind. Diese Phase der verfaulenden Abstraktion wird vielleicht noch lange dauern und vielleicht wird die Diktatur ihrer organisierten Nutzniesser noch weitere Schlüsselstellungen erobern, aber ewig dauern wird sie gewiss nicht. Vor allem dürfen wir vielleicht überhaupt wieder an den Fortbestand unseres Planeten glauben, trotz allem was ihn immer wieder gefährdet.

Nun eine kleine Belästigung: Könnten Sie mir durch einen Telefon-Anruf an das Kunsthistorische Museum oder einfach durch das Adressbuch die Adresse des Kunsthistorikers Dr. Anton Macku ermitteln?

Mit sehr herzlichen Grüßen an Ihre liebe Familie bin ich Ihr ergebener

May 21, 1962

Allstate Tours,
20 South Michigan Ave.,
Chicago

Dear Sirs,

Hoping my name is not quite unknown to you and offering to you some information by the material enclosed I have the honor of submitting to you an unusual suggestion.

I am interested in a trip of a 3 weeks in July, together with my family, that would enable me to enjoy and to paint the beauty of American landscape. At the most pittoresque places I would begin a number of paintings and finish them afterwards in my studio.

Instead of paying to you as usual I would authorize you to reproduce the paintings of this series on single plates or as an album or on post cards. Only the titles and my name would have to be noted on your reproductions. You could also acquire a part of the originals for half the prices fixed in my exhibitions.

My family mentioned is : My wife, a prize winning poet; my two sons 15,11. Our 15 years old son is the youngest book author. A travel book about Greece he wrote 5 years ago appeared in Israel in 2 volumes and was a best seller. At the travel planned he would surely write about his impressions, though I can't promise it. We are in USA on the teachers exchange.

Sincerely yours

Otto Schneid

March 22, 1962

Mr. Roy Moyer, Ass. Director,
American Federation of Arts,
NYC

Dear Mr. Moyer,

It was surprising to get a letter from AFA, really a letter, not a circular. This very fact deserves thankful acknowledgement.

It is, however, though correctly addressed, not written to a person defined by any character, by a goal or by achievements. It means only one of the numberless members and his microscopically modest contribution to the income of an immensely wealthy organization.

Nobody could dispute the enormous activities made possible by this income. In no country exists an art organization ^{comparable} to AFA and its power. The only question is that of the use of this great power.

It is mainly used, as a matter of fact, for promoting still more a trend that is today the dominating one, the direction that succeeded to grant to its mass production the role of the only, or the only legitimate, representative of our contemporary art.

This radically one-sided program led to tragic isolation of devoted artists who believe to be the pioneers of the art of tomorrow. Their works are neither invited nor considered for admission to the tremendous activities of AFA.

I don't suggest a senseless discussion between so different views and so different interests. I only want to explain why I admire the organizational power of the Federation without admiring the use of this power.

I happen to be one of the artists not recognized by AFA.

Forgive me, dear Sir, that my answer is not only polite, but sincere.

Respectfully yours

Otto Schneid

**art directions gallery
madison gallery**

600 madison avenue at 57 street • new york 22 • plaza 2-2455

Feb. 28, 1962

Dear Dr. Schneid :

We can offer you the same date for a one man show
on the basis of contract revisions which are enclosed.

If you wish, you can exhibit both paintings and
sculpture. The number of works are listed in the
contract. Naturally, the cost for a one man show
is twice the amount.

Yours truly,

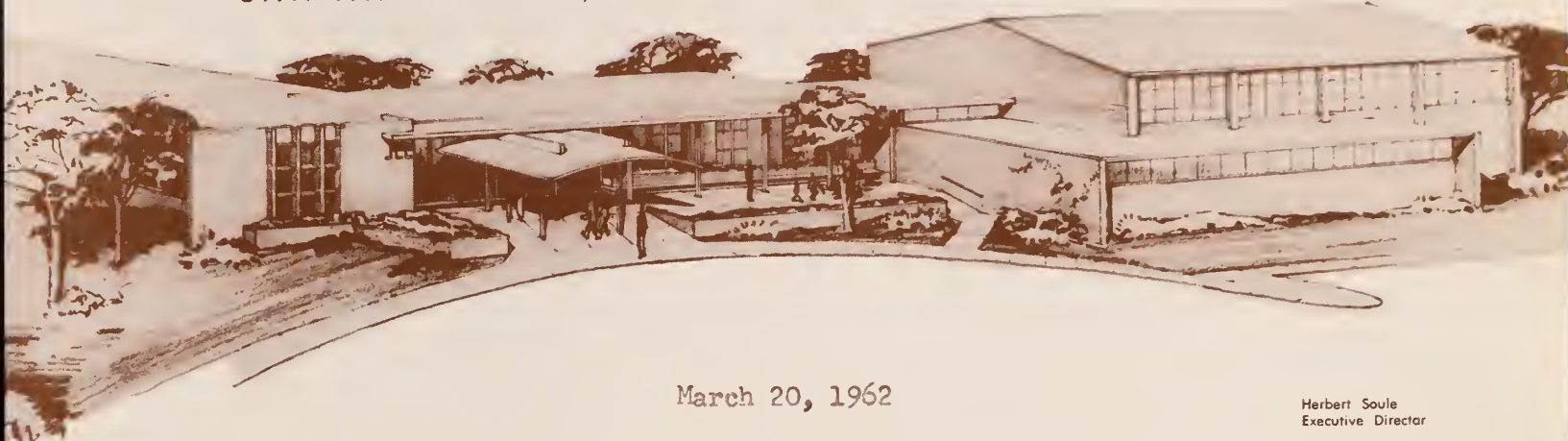


Eve Pollack
Assoc. Director

JEWISH COMMUNITY CENTER

215 RAMPART DRIVE Diamond 4-3411
SAN ANTONIO 12, TEXAS

of SAN ANTONIO I
C
A
S



March 20, 1962

Herbert Soule
Executive Director

OFFICERS

Richard Alterman
President

Frank H. Lichtenstein
Vice-President

Charles Sugerman
Vice-President

Walter M. Viner
Vice-President

Mrs. Al Kraft
Secretary

Thomas C. Levine
Treasurer

Mr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pennsylvania

Dear Mr. Schneid:

We are interested in the possibilities for obtaining art works - prints, paintings, lithographs and other art forms relating to Israeli and Jewish themes and also of art works of Jewish and Israeli artists, that can be exhibited under the auspices of the Center. Please advise, as specifically as possible what types of works are available for our purposes, the fee, the scheduling details - when material could be booked and for what duration, is it available for sale, if so do you have price lists? Is the material tagged for easy identification and are prints matted and protected?

We are interested in arranging exhibits for Fall '62 and Spring '63. Do you have any brochures that would be helpful to our committee members for discussion purposes?

Your early response would be appreciated.

Sincerely yours,

Mrs. Shirley Soule
Mrs. Shirley Soule
Special Events

SS:as



AFFILIATED WITH JEWISH SOCIAL SERVICE FEDERATION

• COMMUNITY WELFARE COUNCIL



April 2/ 1962

The Jewish Community Center,
to Mrs. Shirley Soule,
San Antonio

Dear Mrs. Soule,

I appreciate your friendly inquiry of March 20. You find enclosed the answers on your questions.

As to an exhibit of my paintings, there are no disposable dates before Sept. 1, '62, but several later dates are still available. A date once agreed would oblige both you and me.

I have my informations about shipping costs from Railway Express and could forward them to you, but you ^{can get them} also directly by phone from the local branch of that company. The weight of the framed paintings plus packing materials is about 300 lbs.

The portfolio of my works mentioned in the enclosed leaflet would be a part of the exhibit; you could display its plates under glass, on tables or on walls. If you don't want to get the exhibit of the originals I can also have sent to you the portfolio for the price noted.

Sincerely yours

Otto Schneid

THE AMERICAN FEDERATION OF ARTS



41 East 65th Street, New York 21 • YU 8-7700

OFFICERS

Roy R. Neuberger
President
George H. Fitch
First Vice President
Lloyd Goodrich
Second Vice President
David M. Solinger
Third Vice President
Hudson D. Walker
Secretary
Allan D. Emil
Treasurer
Robert Woods Bliss
Honorary President
Richard F. Bach
Honorary Vice President
William M. Milliken
Honorary Vice President

TRUSTEES

Philip R. Adams
Arthur G. Altschul
H. Harvard Arnason
Lee A. Ault
Pietro Belluschi
William McCormick Blair
Elizabeth B. Blake
Lawrence H. Bloedel
Adelyn D. Breeskin
Francis E. Brennan
Leslie Cheek, Jr.
William G. Constable
Charles C. Cunningham
John de Menil
Rene d'Harnoncourt
Dudley T. Easby, Jr.
Allan D. Emil
George H. Fitch
Bernice C. Garbisch
Lloyd Goodrich
Paul S. Harris
Bartlett H. Hayes, Jr.
Susan M. Hilles
Henry R. Hope
Thomas Carr Howe
Alan Jarvis
Alice M. Kaplan
Sherman E. Lee
Vera G. List
Daniel Longwell
Earle Ludgin
Stanley Marcus
Arnold H. Maremont
Elizabeth F. Miller
Grace L. McCann Morley
William C. Murray
Charles Nagel, Jr.
Elizabeth S. Navas
Roy R. Neuberger
Fred L. Palmer
Perry T. Rathbone
Rita M. Rentschler
Helen C. Russell
James S. Schramm
Lawrence M. C. Smith
David M. Solinger
Eloise Spaeth
Edward D. Stone
James Johnson Sweeney
Hudson D. Walker
John Walker
John W. Warrington
Suzette M. Zurcher

DIRECTOR

Harris K. Prior

March 7, 1962

Prof. Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pa.

Dear Professor Schneid:

We take pleasure in enclosing a reprint of an article by John Canaday that appeared in The New York Times. It is because of your past generosity that we have been enabled to carry out our major project (about which Mr. Canaday is so enthusiastic) to bring art in its many phases to the smaller community through our Traveling Exhibitions.

I am writing to appeal directly to you not to let your membership lapse. Your membership dues are vitally important to AFA because they help to continue its work and enlarge our scope. But just as important is your moral support and the strength your membership adds through the endorsement of our program.

Our handsome new building at 41 East 65th Street has been formally opened, and you are welcome to use the Members' Lounge any weekday from 9:30 to 5:00 p.m.

We are most anxious to continue your subscription to the magazine of your choice as well as to the AFA Art Newsletter and The Art Gallery, and as soon as we receive your check, we shall extend your membership to March, 1963.

May we look forward to hearing from you in the very near future.

Very sincerely yours,

Roy Moyer
Assistant Director

RM:ms
encs.

Feb. 18, 1962

Mr. Charles C. Cunningham,
Director,
Wadsworth Atheneum,
Hartford

Sir,

Let me introduce to you by the information enclosed
myself and my work.

I should gratefully appreciate any expression of interest
in my art, particularly an invitation for an exhibit or an
acquisition.

I would like to send to you also the Alinari album
of my paintings and sculptures, but just now I have only one.
In a few weeks I have to get other copies and would be glad
to dispatch one to you.

Very respectfully yours

Otto Schneid

Mr. Rowland Lyon,
Curator of Art,
The National Collection of Fine Arts,
Washington D. C.

Feb. 11, 1962

Sir,

Hoping my name and my artistic aims are not quite unknown to you
I have the honor of sending you the catalogue of my new exhibit and
some other information.

I could mail to you also the Alinari-album of my paintings and
sculptures, but unfortunately I possess at present only a few copies
and should have to ask you to send it back to me.

May I hope your Museum would also distinguish me by an invitation
for an exhibit ?

Very respectfully

Otto Schneid

Feb. 11, 1962

Miss Carolyn Proctor,
Visiting Artist Fellowships,
The Institute of ^{Cony} Temporary Arts,
Washington D. C.

Dear Miss Proctor,

Hoping my name and my aims are not quite unknown to you
I have the honor of introducing myself to you by the information
enclosed.

I have been in America one year and a half.

I would consider an invitation by your Institute a high
distinction.

Respectfully yours

Otto Schneid

May 25, 1962

Lieber Hans Warschawsky :

Dein lieber Brief vom 7. d. M. war fast eine Überraschung, denn ich hatte kaum noch gehofft, dass mein an jene uralte Adresse geschicktes Schreiben Dich erreichen würde. Eher hätte ich angenommen, Du würdest irgendwann in einer Zeitung etwas über mich finden und so indirekt meine Adresse erfahren, wie im Laufe der Zeit manche alte ~~Freunde~~ Freunde. Dein Bericht ist ergreifend, es ist im Telegrammstil die Geschichte einer Familie. Hanna's Eltern, Frida und Gerhard habe ich in ganz frischer Erinnerung; es ~~ist~~ ist aber sehr begreiflich, dass das Ende der süßen schönen Ursula der schwerste der Schläge war, die Ihr erleiden musstet. Mit grosser Genugtuung erfahre ich daher, dass das Leben an Euch auch manches gutgemacht und Euch durch den wohlgeratenen Franz, durch eine sympathische Schwiegertochter und durch Eure Enkel getröstet hat und dass Ihr ~~z~~ Euch in Chile wohlfühlt.

Um etwas Zeit zu sparen, sende ich Dir eine Broschüre über mich als Maler und Bildhauer, die auch einen biographischen Überblick enthält. Nicht seit 1945, sondern seit 1960 sind wir in USA. Obzwar ich seit 1939 in Palästina, bzw. in Israel gewesen ~~war~~, hatte ich die Vorgänge so miterlebt, dass ich fast um den Verstand gekommen und durch Verzweiflung arbeitsunfähig ^{geworden} und in tiefes Elend geraten war. Als ich mit Hilfe meiner jetzigen Frau wieder ein Mensch wurde, Bücher schrieb u.s.w., wurde ich ans Technion berufen, schon als Familienvater. Miriam ist heute 38, ich 62, unsere Söhne Jacob und Adam 15 und 11. Sie stammt aus einer russisch-chassidischen Familie, ist Lehrerin, hat von der Assoc. of Authors and Composers in Israel den 1. Preis für Dichtung erhalten, stark als Bildhauerin. Von Jacob ist hebräisch ein Buch über eine griechische ~~A~~ Reise in 2 Bänden erschienen, als er 10 Jahre alt war. Er hat seither noch $1\frac{1}{2}$ Bücher geschrieben. Sein Bruder scheint oft noch viel begabter.

Mein wichtigster Plan hier ist es, ein kolossales Monument der Nazi-Opfer zu errichten. Um den 12. Juni fahre ich zur Eröffnung derl. meiner Ausstellungen an der Westküste nach Hollywood, im Schnellzug 3 Tage. Prince de Sora, ein begeisterter Anhänger meiner Arbeiten, ist dort vor allem in der Sache des Monuments tätig. Da Scranton im Osten Pennsylvania's liegt, komme ich durch Chicago und will für 1-2 Tage ~~abste~~

absteigen, um es kennen zu lernen, oder zumindest die Museen. Obzwar die Zeit für Begegnungen schwerlich reicht, könnte ich Deinen Freund antelefonieren, wenn Du willst.

Hier ist es mir anfangs schlimm gegangen, da die abstrakten Betrüger und die mit ihnen verbündeten Museumsdirektoren, Händler und Sammler eine Art Diktatur ausüben. Dass ich gegen diese Grossmacht mich doch ein wenig durchsetze, bestärkt meinen Glauben, dass meiner Kunst die Zukunft gehört; vorausgesetzt, dass die Menschheit überhaupt eine Zukunft hat. Auch manche meiner Feinde anerkennen mich als Porträtisten.

Die Distanz zwischen uns ist so gross, dass ich schwerlich jemals in Chile sein dürfte. Eher wird doch Jemand von Euch irgendwann in US sein. Wann immer Du oder einer Deiner Lieben uns besuchen könnt, werdet Ihr uns höchst willkommen sein. Es ist übrigens nicht ausgeschlossen, dass wir nach Hollywood übersiedeln.

Wir sind Vegetarier und verdanken dieser Ernährung gesundheitlich viel. Ich arbeite unvorstellbar viel, Tage und sehr oft fast ganze Nächte, und habe praktisch nie für Vergnügen oder auch nur Ruhe Zeit. Einen so ausführlichen privaten Brief kann ich mir fast nie erlauben.

Dir und Hanna und Euch Allen die herzlichsten Grüsse und Wünsche

Dein alter Otto

4 lutego 1962 r

Wielce Szanowny Panie Zagajski,

Przypuszczam, że przez wszystkie przeżycia w ciągu tragicznych lat Pan mnie zapomniał, bo tylko raz miałem sposobność do spotkania się z Panem. Było to na miłym przyjęciu u Państwa we Warszawie w 1936 r. Wtedy organizowałem muzeum Yivo we Wilnie, a Zalman Reizen i inni przyjaciele przysli zemna, aby widzieć jedyny w swoim rodzaju zbiór Pana.

W lecie 1960 r przybyłem do Ameryki, a przy sposobności kilku moich wystaw w NY zadzwoniłem do Państwa, ale daremnie; oczywiście Państwo dużo podróżuje.

Jednak chciałbym się z Panem widzieć. Aby cokolwiek zapoznać Pana moją ^adziałalnością artystyczną i autorską, pozwalam sobie przesłać Panu informacje o niej i katalog najnowszej wystawy w Everhart Museum. Byłbym bardzo ucieszony jeżeliby Pan wyraził interesowanie. Mogłbym Panu też posłać album mojej sztuki, wydawnictwa Alinari we Florencji.

Może Pan coś wie o losie moich przyjaciół Kragenów? Inż. Dr. Kragen przecież pracował u Pana. Po katastrofie nie osiągnęłam żadnych wiadomości.

Zrozumi się, żebym chętnie widział nowy Pański zbiór sztuki.

Pozdrawiam Państwo z wyrazami szczerego szacunku

Otto Schneid

Feb. 14, 1962

Mr. James Johnson Sweeney,
Houston

Sir,

You will certainly be astonished to get a letter from an artist whom you don't know at all or whom you consider one of the old fashioned ones.

As a matter of fact, the difference between your ideals and mine is an abyss, and maybe I shouldn't try to find a formula for any cooperation.

But I believe in your fairness and in your open mind. You surely don't believe that one art trend can, or shall, dominate for ever or that one aesthetical ideal can be the last word of History.

On the other hand, I consider this so-called modern art a deplorable decay only in its last phase, while I deeply admire the achievements of its heroic age, before the early twenties. It is my conviction that today it can be kept alive only by great powers, artificially, though many thinking men share these efforts bona fide.

I can't believe, however, that this forced stagnation of development will endure for generations. My own endeavors are based on the belief that humanity will return to human art, maybe not in our lifetime.

In the meantime, artists who are convinced to be pioneers of that future have to suffer, since only a few friendly contemporaries encourage them.

Should not personal fairness of leading men modify these conditions ? So I dare to send to you a little information about my art. It would be my pleasure to dispatch to you also the Alinari album of my paintings and sculptures.

Very respectfully

Otto Schneid

Feb. 11, 1962

Dear Miss Shari Stern,

I have the pleasure of sending you the catalogue of my new exhibit and a little additional information that might be useful to your kind initiative for exhibits in colleges.

I shall be very glad to cooperate with you.

Cordially

Otto Schneid

Feb. 11, 1962

Mr. Reginald Poland,
Director of Museums,
Atlanta Art Association,
Atlanta Ga.

Sir,

Hoping my name and my artistic aims are not quite unknown to you
I have the honor of sending you the catalogue of my new exhibit
and some other information.

In March or April I shall certainly be able to mail to you
also the Alinari-album of my paintings and sculptures.

May I hope for the distinction to be invited for a show
in your Museum ?

Very respectfully

Otto Schneid

Feb. 14, 1962

Mr. H. M. Kurtzworth,
Art Director,
American Art Society,
Los Angeles

Dear Mr. Kurtzworth,

Allow me to introduce to you myself and my work by the
catalogue and the other information enclosed.

I should highly appreciate any expression of your interest.
I don't know, however, what you practically do for an artist
whom you want to promote. May I ask you if your Society takes care
of exhibits, of purchases, of publicity ?

At present I possess only one copy of the Alinari album
of my paintings and sculptures, but I have to get other copies
and could certainly send you one soon.

Very respectfully yours

Otto Schneid

May 31, 1962

Mr. John Maxon,
Director, Fine Arts,
The Art Institute of Chicago

Sir,

I ask for the privilege to show you personally an album of my paintings and sculptures published by Alinari.

On the way to Hollywood where I have to attend the opening of my first West Coast exhibit, I will stay $1\frac{1}{2}$ days in Chicago : p.m. Friday, June 8 and Saturday.

If your time will allow to you to receive me I hope you will have the kindness to do so. I shall try to contact you by phone.

Very respectfully yours

Otto Schneid

Enclosed : a new brochure

Feb. 14, 1962

Mr. A. Franklin Page,
The Detroit Institute of Arts,
Detroit

Sir,

Allow me to introduce to you myself and my work by the
catalogue and the other information enclosed.

I should highly appreciate any expression of your interest,
especially an invitation for an exhibit in your Institute.

At present I possess only one copy of the Allinari album
of my paintings and sculptures, but I have to get other copies
and could certainly send you one soon.

Very respectfully

Otto Schneid

Feb. 16, 1962

Mr. Warren Beach, Director,
Fine Arts Gallery, San Diego

Sir,

Allow me to introduce to you my work and myself by the
short information enclosed.

I should highly appreciate any friendly interest you
would take in my art, particularly an invitation for an
exhibit or an acquisition.

At present I possess only one Alinari album of my paintings
and sculptures. As soon as I shall get other copies it would be my
^a pleasure to send one to you.

Very respectfully

Otto Schneid

Feb. 18, 1962

Mr. Otto Karl Bach,
Director,
Denver Art Museum

Sir,

Allow me to introduce to you my work and myself
by the short information enclosed.

I should highly appreciate any expression of friendly
interest you would take in my art, especially an invitation /
for an exhibit or an acquisition.

Just now I possess only one Alinari album of my
paintings and sculptures. As soon as I shall get other
copies I would be glad to send one to you.

Very respectfully yours

Otto Schneid

Feb. 12, 1962

Mr. Otto Karl Bach,
Director,
Denver Art Museum

Sir,

Allow me to introduce to you by the short information enclosed
my work and myself.

I would highly appreciate any friendly interest you would
take in my art

March 1, 1912

Mr. Gordon B. Washburn, Director,
Dept. of Fine Arts,
Carnegie Institute,
Pittsburgh, Pa.

Dear Mr. Washburn,

Thank you for your letter of Feb. 27.
You find the two photographs enclosed.

Sincerely yours

Otto Schuch

Feb. 26, 1962

Mr. Charles Nagel,
Director,
City Art Museum,
St Louis

Dear Mr. Nagel,

Thank you for your friendly answer of Feb. 20.

I don't insist on a one-man show. I should be glad to participate in an impersonal exhibit you would arrange, on thematical grounds, as Human Art, Biblical Art; or on problems and their solutions, as Realism and Idealism, Composition and Color, Form and Content.

Otto Schneid
Whenever you would find any cooperation suitable, please remember me.

Very sincerely

Otto Schneid

Feb., 11, 1962

Mr. Everett McNear,
Arts Club of Chicago,
Chicago, Ill.

Sir,

Hoping my name is not quite unknown to you I have the honor of introducing myself to you by a catalogue of my new exhibit and some other information.

I could also mail to you the Alinari-album of my paintings and sculptures, but just now I possess only a few copies.

I would highly appreciate it if you would invite me for a show of my works.

Respectfully and sincerely

Otto Schneid

Feb. 14, 1962

Mr. Lucien Wulsin Jr.,
Chairman,
The Contemporary Arts Center,
Cincinnati, Ohio

Dear Mr. Wulsin,

Though my name might be known to you I would like to introduce myself to you by the catalogue of my new show in the Everhart Museum and by some other information about myself and my activities.

Next month I could also send you the Alinari album of my paintings and sculptures.

Very sincerely

Otto Schneid

Feb. 14, 1962

Mr. Philip R. Adams, Director,
Cincinnati Art Museum,
Cincinnati

Dear Mr. Adams,

Allow me to introduce myself to you by the enclosed information
about myself and my work.

At present I possess only one copy of the mentioned Alinari
album of my paintings and sculptures, but next month I shall certainly
be able to send it to you if you take friendly interest in it.

Very respectfully yours

Otto Schneid

Feb. 14, 1962

Mr. Sherman E. Lee,
Director,
Cleveland Museum of Art,
Cleveland

Sir,

Allow me to introduce to you myself and my work by the catalogue and some other information enclosed.

I would highly appreciate any expression of your interest, especially an invitation for a show in your Museum.

At present I possess only one copy of the Alinari album of my paintings and sculptures; but I shall certainly get other copies soon and could send you one.

Very respectfully yours

Otto Schneid

Feb.16, 1962

Mr. Gordon Bailey Washburn, Director,
Dept. of Fine Arts,
Carnegie Institute,
Pittsburgh

Sir,

The universality visible in your activities along with your special interest in Pittsburgh artists encourages me to introduce to you myself and my work by the short information enclosed.

I would highly appreciate any friendly interest you would take in my art, particularly an invitation for an exhibit.

At present I possess only one copy of the Alinari album of my paintings and sculptures, but next month I could certainly send one to you.

Very respectfully yours

Otto Schneid

Feb. 21, 1962

Mr. Gordon Bailey Washburn,
Dept. of Fine Arts,
Carnegie Institute,
Pittsburgh

Dear Mr. Washburn :

My best thanks for your friendly answer of Feb. 19.

May I ask you to do me the particular favor of forwarding my
sake in time to your successor ?

Maybe you remember my book "Das chinesische Vorder-
grundbild" (Vienna-Prague-Leipzig 1934). If I could be useful to
you in your new task as director of the Asia House I would be
happy to put my experience in Far Eastern art at your disposal.
I could also lend to you for exhibits two extraordinary pieces,
chinese and persian : a Kuan yin, bronze with remains of gilding,
Southern Sung; and one of the rare genuine Riza Abbasi's. I possess
photographs of both of them.

I have the honor of/ congratulating you to your
future work.

Very sincerely yours

Otto Schneid

July 18, 1962

My very dear Mrs. Lelia Fligelman,

So soon after I had thanked you and your husband for so much kindness your letter with the two clippings arrived. I had both of them got before. Without being a detective I guess you wrote yourself the friendly lines of B. B. M.-Secunda will publish a long illustrated article in the August issue of Art Forum. - I am now drawing 18 illustrations for a new version of the biblical book "Ruth" by Simon Spund, Paris.

In one important point of our program, however, we didn't succeed. We can't move to your magnificent city this year. For the Scranton school doesn't release poor Miriam this year. If I shall be lucky enough to be invited to LA for starting the big work on the Monument, or some smaller work, I shall have to come alone and to stay there for some time; Miriam and the children will probably be able to join me not earlier than in the summer 1963.

In the meantime I hope to take much advantage of this quiet city that doesn't disturb me to concentrate in working, besides portrait commissions from time to time. We shall also use the time by learning to drive. Here we escaped it so far, but in LA we shall have to capitulate and to accept this terrible invention.

Please don't forget us soon.

With very warm regards to you and your husband

yours

January 17, 1962

My Dear Mr. Ellis,

Please accept my wife's and my cordial condolence.

Very sincerely yours

Otto Schneid

April 5, 1962

Mr. Richard L. Feigen,
Chicago

Dear Mr. Feigen,

Many people devoted to human rights and to the ideal of human equality will surely be excited about the news the papers brought on your initiative. I am impressed not only of this manifestation of your character, but also of your profession. I have no idea of your views on art, and especially of attitude towards the trend dominating today, but it would not be surprising if to your social humanism would correspond a tendency to an art that is also entirely human.

Thus if you can afford such a loss of time I should be grateful to you if you would do me the favor of informing me about yourself and your views on art and the activities of your gallery.

Here I enclose a little information about my art and myself. If you would be seriously interested I could send you more; or I could hand it over to you personally, for I shall be probably soon in Chicago for 1-2 days, on a trip to Hollywood. A distinguished friend of my art, Prince de Sora, founded a gallery there and wants to open it with an exhibit of my works.

I congratulate you and should be very glad to learn that there are common principles not only in our ethical beliefs but also in our views on art.

Very sincerely yours

Otto Schneid

Feb. 18, 1962

Mr. Archibald Gibson Wenley, Director,
Freer Gallery of Art,
Washington D. C.

Sir,

Maybe you remember my early book "Das Chinesische Vordergrundbild" or saw my book about the biblical frescoes of Dura-Europos (that is written in Hebrew, but has an English summary). Allow me please to introduce myself to you also as a painter and sculptor by the short information enclosed.

I should gratefully appreciate any expression of friendly interest on your part, particularly an invitation for an exhibit or an acquisition.

May I also send you the Alinari album of my works ? At present I possess only one copy , but I have to get some other albums soon.

Very respectfully yours

Otto Schneid

Feb. 18, 1962

Mr. George D. Guller,
Director,
San Francisco Museum of Art

Sir,

Let me introduce to you by the short information enclosed
my work and myself.

Hoping for any expression of friendly interest in my art
I should be very glad to send you also the Alinari album of
my paintings and sculptures. Just now, however, only one is
at my disposal; as soon as I shall get other copies I shall
dispatch one to you.

Very respectfully yours

Otto Schneid

Handwritten signature: Otto Schneid

Feb. 14, 1962

Dear Mrs. Goldman,

As an opportunity for greeting you I send you here the catalogue of my new exhibition in *The Everhart Museum*.

When I visited Phila I also went to the Newman Gallery. They, however, knew neither your name nor mine, but saw with great interest my album and some photographs of recent works.

They invited me for a One man show, but the only date at their disposal is so late that I can't accept.

Does in Phila exist another gallery not less attractive than Newman ? Or is this the only first class gallery ?

I hope you are happy. You'll be glad to learn that recently I am successful again and have a lot of plans for the next future. Let us hope for Peace on which everything depends.

Yours very sincerely

Otto Schneid

March 8, 1962

Dear Mrs. Goldman,

Once again my most cordial thanks for your great generosity and so much time you gave to the sake of my art.

In Phila I had got some encouragement, therefore I had supposed your fellow-citizens would welcome my exhibit; but after the failure of your noble endeavors I am afraid I was mistaken.

I would not exhibit in a bookshop or in a second class gallery. You'll certainly understand me.

You'll be glad to know that it is as you supposed and wished; the long awaited success is coming step by step.

I shall always remember you with feelings of most sincere gratitude.

Cordially yours

Otto Schreid

Feb.12,1962

Mr. Shannon Ravenel,
Editorial Department,
Houghton Mifflin Company,
Boston

Dear Sir,

Let me very sincerely thank you for your friendly answer of Jan. 23,1962, on my inquiry. Its spirit encourages and obliges me to give you a short but realistic description of what I would like to submit to you. I mean works of myself, of my wife and of our elder son.

1) About myself you find here enclosed a quotation from "Who is Who in Israel" that shows to you that my activities are composed of literary, artistic and scientific ones. I wrote mainly in Hebrew and German. The most of what I could offer to you would have to be translated. My own suggestions refer to a) a book of poems and dramas, b) a booklet of short stories, c) and d) two projects of novels.

a) A few of my poems and five dramatic works are translated into English, though the translations of the poems are far from being adequate. To my knowledge, a book of this type does not yet exist. Would you in principle take it into consideration ?

b) About my short stories let me quote the opinion of a leading Israeli critic who is my personal enemy : "In all the world literature there is nothing similar to them." Of some ones I could send you English versions.

c) The first of the two novels mentioned I began to write in

Hebrew. After~~x~~ taking care of a good translation I could submit to you a 50 pages. It is an educational and psychological novel, enacted in Israel. It begins some years before World War II and ends after it, reflecting historical reality of bot that country and Europe. It is mainly the story of a youth who was unwanted before his birth and in his childhood, that of the resulting problems and sufferings, and his creative liberation by love.

d) I believe that to our poor generation a new utopic novel should be given, based on the longing of Mankind for Existence and Security, for an end of the tremendous conflicts between the spiritual, political and economical powers of today that are also conflicts within numberless individuals. In Utopia nothing is forbidden, nothing is ridiculous, nothing impossible. The Christian churches would end their struggle and merge. This united Christendom ^{and Judaism} would revise their messianic formulas and resurge as one. Some ideas in the Islam would allow to it to join the great Messianic Concept. Monotheistic elements and ethical teachings of Hinduism, Buddhism and other religions would lead them too into the divine fraternity of humans. Finally, between the Free World and Communism a bridge of reconciliation would be built and a syncretistic social system developed, to change Hatred into Love and to initiate its eternal rule.

The central plot of this novel is the story of an American student who acts as a spy in Russia, and a Russian girl student who both hates and loves him. It has a meaningful Happy End.

I did not yet start writing the text. I would do it in my poor English for later improvement.

2) My wife, Miriam Schneid, winner of the First Prize of Poetry

of the Israel Association of Authors and Composers, Tel-Aviv 1957, wrote two novels. The recent one, not yet published, is "Song of Mothers". She wrote it also in Hebrew, but she would prefer to publish it first in English. Its idea is that of a cooperation of all the mothers of the world for avoiding War. The story begins in Israel too, at the eve of the Jewish-arabian war. Life, Love, Sufferings and Death are seen with purely human eyes, Jewish and Arabian men, women and children are equally treated. At the conclusion of the realistically developed rich plot, in Europe, a weird question ~~mark~~ rises.

3) Our son Jacob, now 15, wrote at the age of 10 a book on Greece where he had traveled. One of the leading Hebrew publishers made of it two volumes, "Hallo Greece" and "In Greece and Back Home", that were, in the circumstances of that small country, unusually successful. I don't suggest to publish this book in English, because meantime Jacob reached a higher step :

a) He finished a relatively short novel, "The Camel Market". In its plot it is rather a book for teen agers : He tells about his being kidnapped from his living place near Haifa to a camp of brigands in the southern desert, and his life there until his liberation. On the other hand, descriptive and lyrical parts show its specific character. The common feature here and in my wife's and my own works is Humanity, that includes the attitude towards the animal too. This belief and feeling, however, is neither overdone nor preached; I would call its expressions modest, natural and poetic.

This is also a Hebrew manuscript. I myself could translate, for your first reading only, some pages. More could be done by a

professional translator.

2) Jacob began to write "Italy in My Eyes" which is a travel book with elements of a plot. The part of the manuscript written so far might be its half, but it is forthcoming extremely slowly, because Jacob is a student, a high school sophomore. In the summer holidays he will perhaps finish it. I can send you a chapter that appeared separately in a Canadian newspaper.

Thus I defined what I could submit to you sooner or later. I should be happy if this would enable you to take special interest in a part of our manuscripts and if your interest would lead to an agreement.

Very sincerely yours

Otto Schneid

Jan.19,1962

Houghton Mifflin Company,
Boston, Mass.

Dear Sirs,

In an old issue of "The Writer" I find by chance the prize offer
of the H.M. - Esquire Fellowship whose closing date was April 1,1961.

May I ask you if you are planning for this year a similar prize
offer ? Or is there any other way to correct the regrettable omission ?

Very sincerely

Otto Schneid

Memorial Day 1962

Dear Prof. Merlub-Sobel :

I hope you are healthy and happy and remember me still a little.
I enclose a brandnew brochure that will help you to recall me.

On a trip to Hollywood, for attending the opening of my first
West Coast exhibit, I want to stay in Cleveland next Wednesday and Thursday
(June 6-7) to visit an old friend, Dr. Leo Herman, 3254 Berkeley Rd., to see
museums and perhaps to negotiate about an exhibit or to do a portrait.

This program would certainly allow me the great pleasure to meet you
if you can afford such a loss of time.

I should be happy about a phone message from you left at the home
of my friend; or, with your permission I could also try to reach you.

With very cordial regards yours

Otto Schneid

THE DETROIT INSTITUTE OF ARTS

Detroit 2, Michigan

ARTS COMMISSION OF THE CITY OF DETROIT

K. T. KELLER, *President* - ROBERT H. TANNAHILL, *Vice-President* - SELDEN B. DAUME - MRS. EDSSEL B. FORD
LESLIE H. GREEN - DOUGLAS F. ROBY - JAMES S. WHITCOMB

EDGAR P. RICHARDSON, *Director*

Phone TEmple 1-0360

WM. A. BOSTICK, *Secretary & Business Manager*

February 16, 1962

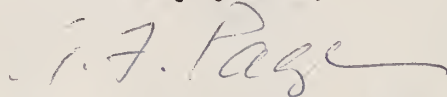
Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pennsylvania

Dear Dr. Schneid:

It is very kind of you to send me information about your work. It seems varied and interesting indeed.

I shall want to keep it on hand for reference, in the event that I may have some opportunity to avail myself of it in the future. At this present time our plans are made quite far ahead but one never knows what may be useful in the months ahead.

Sincerely yours,



Addison Franklin Page
Curator of Contemporary Art

The Philadelphia Art Alliance

251 South 18th Street

Philadelphia 3

The Water Color Committee of the Philadelphia Art Alliance will meet Friday, May 18. Because of your request for an exhibition, the committee would like you to send either photographs or transparencies of your work. Please send them to the Art Alliance by May 16. The material will be returned to you a few days after the meeting.

Action of the committee will be sent to you in letter form.

Water Color Committee
Charles T. Coiner, Chairman

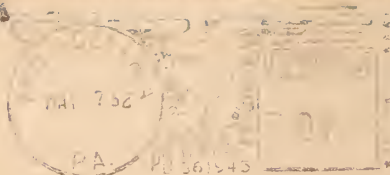
PROF. LEO WETSCHERA

Amberg 16. 6. 62

Lieber alter junger Mann!

Lieber Mann!

Es hinterfolgt dich das Leben
kriecht mir immer größer an,
die Dürftigkeit des Lebens
den Tod der Natur mit
Anregung zur Kunst und



THIS SIDE OF CARD IS FOR ADDRESS

Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pennsylvania

schon seitens in Erfüllung haben.
ich nehme an, das Sie noch weiter
in Amerika bleiben werden und
vielleicht für alle Zukunft die Men-
schen verfolgen. Ich bin mit Erfolg be-
kannt, Sie empfangen zum Annehmlichen
in Erfahrung. — Mir geht es derzeit
sehr gut, aber mit 81 muß man
bald denken, man ist fast fertig
von dem Leben.

Feb. 19, 1962

Dear Mr. Scherer

I received your letter in which you mentioned a catalogue of your new exhibition. But the Curators of the Erichson Museum in Bremerhaven, Germany, have declined it.

I spoke to Mrs. Hermann, the Hermann gallery on the shore - and she said they were booked way thru 1962 - and beyond. She said in between individual showings. She could let me have 3 to five days. I wrote you about that and also said it would be no value to show for a few days.

Friday I went to a small place run by a young woman (Venus) with your pictures showing. I will tell you she will not take on any exhibition of your pictures - But I thought perhaps she would give me a price. If the pictures are large she could not show them. She said, I have covered all the galleries. Many sizes or more - This is not New York - I took your pictures to the following places - The Art Alliance

See also Evans Academy of Fine Arts
The Art Museum. You know the results.
Neumann is a definite artist
Klein Gallery - no one now shows
Makler Gallery - small Gallery
will not show large paintings. Must
see the original. Most of their
work is completely abstract.
Mrs. Makler is a personal friend of
mine - she referred me to the Klee's
Galleries which no longer is in the
heart of the city - located in the suburbs
Galleries - and they at one time first
have numerous showings but
not since they have reduced their
Galleries ~~only~~
Coleman Art Gallery - no showings,
only occasionally - but very rarely -
French Artists only -
Bernard Carlini - only old early
American & English prints & paintings
Sessler Book Store An old reliable
book store and Prints (now). They have
only two or 3 showings a year -
They have been booked a long long
time and next year they shall reduce
their few to less if any. They are starting
an exhibition Friday - for two weeks

I shall run in three it an long
the prints - I did not call them
before, because they are known
as a Print and Book Store mainly

Newman's Galleries altho' the largest
gallery here is not held in
artistic esteem by people interested
in the Art World - They are
considered very commercial -

People - said they prefer to
see the original painting, but will
take a look at the prints I hold.
It is too bad you could not get
into the Art Alliance -

Chicago does not boast many
galleries (privately owned) as you
would find in New York -

When I come this last one
and they are looked on till next
year, I shall inform you?

My success and that shall
be the last venture -

I am glad things are jerking

up for you -

Very Most sincerely
Arthur Salmon

Port Jervis Pl.
S1112
Kula 30, Pa.

March 6, '962

Dear Mr. Schenck -

I took your portfolio
to Derrlers Book Store, where they
are now having one of their rare
showings. Pleasantly, it is sold there
by Joe Brown and his wife.
At Mrs. Galen, who has been with
the firm for many years is now
in charge - they have many fine
pictures, mainly prints, & etchings
but apparently they do not carry

Mrs. Galen was quite unimpressed
with your work and picked a few
out and said they are complete -
near to Chagall's work.

However, she felt it was not
the type or are they in the cate-
gory of their clients interest.
I would like to see if you

to this extent - If you care to
bring several small paintings
into town - she would choose
what she preferred and display
it or them in her front store
window - And, she could then
see what attraction it would
have in the public or her clients
Some one suggested I take
the prints to Mr. Philip Klein,
who has an adult, short-term
school in which his instructors
teach Art, languages, dancing,
Photography and whatever
else - you name it. He has
connections in many cultural
fields - runs a Polish news
(Jewish English) weekly - He may
be able to suggest some one -
His wife is a brilliant woman.
The weather is miserable, so if
you care to visit another week

I shall get it to them
with a small answer one way
or another - And I shall
return the Drunk -

I hope you are all well.
In all probability you have
the same weather. Winds are
running high with snow
drifting up to create hazards
in walking for the populace.
But Spring is always
around the corner

Most sincerely
Your Servant
G. S. Tolson

July 1st, 1962

Dear Miriam and Otto:

Enclosed you will find a clipping from the Bnai Brith Messenger, which gives you a good review although not a large one. No doubt your interview with the Fliegelmans was effective...at least in getting a little attention to your great art.

I just spoke with Mr. Toporow and he asked that I relay some information to you, which no doubt by now will be old news, as I hope they contact you by phone before you receive this letter. You have an offer of purchase for the tremendous picture of Solomon in his utter despair. But the offer is low indeed, being only \$600.00....instead of what should be much higher. However, sometimes sacrifices must be made in order to go forward, and should you be so inclined to allow the painting to go for such a sum, it would only be because of the necessity of your future move that would motivate it. However, perhaps the sale of one picture will inspire the sale of others...at least let's hope so. Do let them know by wire, if they have not already spoken to you, what you feel about this. One day, I am sure that your works will sell in the thousands of dollars bracket instead of the hundreds...but this will come only after Americans realize your true value.

I am making this brief, as I wrenched my back, and cannot sit up for long. But this too will vanish with proper rest...I guess I was lucky that it came now instead of earlier. I do so wish for the best for you and your sweet children, and know the future will be most happy for all.... With kindest regards

Love...Estelle

Estelle

HENRY D. PAXSON
HARRY A. KALISH
HAROLD E. KOHN
W. HOWARD DILKS, JR.
RICHARD L. LEVY
C. LEO SUTTON
JAMES A. SUTTON
MARCUS MANOFF
AARON M. FINE
LOUIS G. HILL
WILLIAM T. COLEMAN, JR.
JACOB KALISH
JULES I. WHITMAN
RICHARD J. GORDON
JOHN W. FROMMER, JR.
DOLORES KORMAN
WILLIAM J. HENRICH, JR.
ROSS J. REESE, JR.
JULES SILK
BRUCE W. KAUFFMAN

CHARLES M. RANDALL
(MEMBER DISTRICT OF COLUMBIA BAR)

LAW OFFICES

DILWORTH, PAXSON, KALISH, KOHN & DILKS

2635 FIDELITY-PHILADELPHIA TRUST BUILDING

PHILADELPHIA 9

KINGSLEY 5-2290

LOUIS E. LEVINthal
COUNSEL

February 6, 1962

Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pennsylvania

Dear Dr. Schneid:

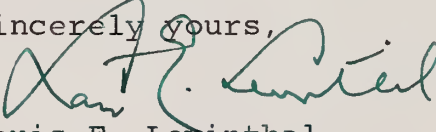
I acknowledge receipt of your letter of January 30th, together with the enclosures.

I wish it were possible for me to co-operate with you in carrying out your ambitious and worthy project. Unfortunately, my commitments to the Hebrew University in Jerusalem and to many other agencies and institutions with which I am associated will prevent me from assuming any other tasks.

As a matter of fact, I shall be in Miami Beach in connection with the Conference of the American Friends of the Hebrew University, when the Earl of Balfour will be our guest. Shortly after that, I shall be leaving for an extended stay in Israel.

Under the circumstances, I am sure you will understand why I must regretfully decline to accept your kind invitation to join the committee to sponsor the erection of a Monument to the Six Millions.

Sincerely yours,


Louis E. Levinthal

P.S. I am returning some of the enclosures, as you may have need for them.

LEL:el

רַב־עוֹן
לְקָדוֹם בְּרִיאֹת הָעַם
כַּתְּבֵת-הַסְּעֻדָּה
נִחְלַת יְהוּדָה, א. קִרְיָא.

4. 5. 1962 תאריך

קצת שמתה ואם תבין הנהגת צדקת האדם
 על אברהם שם פתחתי, כי אברהם לעולם קיבץ
 וזו לא הפסידה אפילו כח האדם האנושי העם
 אמנם אל אלה נפסקה הכתה ולקח את הים הכחול, ויהי-
 לה הנהגה חסידה פתחה פתחיה אל אלה יסוד יוסף ואלה
 אל מחקקם את מצות הצדק אלה של אלה מחקק צדקה
 במצו

מכתבך מקבלת חספי יום לפני צאתי הולנדה מס. 12-11 של
 "ט"ז". שלחתי למוכרת בל-אליז את המלך הולנדי בציף
 רשימות הסוכן קטלוב; תשבת שפאול אביחם הם יור שפיטת קליפול
 והכרזת על-דיון, והוא זה שבתו לפרזים וגר פדיונים הולנדי
 שלר האלברט. אך לרעבי, אחרת וגר הולנדי אהלברט פזר
 פיה מוצפס; אך הלטה ל, כי צלילן של ימלך תמאלנו והרשימות
 ימלאו את מקלמן פלמן. אם הם יקיימו את הבטחתי, אזלם לך
 את האלברט הנזכר. אני מקווה, שלחתי מרשם לך ושלחתי לך

מה פלאותם עם בלבי? בואם חילים ממוזגים לחולצת?
מחשבת לא יכולת לעבול את פני קרב מלאך לעולם,
אפי' לני' לעתיד חלתי יצאת. פנישם לאם לעבול לא בני-בית
גבר ב' צ' צ' צ' א.ק.ב.א

May 9th 1962

Berkeley Express and Moving Co.

409 West Broadway,

New York 12, N.Y.

Sirs,

I was informed by "The Painters and Sculptors Society of New Jersey Inc.", that you were supposed to pick up all works that were sent to this Society and kept at the Jersey City Museum in Jersey City, N.J.

Among those works is also my bronze sculpture "Town Planner".

Would you kindly advise me how much would it be if you'll ship this sculpture to my home, and also how much would it cost if you will transfer it to East 12th St. in New York City.

Respectfully

Otto Schneid

July 8, 1962

Reisman's Book Store,
Book Dept.,
Scranton, Pa.

Dear Sirs,

As we agreed by phone today you will have sent by the publisher
a book and bill me with a reduction of 10 %.

The book is :

Handbook of Early Advertising Art, by Clarence Hornung.
Dover Publications, NY, 2 vol.

Please ask the publisher to mail it immediately and include
the mailing costs in the bill. *****

Have please sent it to the address noted below.

Sincerely

Otto Schneid

Pan A. Banach,
Mikolajska 9,
KRAKOW, Poland

Don't add "Mr.", the word ~~Mr~~ "Pan" means it.

Feb. 9, 1962

Dear Mrs. Raymond,

We are deeply sorry about the news that your mother was suddenly taken by death.

We wish you most sincerely that your life so rich in content may bring you full comfort.

As soon as you will feel that the first time of mourning is over we shall be only too glad to meet you.

Cordially yours

Otto Schneid

Feb. 14, 1962

Mr. Frederick B. Robinson,
Director,
The Museum of Fine Arts,
Springfield, Mass.

Sir,

Allow me to introduce to you myself and my artistic ideals by sending you the catalogue of my new show in the Everhart Museum and some other information.

I would highly appreciate any expression of friendly interest, especially an invitation for an exhibit.

I could also send you the Alinari album of my paintings and sculptures, but not yet now, because at present I possess only one copy.

Very respectfully yours

Otto Schneid

Feb. 14, 1962

Mrs. Frances Ridgely,
Curator of Art,
The Illinois State Museum,
Springfield

Dear Mrs. Ridgely,

May I introduce myself by the enclosed catalogue of my
new show in the Everhart Museum and some other information ?

I would highly appreciate an invitation for an exhibit
in your Museum or your interest in one of my paintings or
sculptures.

At present I possess myself only one copy of the Alinari
album of my works. But I shall certainly get other copies soon
and would send you one if you want it.

Very sincerely

Otto Schneid

Q 1009

Sept. 2, 1962

Dear Arthur :

I confess to have been deeply dismayed when reading in your letter of July 20:~~x~~"...if and when it comes out..". You, the perfect gentleman whose character is in itself like a work of art, ~~had~~ declared me before that the article which we had prepared in cooperation, would appear in AF in August, without mentioning that you are not the boss and this would depend on anybody else. After the first shock, however, I understood thanks to my knowledge of life, particularly of artistic life, that you acted in line with your goodself, bona fide, but too confidently, without taking into ~~consider-~~ation that somebody could counteract.

This failure, however, was a part of a rather comprehensive disappointment, and that brought me into a psychological, and even physical, crisis, from which more intensive work led me out. Now I have to prove to myself that I appreciate your friendship for its own sake, not only for any utility, as it were. Thus I am sending you here 7 small photographic and 1 cincographic reproductions of new works with a short text. I feel I should present to you this point of view prior to its first exhibit that will take place in Mansfield State College. I have to get shortly larger and better reproductions.

My latest work would certainly interest you. It is ~~a~~ a tetrptych, painted on thick plates of masonite, 48 x 32" each, "The Four Elements". Here my striving for the very entity of things brought me into close neighborhood of abstraction^t, though only visually, not spiritually, and almost malgre moi.

With warm regards, from Miriam too, to Gladys and yourself

Yours

23. Dez. 1962

Mein edler Freund Spund :

Nicht nur Ihr lieber Brief vom 17., sondern auch Ihr voriger ist angekommen, und ich danke Ihnen nochmals von Herzen dafuer, dass Sie meine Sache so sehr zu der Ihren machen. Dass meine arme Frau auf so viel Guete und Fuersorge nicht sofort die rechte Antwort finden konnte, wird Ihnen gewiss verstaendlich sein, wenn Sie erwagen, dass es ja hier um eben die Fragen geht, die uns unausgesetzt beschaeftigen. Dass ein Schaffender auch ein Diplomat sein sollte, ist sicherlich sehr zu wuenschen. Wenn er es aber nun einmal nicht ist, so laesst sich dieser Defekt seiner Natur ebenso wenig aendern, wie Sie einen Unbegabten durch logische Argumente nicht zum Kuenstler machen koennen. Meine Frau hat zwar ein Hoechstmass an gutem Willen, aber eben diejenigen spezifischen Talente, die Sie, mein Teurer, von ~~I~~ ihr erwarten, besitzt sie nur in bescheidenem Masse. Abgesehen davon, dass die Last, die sie sowieso zu tragen hat, oft grausam schwer ist.

Inzwischen habe ich Ihr ganzes schoenes Mskr. gelesen. Abgesehen von seinem Charakter als Nachdichtung hat es sehr feine eigene Schoenheiten. Obzwar ich in meine eigene Arbeit jetzt so vergraben bin, dass ich meinen Koerper schwer vernachlaessige und Briefe oft ungeoeffnet bleiben, willich bald an die Zeichnungen gehen. Ich habe erst eine gemacht; wenn Sie sie farbig wollen, koennte ich Ihrem Wunsche noch entsprechen. Aber das koennte die Drucklegung erschweren und verteuern.

Ich bin viel geruehrt ueber Ihren Beschluss, Ihren schoenen Artikel noch einen 2. Teil folgen zu lassen. Sollte das aber nicht fuer eine Zeit verschoben werden, in der es praktisch mehr bedeuten koennte ?

Schliesslich muss ich Ihnen noch mitteilen, was Sie bestimmt freuen wird, was^s Sie aber noch als Geheimnis betrachten sollen. Der polnische Kunstschriftsteller Andrzej^r Banach, der einige sehr feine Buecher geschrieben hat, hat mir mitgeteilt, dass er ein Buch ueber mich schreiben will. Allerdings bereitet er seine Buecher mit deutscher Gruendlichkeit vor und schreibt so langsam, dass ich das Erscheinen nur erleben duerfte, wenn mir ein besonders hohes Alter beschieden sein sollte.

Herzlichst Ihr

Scranton, Pa., 14.11.1962

Mein teurer Freund Simon Spund,

tausend Dank fuer Ihren Brief vom 11. Nov. und fuer so freundliches Gedenken, und insbesondere fuer alle so starken und so gutgemeinten Stoesse, die Sie mir immer wieder/geben. Jedoch gibt es Dinge, die ein Mensch kann, und solche, die er eben nicht kann, auch wenn er will. Ich bin darueber gluecklich, dass mir die Gabe des Schaffens zuteil geworden ist; und ungluecklich darueber, dass mir die Gabe fehlt, diesem Schaffen Anerkennung zu erringen und die Verwirklichung der mir teuersten Ideen zu erreichen. Besaesse ich diese Art von Initiative, die Sie mir immer wieder so kategorisch und zugleich in so hochherziger Weise auferlegen, so wuerde unser Monument laengst als Realitaet bestehen, und auch andere Werke von solchen Dimensionen waere^en nicht Traeume und Modelle geblieben. Leider sind unter den echten Freunden meiner Kunst keine einflussreichen Menschen (meine arme Frau sucht mich immer mit der Nachwelt zu troesten) und wenn ich schon glaube, eine starke Hand gefasst zu haben, gleite ich erst recht ins Leere. Leider ist es mir nicht gegeben, pro domo zu wirken. Eher koennte ich noch hie und da fuer Andere etwas erreichen. Ihre vielen Rufzeichen (meine Maschine hat keine) bringen mich daher nicht einen Schritt weiter; ich sehe nur, was ich sowieso weiss, dass sie aus einem sehr warmen Herzen kommen.

In der letzten Zeit koernten Sie den Eindruck gehabt haben, dass ich nur an meine Angelegenheiten denke, dem ist aber nicht so. Dass Sie urspruegⁿ-lich meine Zeichnungen schon im September fertig haben wollten, mir aber bis heute nur den ersten Teil des Mskr. geschickt haben, erweckt die Sorge, dass irgend etwas nicht in Ordnung ist. Wenn ich nicht einen zu wunden Punkt beruehre und fragen darf: Haben Sie den Verlag gesichert? Oder sind auch Sie untreuen Leuten in die Haende gefallen? Ich habe in solchen Dingen bittere Erfahrung. Sollte Ihnen Gott behuete so etwas widerfahren sein, so koennen Sie es mir ruhig anvertrauen. Ich habe erst eine Zeichnung gemacht, da ich fuer die Fortsetzung das ganze Mskr.

Unter sehr harter Arbeit habe ich eine Serie von Arbeiten beendet, die,
obzwar das Neue nicht mein Ideal bildet(sondern das an sich Werthafte)

doch voellig neu sind. Aus dem bitteren Los, das schmaehliche Zeitgenossen
meiner Kunst immer wieder bereiten, fluechte ich in diese selbst; mein
unvergleichliches Glueck wird dann das Schaffen an sich.

Mit sehr herzlichen Wuenschen und Gruessen Ihr
Otto Schneid

EDELLIEBSTER FREUND UND MEISTER !

Es freut mich wahrlich, ihre liebe- und ungeduldig erwartete Toronto-Adresse vor mir zu haben! Leider hat der schmierige Ontario-Poststempel den Strassen-Namen verwischt. Ich glaube aber, dass mir gelingen wird solchen abfotografieren zu koennen.

Es daeuht mir, dass ihr "Meschaneh-Makom"-Schritt nicht zu den leichtesten gehoerte. Aber die zweite Haelfte unseres altklugen Sprichwortes wird sich mit G.H. vollinhaeltlich bewaehren!

Auch ich habe Ihnen meine herzlichsten Neujahrswuensche zukommen lassen. Moegen Ihnen solche auf den Pfaden Ihrer neuesten Plaene vollkommen in Erfuellung gehen! Die in ihrer praegnanten "Jonah"-Karte fest-gefasste Propheten-Tragoedie wirkt fortwaehrend vielumfassend-elementar! Ich bin sicher, dass auch in der kanadischen Judenwelle sich etwas von der Gottesnaehe wird aeussern lassen.

Auf Ihren letzten Brief zurueckkommend, habe ich zwar die Marcel B...-Staette nicht so sehr krass benannt, ich bin aber der Meinung, dass Sie dennoch garnicht so sehr uebertrieben haben... Ich habe hier in Paris einen intimen, 75-jachrigen Freund, welcher ein sehr versierter Kunsthaendler ist. Ich bin in Kontakt mit seiner Familie. Er ist Dr.h.c., Besitzer vieler Auszeichnungen etc. Ich sprach u.a. letzstens mit ihm sehr nahe auch in ihrer Sache. Er unterhaelt nahe Bekanntschaft mit mehreren, sogar prominenten franzoesischen Kunst-Kritikern. Er offenbarte mir u. A. das Folgende: Alle bedeutendere Galerien sind eigentlich hierorts demoralisiert! Die Besitzer der hies. Schausaele sind woertlich enorm reich. Sie haben enorm viel Bargeld und ausserdem unglauebwerdige Ansammlungen wertvollster Kunst-Werke! U.a. besitzt z.B. ein gewesener griechischer Schneider-Meister Petrides in seiner persoehnlichen Privat-Sammlung ueber 200 der besten Utrillos, ueber 100 Glanz-Exemplare Susana Valadon etc. etc. Bei vielen anderen sind auch solche, wie: Vlamincks, Raul Dufi, Ricassos, Salvador Dallis, Bracks etc. aufgehaeuft vorhanden. Angeblich bieten alle fremdaendische Aussteller-Reflektanten bis in die Millionen gehende Betrage an- solche werden aber abgeschlagen, denn wie es allgemein verlautet, sind saemtliche Termine aller vornehmeren Galerien bis Ende 1965 besetzt. Die Aussichten waeren somit leider weniger als rosig...

Ich nehme aber dennoch an, dass Ihre jetzige Gesamt-Aufmachung, wie sehr troestliche USA-Stimmen, florentiner Katalog etc. etc. die hoesige wagschale bedeutend heben werden. Solcherart Lockmittel verlangen aber sehr langsame- und absolut intensive Vorbereitungs-Arbeit.

Wie ist nun Ihr kanadischer Auftakt? Denken Sie dort ernst an Ihr fertiges Riesendenkmal? Haben Sie sich dortselbst in voraus einen entsprechenden Schutzwall auch juedischer Kultur- u. Kunstgesellschaften gesichert? Ausserdem gibt es dort auch bedeutendere juedische Jugend-Bewegungen!...

Wie ist das Befinden Ihrer hochherzigen Frau Gemahlin? Was fanden dort die liebsten Soehne? Wie haben Sie Ihre weitere Marschroute festgelegt? Alles, auch neueste Aufnahmen neuester Sachen, waeren ueberaus interessant!... Wie ist Ihr persoehnlicher Schaffungs-Zustand? Haben die einst arg verponten "Kraft-Dromedare" bis nunzu noch immer keine modernere Benennung verdient? Sie ziehen aber dennoch und ...schweigen!

Eine prompte und wirklich ausfuehrliche Antwort erwartend, wuensche Ihnen samt ganzer lieber Familie,
10 - 7 2 1

Ihr liebestens u. herzlich grueend

Simon Spind

Scranton, Pa., 5.10.1962

Mój drogi A. B.

Przedemna leża dwa goście, list z Witowa z dnia 21. 9. i "Warszawa Cieslewskiego Syna". Książkę już zaczęłem czytać; w czasach dziwnych, po drugiej w nocy, bo innego czasu do czytania nie mam. Staram się spełnić choć część sensu mojego życia jeszcze przed zamknięciem bramy. Stałem się egoista radykalnym, zaniedbując rodzinę, własne ciało, niemal wszystko.

Najszczerze Wam dziękuję. Tej wybitnej grafiki nie znalazłem, bliska jest i mojemu sercu. Piszecie o niej tak istotnie; z pomysłem bogatym i nie zbyt skomplikowanym, z porozumieniem intuicyjnym. Przypominam sobie słowo Weininger'a, że tylko wielki charakter może być wielkim charakterologiem. Szczęście ma artysta, który chociaż po śmierci otrzymuje co się mu należy.

List natomiast, to gość kochany, którego jednak tylko częściowo rozumiem, bo nie wszystko udało mi się przeczytać. Czy właściwie czytałem: "Nie jestem krytykiem i nie mam uprawnień do wydawania opinii...". Jak autor spornych książek o sztuce może to powiedzieć o sobie? Uważam, biorąc w rachubę nie tylko co człowiek się uczył, ale przede wszystkim czym on sam jest, że po śmierci kilku wielkich starych nie zostało naszym pokoleniu dużo ludzi rzeczywiście kompetentnych jak Pan. Disdegeneracja sztuki i pisanie o niej kompletuje się wzajemnie.

I ja "wiesz" o naszym zbliżeniu się i jestem szczęśliwy. Nie raz głęboko żałowałem, że Wasza krótka wizyta u mnie w Hajfie nie umożliwiła mi wypowiedzieć co miałem na sercu i osiągnąć porozumienie zupełnie między nami.

Z podziwieniem i z satysfakcją słyszę o waszych nowych dziełach. Najciekawsza pewnie będzie Wasza książka wspólna z Mł. Najserdecznie gratuluje Wam.

Miriam się tak żywo Wam interesuje. Może jeszcze kiedyś w życiu się spotkamy? Czybyscie nie mogli przyjechać na kilka miesięcy? Jeżelibym miał jedną wystawę tak sukcesowa jak dotychczas jeszcze nie miałem, nie byłoby to kwestją finansową trudną.

W międzyczasie muszę mieć więcej cierpliwości aniżeli mój młody kolega. Tesknie za najsilniejszym encouragement, może bo w robocie samym nie jestem pewny o takim stopniu, aby być zupełnie szczęśliwym samą twórczością. A przyznaje, że w moich nadziejach odgrywacie rolę istotną.

Dumny jestem na Pańską opinię o moim rysunku. Moja twórczość jest jednak nie mniej kolorysta. Pan widział z moich prac oryginalnych nie wiele, i tych nie licznych może zbyt krótko. Czy nadesłały 7 nowych fotografii nowych (nie najnowszych) obrazów z artykułem? Mogłbym przesłać szereg starych i bardzo dobrych fotografii. Czasem myślę o sposobie przesłania oryginałów. Marcel Bernheim w Paryżu zaproponował mnie dwukrotnie na wystawę. Jeżelibym to mógł przeprowadzić tam i innych miastach europejskich, udałooby się może i w Polsce wystawić.

Z wyrazami szczerzej przyjaźni

Wasz

Otto

Scranton, Pa., 30. 12. 1962

Moi drodzy Banachowie

Przyjmcie nasze najcieplejsze zyczenia do Nowego Roku, zeby to byl rok Pokoju i tworczej wspolpracy dla nas wszystkich, i rok zdrowia, powodzenia i szczescia dla Was.

(Wszelkie zyczenia wprawdzie sa pamiatkami kultur magicznych, ale tych ostatnich chyba juz pozostawimy.)

W nastepnym liscie ϕ opisze Wam moje wrazenia o tych dwuch ksiazkach, za ktorych jeszcze raz najszczerze dziakuje.

Prosze Pana (jezeli to nie trudne) o wiadomosc, ktore reprodukcje lub fotografie moich prac Pan posiada. Wedlug tego chetnie poslalbym Panu szereg fotosow czarno-bialych i kolorowych.

Duzo mysle o Penskim pomysle ksiazki o mojej sztuce. Jezeli Pan pozwoli, bede sie interesowal kwestja wydania angielskiej ksiazki polskiej.

Badzcie zdrowi i szczesliwi

Wasz

Scranton, Pa., 20.11.1962

Drogi Panie Andrzeju,

dzisiaj to dobry dzień, bo nadeszła kartka Pana z dnia 14go listopada. Teraz już mam b. mało trudności z przeczytaniem, piękne pismo stało się wyraźniejsze, a w całej kartce jest tylko jedno słowo, którego nie udało mi się zrozumieć. Jeszcze jedną poprawę proponowałbym: potwierdzenie każdego listu lub innej przesyłki z datą; to by po- ~~lepiej~~ lepszyło orientację. Jasniej się robi. Postać Pana jest zwiastowaniem czegoś, jak głos z lepszego świata. Nie tylko ludzkości, ale i sobie samym życze życie długie, aby jeszcze widzieć i kosztować owoc.

21.11. List ten przerwany został przez atak serca lekki, ale jeszcze dziś jestem słaby. Miałbym leżeć cały dzień, ale nie mam cierpliwości na to, a wolę lekka aktywność. Tylko malarstwo, jeżeli będę mógł, uniknę dziś, bo zbyt podnieca, a czasem to wysiłek fizyczny.

Malarstwo moje znajduje się w nowej fazie, o której opowiem Panu w krotce. Zdaje mi się, że w swej pozycji wobec NOWEM w sztuce przesadziłem, chociaż nadal WARTOSC jest moim (a pewnie Panskim) ideałem, nie nowość albo starość. Przyznaje, że sam fakt nowości narazie już mnie nie straszy lub odpycha, przeciwnie, z pewnym przymusem wewnętrznym pociągany jestem do niego. Nie wiem, czy Pan otrzymał jakie 2 miesiące temu fotografie kolorowe małe (z tekstem). Potem chyba Pan otrzymał opis tetraptycha ~~triptycha~~ realistycznego-symbolistycznego w swym sensie a abstrakcyjnego w kompozycji. Po nim malowałem triptych, również na mazonicie, na temat człowieka i przestrzeni. Każda z tych trzech tablic ma 4 linie gruntowe, to znaczy, że można ich obrócić każda 4 razy i wieszac jak się chce, kompozycja to pozwala i nawet wymaga. W każdej 7 figur wiernych anatomii. Diptych budowany analogicznie zaczęłem.

W początku grudnia ma wrócić wystawa z Mansfield, to mam ^z zamiar przeprowadzić serię fotografii kolorowych dobrych; byłoby to dla Pana surogat widzenia oryginałów. Tylko interesowałoby mnie, jakich reprodukcji lub fotografii Pan posiada oprócz albumu i broszurki, to według tego będę mógł Panu posłać wybór.

Zmiana ta przychodzi u mnie w momencie tragicomicznym, bo narazie nareszcie epidemia abstrakcyjna pobliza się koncu.

Scranton, Pa., Nov. 10, 1962

Wielce Szanowny Panie,

Dziękuję Panu serdecznie za dobry zamiar. Ale niestety Pan się myli co do mojej sytuacji materialnej. Posiadam zbiór sztuki wschodniej, ale nie kontynuuję, a współczesna sztuka prymitywna mnie nie pociąga.

Próbowałbym sprzedać łaskawie przesłanych mi akwareli w NY, jeżeli bym miał czas na to. Ale narazie pracuję 20 godzin dziennie, zaniedbując rodzinę i siebie samego. Nie wierzyłby Pan jak trudno mi nawet napisać list.

Wrocilibym Panu przesylek zaraz, ale w sobotę zamyka się poczta miejscowa w południe, to coś poleconego już nie można nadać. A w poniedziałek w tym tygodniu poczta zamknięta gdyż święto (Veteran Day). To będę mógł wrócić Panu materiał dopiero we Wtorek. O tej trudności poinformuję Pana natychmiast, żeby Pan mógł dysponować według daty prawdopodobnego otrzymania.

W korespondencji z Bratem nie wspomnę sprawy.

Szczerze żałuję, że narazie Panu służyć nie mogę.

Z wyrazami wielkiego szacunku

Otto Schneid

REMOVE BEFORE TYPING • REMOVE BEFORE TYPING • REMOVE BEFORE TYPING

Oct. 20, 1962

Moj drogi Panie Andrzeju

Najnowszy listek Panski, z dnia 15 Xgo, nadszedl predko. Bylo z mojej strony nieporozumienie, bo Pan mi juz dawno potwierdzil, ze otrzymal "wszystko"; to przypuscilem, ze to zawiera album i jego tekst, który wyslalem stad. Jestem gleboko ucieszony tem i dumny na to, ze drogi Pan stal sie jednym z nie zbyt licznych, ale wybitnych przyjaciol mojej sztuki, i po przyjacielsku jeszcze nja interesuje innych znawcow. Wysoko oceniam co Pan nazywa zblizenie sie na terenie sztuki.

Kiedy Pan to pisal to oczywiscie jeszcze nie mial mojego listu z dnia 5X, w którym juz serdecznie dziękowałem za książkę^a o Cieslewskim. W międzyczasie kontynuowałem czytanie (zawsze nad ranem). Podziwiam artystę i podziwiam dojście i interpretacje Pana. Niestety dziś niemal już nie ma takiej literatury o sztuce. Ja przynajmniej szukam taka daremnie, a tylko wyjątkowo znajduje coś istotnego albo przynajmniej coś odpowiedzialnego. Z reprodukcji Cieslewskiego robi największe wrażenie na mnie drzeworyt na str. 207, pewnie dlatego, bo tu i w kilku innych spotykam się konceptem przestrzeni, który bliski jest moim, tylko że to u niego formuła wyraźniejsza, natomiast w większości moich obrazów coś raczej wirtualnego.

Najszczerze Panu dziękuję za książki które mi Pan posłał albo już posłał. Trzy książki w w jednym roku - a przecież "W.C.S." również wyszła w 1962. Tu też jest coś wspólnego między nami; produktywność to przede wszystkim praca z całkowitem oddaniem się. A Panski styl to nadzwyczajna synteza obiektywności (ze stosunkowym skryciem siebie samego^e) z koncepcją bardzo subiektywną, nawet poetyczną (a zawsze bardzo skromną); ten charakter osobisty z pewnością łączony jest z wewnętrznym przymusem do pracy.

Panskie książki są między pierwszymi polskimi których czytałem. W dzieciństwie słyszałem język polski wyłącznie od chłopów i służących, których wtedy nie oceniłem jak później. Miałem już jakie 14 lat kiedy się dowiedziałem, że istnieje literatura polska. Poprzez wykształcenie niemieckie przeszedłem dość łatwo do świadomości przynależenia do kultury żydowskiej, a potem do pewnego internacjonalizmu. Jednak języku polskiego nigdy się nie uczyłem, a sam nie wiem, dlaczego moje grzechy wobec gramatyki

TYPING • REMOVE BEFORE TYPING • REMOVE BEFORE TYPING •

i ortografii polskiej nie są o wiele gorsze, i jak osiągnąłem ten najniższy stopień polszczyzny. Dział już żadnego nowego języka nie chce się uczyć, chociaż w niektórych mogłbym łatwo osiągnąć perfekcję, bo nawet teoretycznie nie mam już czasu do niego oprócz urozwości. W domu mówimy po hebrajsku, korespondencje są w językach europejskich, a praca moja nie ma niczego do czynienia z językiem. Mimo tego kupię sobie w najbliższych dniach słownik polski, może i gramatykę. Może jeszcze poznam Michłowicza, chociaż za nadzwyczajnie wysoką ceną.

Z czytania Pana również daję część, który mi jest potrzebny jak utłumiona krew. To nie zabija, a to nie pusta gównośń.

W ciągu pracy nad małym obszarem, którego kończyłem wczoraj, wysłałem trochę o mi i Panu. Już dawno chciałem Was posłać coś tak osobistego. Format ułatwił przesłanie, ale poczta tulejsza nie przyjmuje paczek do Was poleconych lub assekurowanych, to mogłoby być trochę uciążliwe. Może znajdzie kogoś który pojechał do Europy i byłby obrat na toba.

Wasz

Wł.

REMOVED BEFORE FILING • REMOVED BEFORE FILING • REMOVED BEFORE FILING

Nov. 14, 1962

Dear Mr. John Canaday :

Please excuse me this addition to all the letters you get from artists, both known and unknown to you.

So far I was a complete outsider, opposing all what claimed to represent the art of our time. I worked faithfully to my ideals and kept silence.

Now things are changing. Human art is coming into vogue, at least as a slogan, but maybe it is becoming reality.

I believe that this obliges me to ask for your attention. For first introduction, allow me to enclose a brochure.

It is understandable that you hardly fulfill your numerous commitments; & thus I hesitate to suggest anything. Your attitude towards art, however, is not only that of a professional. If you would risk the time required for a short meeting, I would come to NY to show to you things that are not "different", but indeed new.

Respectfully yours

Otto Schneid

1. Nov. 1962

Mein verehrter und teurer Freund Dr. Hans Goldmann

Ihr erschuetternder Brief liegt vor mir und ich suche vergeblich nach einem Wort der Teilnahme und des Mitgefuehls, das Sie troesten oder Ihnen doch ein wenig wohltun koennte. Denn auch ich habe Muehe, es als Tatsache hinzunehmen, dass Ihre geliebte Gattin nicht mehr am Leben ist. In unserem modernen Leben, das so voller Luegen und Faeulnis ist, war ja Euer Familienleben eine rare Ausnahme. Man musste ja nur fuer eine Weile Euer Haus betreten, um die Atmosphaere der Echtheit, der stillen Groesse, der Innigkeit und der Hingabe zu empfinden. Dass Sie Ihrer unvergesslichen Gattin kein genuegend ausgewogenes Leben geben konnten, scheint nur Ihnen so zu sein. Sie wollen immer geben, Jedem, und insbesondere der eigenen Familie wollten Sie immer so viel geben, dass alles, was Sie gaben, Ihnen noch nicht genug zu sein scheint. In dem grausamen Schicksal dieses unersetzlichen Verlustes mag also das versoehnend sein, dass Ihre Ihnen entrissene Gattin keinen treueren und echteren Freund haette finden koennen als Sie es ihr waren. Nun werden Sie gewiss alle Liebe und Hingabe den Kindern zuwenden, und das wird gewiss Ihre Wunde heilen helfen.

Nun muss ich Ihnen auch gestehen, ein schlimmes Vorgefuehl gehabt zu haben. Alinari hatte Ihnen aus Florenz das Album meiner Arbeiten geschickt; von mir muessen Sie eine Broschuere, einen Brief und Glueckwuensche zum Neuen Jahre erhalten haben. Da es Ihnen so gar nicht aehnelt, alles unbeantwortet zu lassen, war ich sehr besorgt. Meine Frau wollte sich schon an Bekannte in Haifa wenden, um zu erfahren, ob bei Euch alles in Ordnung sei...

Nun moechte ich mir eine Bitte erlauben. Es entspricht seit langem nicht mehr den Gefuehlen, die ich fuer Sie hege, dass ich Ihnen "Sie" sage, bzhw. schreibe. Wuerden Sie mich also durch Zustimmung zum "Du" auszeichnen ?

Heute kommt meine Frau spaet abens nach Hause. Ich werde es ihr schonend mitteilen muessen, als ob sie eine nahe Verwandte waere. Dein

Scranton, Pa., 2. Nov. 1962

Lieber Herr Dr. Denes,

Ihr liebenswuerdiger Brief hat mich, obzwar von Haifa nach Haifa geschrieben, hier erreicht. Im Sommer 1960 haben wir eine Reise nach Italien angetreten, anlaesslich einer italienischen Ausstellung meiner Arbeiten, und nahmen an, dass wir bald wieder zurueck in Israel sein wuerden. Im Zusammenhang mit meinem Projekt eines Monuments der Hitler-Opfer sind wir aber weiter gereist, nach Amerika, und im selben Zusammenhang bleiben wir voraussichtlich noch ein weiteres Jahr hier. Vor unserer Abreise suchte ich Sie intensiv, denn Sie waren schon damals lange nicht bei uns gewesen; ich wollte Sie bitten, das bei uns verwahrte Packet zurueckzunehmen. Niemand aber wusste mir zu sagen, wo Sie zu finden oder telefonisch erreichbar seien.

In Ihrem Brief schreiben Sie zwar nicht viel ueber sich selbst, aber schon der blosse Umstand, dass Sie endlich wieder eine richtige Adresse haben, laesst darauf schliessen, dass Sie zu geordneten Lebens- und Arbeitsbedingungen zurueckkehren konnten, und dazu gratuliere ich Ihnen aufrichtig. Ich bin ueberzeugt, dass Sie, wenn Niemand Sie stoert und Ihnen Frieden gegoennt ist, bei Ihrem enormen Wissen und Talent und bei Ihrer bewundernswerten Ausdauer noch viel mehr leisten koennten als bisher.

Wuerden Sie nun, lieber Herr Doktor, Ihr Packet holen? Wenn Ihnen das moeglich ist, wie ich hoffe, koennte ich leicht ein Arrangement mit Naechbarn treffen, die die Freundlichkeit haben, den Schluessel unserer Wohnung verwahrt zu halten, und Sie koennten das Packet zuruecknehmen. Bitte schreiben Sie mir. Und soweit Ihre Zeit es Ihnen gestattet, lassen Sie mich doch Naeheres ueber Ihr Leben und Ihre Arbeit wissen.

Mit besten Gruessen und Wuenschen im Namen meiner Familie

Ihr

Otto Schneid

931 Clay Avenue, Scranton 10, Pa.. USA

Dec. 30, 1962

Wielce Szanowny i Drogi Panie Maksymilian Friede :

Szczesliwy jestem Panskim postanowieniem przychylnem monumencie Janusza Korczaka. Jestem pewny, ze ten czyn szlachetny da Panu gleboka satysfakcje. Bedzie to pomnik i dla nas. Oto krotki opis :

Widzimy Janusza Korczaka w ostatniej chwili zycia. W rzeczywistosci byl nie wysoki, a tu postac jego ma okolo 80" (205 cm). Mimo powiekszenia proporcje realne utrzymane sa. W modelu reprodukowany twarz jeszcze jest schematyczna, bez podobnosci. Okolo niego trzy dzieci. Chlopiec, ktory paczuc i opierajac sie wstecz chwytal sie Janusza, a on swa lewa reka na glowie chlopca jeszcze raz go zegnal. Prawa trzyma Janusz dziewczynke, ktora go sciska lekliwie, jakoby mogl ratowac. Po drugiej strony grupy inny chlopiec, typ dziecienny i aniej rozwiniety; bawi sie z psem brany z pism Janusza, Latkiem. Swa lewa dotyka dziewczynke wspomniana przedtem, jakoby chcial, zeby i ona przyszla bawic sie z Latkiem. Oprocz tych elementow figuralnych tyl otrzymuje swa ekspresje od plaszcza, ktory jest nie tylko czynnikiem silnie plastycznym, ale i aluzja na podobna role plaszcza u prorokow biblijnych, wraz z motywem ochrony.

Mimo waznosci walorow czysto artystycznych, jak budowy, kompozycji i ekspresji, pomnik bedzie i portretem wiernym.

Przyjm Pan wyrazy szczerego szacunku i wdziecznosci

Otto Schneid

3 fotografje modelu pierwszego,

broszura

Nov. 25, 1962

Drogi i Wielce Szanowny Pan Friede :

Dwa dni temu miała zona moja sposobność mówić z Panem telefonicznie. Mielismy nadzieję, że czas już cokolwiek leczyl Panska wielką ranę. Życzę to Panu z całego serca.

Ponieważ bieżący rok poświęcony pamięci Janusza Korczaka, zdaje mi się, że to najlepsza sposobność działania na korzyść jego pomnika. Dwa lata temu powiedział mi Pan tak piękne słowa o moim modelu.

Mój wielki pomnik, Monument Szczęściu Miljonów, o którym mówiliśmy wielokrotnie, chyba już zostanie marzeniem. Ale pomnik Janusza Korczaka mógłby powstać z wysiłkami nie wielkimi. Wystarczyłaby suma skromna.

A Pan nie musiałby poświęcić cały Swoj czas i dużo energii. Sama Swoja inicjatywa mógłby Pan tworzyć komitet a być jego prezesem. Inni, n.p. p. Weingarten, działaliby dalej.

Przygotowania, moja praca, podstawa kamienna, odlew w brązie, i wszystkie inne prace mogłyby być skończone w ciągu roku.

Bedzie to czyn godny Pana i naszego pokolenia.

Szczesliwy bede, jeżeli Pan mi napisze kilka słów pozytywnych.

Z wyrazami głębokiego szacunku

Otto Schneid

30. Nov. 1962

Mein edler Freund Hans Goldmann

Deine wenigen Zeilen vom 23. d.M. zeigen Dich wieder in hellstem Lichte. In so schweren Tagen findest Du noch die Zeit, eines Freundes zu gedenken. Ich begnuege mich jetzt gern mit so einem kurzen Gruss, denn nie haben Dich Deine Kinder so sehr gebraucht wie jetzt, und Du musst auch wieder mehr an Dich selbst denken und Deine eigene Gesundheit aufzurichten suchen. Leider habe ich Dich ja fuer mein vegetarisches Lebenssystem nicht gewinnen koennen. Wenn Du es mir aber erlaubtest, wuerde ich Dir gern einige auf Erfahrung beruhende und auch in den Rahmen Eurer Ernaehrung passende Empfehlungen unterbreiten, die auch Deinen ueberanstrengten Nerven wohltueten. Fuer jeden Fall sollst Du wissen, dass Du nicht so voellig allein bist und ausser Deinen so herrlich geratenen Kindern noch einen wirklichen Freund hast.

Nun, tourer Hans, wir leben nicht in einer abstrakten Welt. Krankheit und Tod bringen nicht nur unsagbares Leid, sondern auch so grosse wirtschaftliche Verluste, dass sie zuweilen die Hinterbliebenen in schwere Gefahr bringen. Mit Deiner Erlaubnis koennte ich Dir sofort 100 \$ schicken, und mit der Rueckzahlung brauchtest Du Dich nicht zu beeilen. Ich erinnere mich an verschiedene Lagen, in denen auch kleine Betraege von Nutzen waren. Also wenn Du mir postwendend schreibst, sende ich Dir auch den Check luftpostwendend.

Ich bin gluecklich, aus Deiner Karte zu erfahren, dass Ihr Alle einander hilft, den furchtbaren Verlust zu ertragen. Am schwersten hat es gewiss Deine suesse Kleine. Herzlichste Glueckwuensche Deinem hoffnungsvollen Musikakademiker. Ich kenne Prof Hajos in Haifa, einen feinen Musiker und feinen Menschen; sollte Dein Sohn nicht mit ihm Bekanntschaft machen? Er spricht freilich, wenn ich mich recht erinnere, nur ungarisch, deutsch und franzoesisch.

Innigst gruesst Dich und die Kinder Dein

March 4, 1962

Lieber herr Paperie,

Als mich vor kurzem Walter Kellner durch einen Telefonanruf angenehm ueberraschte und ich nachher auch mit Erwin Tramer sprach, erfuhr ich erst, dass Sie mit Ihrer Familie hier leben. Ich hatte Sie in Schweden vermutet, denn dahin wollten Sie, wie ich mich deutlich erinnere, Ende der vierziger Jahre auswandern.

Ich freue mich ueber die Aussicht, Sie einmal zu sehen und mit Ihnen Erinnerungen auszutauschen. Ich weiss, dass auch Sie unter den Folgen des groessten Verbrechens der Geschichte sehr gelitten haben und stelle mir vor, dass Sie trotz dem Trost, den Sie gluecklicherweise^k in der eigenen Familie gefunden haben, den erlittenen Verlust nie vergessen. Die Errichtung eines Monuments der Nazi-Opfer ist mein Hauptziel hier.

Wenn Sie mir eine Freude machen wollen, schreiben Sie mir bitte einmal ueber sich selbst und ueber Ihre Familie. Ich habe eine gute Frau und zwei geratene Soehne, aber die Mathematik meiner Familie ist ungewoehnlich, 62, 38, 15, 11.

Konnten Sie aus der Katastrophe wenigstens Photos von Ilse und Rosi retten ?

Mit herzlichen Gruessen

Ihr alter

Otto Schneid

April 25. 1962

Dear Mrs. Estelle C. Prins :

I approach you with feelings and thoughts that are a strange analogy of those reflected in the three wonderful documents defining your impressions and conclusions about me. Moreover, I must take care to escape using your own words when expressing what I think about yourself. This singular reciprocity will surely become more understandable by our personal meeting for which I strongly hope. To my admired friend Dr. de Sora I could not say Thanks, it would be too banal, and so to you. I consider you one of my great meetings, those powers that shape characters, deciding in their history.

Personal knowledge, however, might bring some corrections. I am not sure if you'll find me humble, or humble-proud, and whether you will maintain that I am simple; at any case I wish I were, it is my ideal.

Now allow me a rather technical question. The three or two points ~~in~~ amidst some sentences of your magnificent "prose" article ... should they be printed as they are, or should the printer start a new line like in poetry ? (1st section, 2nd line, 9th, 10th; second, third line; third section, lines 2, 3, 5, 7, 9)

In the 1st line of the 2nd section may I suggest to omit the two words "of clay" ? (I work not only in clay.)

In the tremendous poem, may the first letters of all lines be printed in capitals ?

Yes, we are linked in universal Love, in both active and silent worship of the Unknown. Is this not the best link possible ?

Truly yours

Otto Schneid

March 28, 1962

Portraits, Inc., NYC 1368 57

Dear Sirs,

In order to introduce to you my work and myself
I enclose a little informative material.

I would like to cooperate with you ; may I know your
conditions ?

Some of the works reproduced in the Alinari album of
my paintings and sculptures are portraits. I could send it to you
as well as photographs of most recent portraits; I must only ask you
to send it back to me as soon as possible.

I have an exclusive agent for the West Coast, Prince de Sora,
while in the East I can myself sign an eventual agreement.

Very sincerely

Otto Schneid

May 7, 1962

Dr. Joachim Prinz,
Orange, NJ

Dear Dr. Prinz,

I had interpreted your letter of Dec. 21, 1961, as an outcome of objective circumstances and had well noted that those have nothing to do with your own feeling in the matter. I understood that you have no time to fund raising or to organizing a group; I understand, however, that you would welcome this necessary activity when it would be done and that you would join a group once organized.

An enthousiased friend of my art, Prince de Sora, Hollywood, whose great heart is full of humanism, is organizing an international, and first of all American committee in favor of the Monument. Upon my suggestion he will surely contact you.

Thanks to Dr. de Sora, I shall also have a series of one man shows on the West Coast, starting in Hollywood.

Very sincerely yours

Otto Schneid

~~Apr~~ May 14, 1962

Mr. Charles T. Coiner, Chairman,
Water Color Committee,
The Philadelphia Art Alliance

Dear Mr Coiner,

After receiving your post card I mailed to you photographic
reproductions of 3 of my pastels published by Allnari.

If you are interested in more reproductions or texts published
about my works let me kindly know it.

Sincerely yours

Otto Schneid

July 2, 1962

Mr. Charles T. Coiner, Chairman,
Water Color Committee,
Philadelphia Art Alliance

Dear Mr. Coiner,

I yesterday returned from Hollywood, California (where I attended the opening of my first West Coast exhibit and met distinguished friends of my art who are organizing an international committee in favor of my Monument to the Six Millions of Martyrs) and found your kind letter of June 26.

If the reproductions were not yet sent back to me I would suggest that you kindly keep them until the meeting of the Committee in September. If it would not content ~~my~~ myself with this evidence I shall surely find a way to submit other reproductions or even originals.

In case I should move to California before September I shall inform you about my address.

I am invited for a special show of my pastels and drawings at one of the leading private galleries of Hollywood, and to a comprehensive show of my works in all mediums at the University of California.

Very sincerely yours

Otto Schneid

May 31, 1962

My wonderful Mrs. E. C. P. :

Thanks to Dr de Sora who sent me your unique new poem
I have today again a great day.

Don't think that I read it. This takes long time, not only because
of my poor knowledge of English. Thus far I only read it the way you drink
a glass of intoxicating wine, without analysing it chemically.

Every word of thanking would be tragicomically inadequate.
But maybe that seeing the real Monument, experiencing it in all its aspects
outside and inside, could give to your great heart a feeling corresponding
to your generous contribution.

Now I say you again Au revoir

devotedly yours

Otto Schneid

RECEIVED MAY 31 1962

7/2/62

7/2/62

RECEIVED

7/2/62

7/2/62

RECEIVED MAY 31 1962

7/2/62

7/2/62

THE REPLY OF THE REPLY

The Paintings Exhibited

| | | |
|--------------------------------|----------|---------|
| JACOB AND THE ANGEL | 51 x 38" | \$ 1500 |
| ISAIAH | 50 x 40 | 1500 |
| ELIJAH REVIVES THE WIDOW'S SON | %) X \$) | L%)) |

~~Religious Arts~~ x x x x

March 28, 1962

Religious Arts Festival,
Rochester, NY

Dear Sirs,

I shipped today to you by Railway Express Agency three oil paintings in a wooden box : "The Burning Bush", "Ascension of Elijah", "King Saul's Last Night".

I had got only 2 entry blanks, so I copied it and used the copy instead of the third.

Since I have no opportunity to deliver the works I fastened to the back of the works both A and B of the entry blanks.

You find here enclosed the three entry blanks C and a check on \$ 3.

Allow me also the following suggestion :

Alinari, Florence, published an album with 9 plates in color and 3 plates in black-white after my paintings and sculptures , with an English-French-Italian text by Gabriel Preil. This album could be exhibited too, on tables under glass. Most of the works reproduced there are in line with the spirit of your festival. Some of the originals are still in NY and in my home, but it is not easy to exhibit them because of very big sizes. If you are interested to include the reproductions in the show, let me please know it; I could send to you the portfolio immediately. The portfolio is also available, for \$25, single plates \$5. - I enclose also a leaflet for some information.

With my best wishes for full success of the Festival

very sincerely

Otto Schneid

"WE SERVE THE COMMUNITY IN ALL AREAS OF JEWISH EDUCATION AND CULTURE"



ל ש כ ת ה ה נ ו ך ה ע ב ר י

BUREAU OF JEWISH EDUCATION

AFFILIATED WITH THE AMERICAN ASSOCIATION FOR JEWISH EDUCATION

1580 SUMMIT ROAD • POplar 1-2060 • CINCINNATI 37, OHIO

DR. MOSES ZALESKY * Director

CHARLES S. BECKER, Assistant in Supervision

BERNARD L. ROSENBERG, PRESIDENT

NATHAN KAPLAN, VICE-PRESIDENT

DR. SYLVAN D. SCHWARTZMAN, VICE-PRESIDENT

MRS. EDGAR HYMAN, SECRETARY

ERNEST GREEN, TREASURER

NACHUM N. EDEN

CHAIRMAN, EXECUTIVE COMMITTEE

DR. STANLEY R. BRAV

VICE-CHAIRMAN, EXECUTIVE COMMITTEE

ROBERT M. SENIOR

HONORARY PRESIDENT

MORTON J. HELDMAN

HONORARY VICE-PRESIDENT

December 20, 1962

Dr. Otto Schneid
931 Clay Avenue
Scranton, Pa.

Dear Dr. Schneid:

I am pleased to inform you that upon the recommendation of Dr. Zalesky, our Jewish Culture and Art Committee has unanimously decided to sponsor an exhibit of your works in Cincinnati, as follows:

1. The exhibit will be held for three weeks, from May 5 through May 26, 1963, in the Art Gallery of the Jewish Community Center, 1580 Summit Road. We are equipped to exhibit up to 60 paintings.
2. An opening reception in your honor will be held on Sunday, May 5, 2:00 - 5:00 P.M., at the Jewish Community Center.
3. The maintenance staff of the Jewish Community Center will be at your disposal for hanging the pictures as well as for other technical assistance.
4. All expenses of bringing the pictures here and of handling them, as well as of your stay in Cincinnati, will be borne by yourself.
5. Our committee shall receive a 10% commission on the pictures you sell.
6. We shall conduct an intensive publicity campaign in the community in connection with your exhibition.

It is essential that you come here at least a week before the opening of the exhibition in order to make all necessary preparations. Dr. Zalesky hopes that you will bring your charming wife with you. Our Ivriah Society would like to arrange a lecture for her.

Your prompt acceptance will be deeply appreciated.

Sincerely,

Nathan Spector, Chairman
Jewish Culture & Art Committee

NS:MG



הטכניון - מכון טכנולוגי לישראל
TECHNION - ISRAEL INSTITUTE OF TECHNOLOGY

סמכו:

Our reference:

HAIFA.

חיפה, 26 בספטמבר, 1962.

לכבוד

דר נ. שניידר,

ארה"ב.

דר' שניידר היקר,

חן חן לך על ברכותיך לראש השנה. נעים לשמוע מדי פעם בפעם ממך - אם ע"קטלוג של עבודותיך או ע"י גלויה. מה עושים יתר חברי המשפחה ומתי תחזרו לארצנו?

חדשות אישיות שלי הן מעטות. רוב זמני אני מבלה בין כתלי הטכניון והחלק הגדול של חיי מעורה בו. פרופ' נוימן התחתן עם סטודנטית ונולדה להם בת. פרופ' רטנר יצא לפנסיה אך עוד ממשיך ללמד. פרופ' הורביץ פעיל מאד. בחופשת הקיץ השנה הוא השתתף במספר ועידות בארה"ב ובאירופה בהצלחה רבה. מורה לתולדות האמנות אין לנו. אני משתדלת למלא את חובותי באמונה תוך שאיפה לתרום תרומתי הצנועה להרמת הרמה הכללית. חוסר היציבות הכללית - הן מבחינה כלכלית והן מבחינה פוליטית - נותנת אוהותיה בחיי היום יום בצורה גדלה והולכת והמאבק הוא די קשה (ביחוד לאלה שאינם יודעים לסדר ענייניהם מאחורי הקלעים), אך לילדים ולי שלום וזה השג. את זמני החפשי אני מבלה בהנאה רבה בטיולים עם אגודת חובבי הטבע.

ברחשי ידידות והוקרה,

6811 3-5/10

6811-10/10 גר כחול: אסף אלמה ואחיה!

אֵירוֹגְרָם
AÉROGRAMME

Dr. N. Schneid,
931 Clay Ave.,
SCRANTON Pa.
U. S. A.



דואר אוויר
PAR AVION

קפל שליש

אם יושם מעטו בפנים, תישלח האגרת בדואר רגיל

השולח - EXPEDITEUR

Mrs. V. Tsherniak,

24 Disraeli St.,

HAIFA.

I s r a e l

קפל ש

"WE SERVE THE COMMUNITY IN ALL AREAS OF JEWISH EDUCATION AND CULTURE"



ל ש כ ת ה ה נ ו ך ה ע ב ר י
BUREAU OF JEWISH EDUCATION

AFFILIATED WITH THE AMERICAN ASSOCIATION FOR JEWISH EDUCATION

1580 SUMMIT ROAD • POplar 1-2060 • CINCINNATI 37, OHIO

DR. MOSES ZALESKY * Director
CHARLES S. BECKER, Assistant in Supervision

BERNARD L. ROSENBERG, PRESIDENT
NATHAN KAPLAN, VICE-PRESIDENT
DR. SYLVAN D. SCHWARTZMAN, VICE-PRESIDENT
MRS. EDGAR HYMAN, SECRETARY
ERNEST GREEN, TREASURER

NACHUM N. EDEN
CHAIRMAN, EXECUTIVE COMMITTEE
DR. STANLEY R. BRAY
VICE-CHAIRMAN, EXECUTIVE COMMITTEE
ROBERT M. SENIOR
HONORARY PRESIDENT
MORTON J. HELDMAN
HONORARY VICE-PRESIDENT

כ"ב אלול תשכ"ב
21 בספטמבר, 1962

מרים יקירתי,

אתמול קבלתי את החומר ששלחת לי ואני מודה לך מקרב לבי
על כך. עברתי עליו בהתענינות רבה, ונמלאתי רגשי הערצה לך,
לאוטו ולילדיכם המצוינים.

תודה רבה על ררישת-השלום מגבריאאל פרייל שאת שירתו אני
מעריך ומחשיב מאר.

אסיפת ועד התרבות והאמנות שלנו תתקיים תיכף אחר החגים.
אציע לוועד שיסדר תערוכה של עבודת אוטו לשבועיים או שלשה שבועות
באביב הבא. הנוהג של הועד הוא שכל ההוצאות של הובלת המוצגים
הן על חשבון האמן. הועד מצדו מפרסם את התערוכה בכל אמצעי-
הפרסומת ולהטוטי-הרקלמה האמריקאיים, מושך את הקהל לתערוכה ולרוב
מצליח במכירת מספר מוצגים. מהסכום הכללי הנכנס מהמכירה מקבל
הועד עשרה אחוז. במאי שעבר סידרנו, למשל, תערוכה של עבודת הצייר
נטע קוזלובסקי משיקגו. הוא הביא את כל התמונות אתו ב"סטטישן-
ווגון" שלו באופן שההוצאות שלו היו מינימליות. הוא יצא מהתערוכה
בריוח נקי של 2,000 דולר בערך.

אם אוטו מסכים לתנאים אלה, אשמח להמליץ על בצוע התערוכה.

רצ"ב הצ'ק שלנו עבור האלבום הנהדר של אמנות אוטו.

את רשימתי על שירתך כבר התחלתי לכתב, ואני מקווה להשלימה
בקרוב.

אני ומשפחתי מרגישים בטוב, והכל, ברוך השם, מתנהל אצלנו
כשורה.

אני מאחל לך, לבעלך ולבני-ביתכם שנת בריאות, ברכה, הצלחה
ועבודה פוריה.

שלך מיררות חמה

ר"ר משה זלסקי

A MEMBER AGENCY OF THE JEWISH WELFARE FUND OF CINCINNATI

מז:נט

